# भक्ति सागर

## श्री चरणदास जी कृत

जिस में नाना प्रकार के भक्ति के विषय
कविता में लिखे गये हैं, कि जिनके
पढ़ने से हरएक सज्जन पुरुष पर-
मेश्वर का भक्त हो, सहज ही
में उस के निन्दित कर्म
छूटकर मोक्ष को प्राप्त
हो सकता है

सरस्वती विलास प्रेस नरसिंहपुर
में मुद्रित हुई



अप्रेल सन् १८९५ ईस्वी

प्रथम बार
१००० पुस्तक

मूल्य फी पुस्तक
२) दो रुपया

# सूचीपत्र

| नं० | नाम विषय | पृष्ठ | से | पृष्ठ तक |
|---|---|---|---|---|


---

इति

ओ३म् हरिरोंतत्सत् ।

# भक्ति सागर

श्री चरणदास कृत भक्तिसागर ग्रन्थ लिखते

अथ प्रथम ब्रज चरित्र वर्णते

## दोहा

दीना नाथ अनाथ की, बिनती यह सुन लेहु ।
मम हिय मन्दिर आय के, ब्रज लीला कह देहु ॥
चार वेद तुम को रटें, शिव सारद अरु शेष ।
औरन शीस नवाय हौं, कृष्ण करो उपदेश ॥
कै गुरु कै गोविन्द कों, भक्ती कै हरिदास ।
सबहिन को एकै गिनों, जैसे पुष्परु वास ॥
नारद मुनि अरु व्यास जू, अनुग्रह करहु दयाल ।
अक्षर भूलों जो कहूं, कहो मोहि तत्काल ॥
श्री शुक देव दयाल गुरु, मम मस्तक पर ईश ।
ब्रज चरित्र वर्णन करूं, तुम्हें नवाऊं शीश ॥
सब साधन बिन्ती करूं, कर जोरों शिर नाय ।
चरणदास बिन्ती करे, बाणी देहु बनाय ॥
सदा शैव ब्रज में रहे, कर गोपी को रूप ।
मूरति तो परगट भई, आप रहत हैं गूप ॥

बंशी बट ढिग रहत हैं, करत रहत हैं ध्यान।
वक्ता वेद पुराण के, परम्परातम ज्ञान ॥
ब्रह्मादिक कल्पित रहे, वृन्दाबन के हेत।
सुध आवे ब्रज भूमि की, बिसर जाय सब वेद ॥

चौपाई

अब ब्रज की गति गाय सुनाऊं, बुद्धि सुद्धि हरि भक्ति जो पाऊं.
चिंता मेटन भूमि बखानी, जीत मीत रण दूर भवानी.
कमला पति को चक्र सु दर्शन, चरणदास ताको करि बंदन.
मथुरा मण्डल बसे जासु पर, व्यास देव मुनि कह्योसुमतिधर.
चरित बराह संहिता गायो, सो मैं भाषा बीच बनायो.
गोवरधन महिमा अति भारी, चरणदास ताकी बलिहारी.
जाकी महिमा सब ने गाई, जहां कृश्ण नित गऊ चराई.
खरक बनाय धेनु जहँ राखी, अजहूँ चिह्न देत है साखी.

दोहा

गोवर धन बिन्ती करों, बिन्ती मो सुन लेहु।
जगत फांस सों काढ़ के, भक्ति दान मोहि देहु ॥

चौपाई

हाटक रूप अडोल करारी, जाकी शरण रही ब्रज सारी.
जा दिन सुरपति कोप बढ़ायो, सकल मेघ झुक ब्रज पर आयो.
कर पल्लव पर गिरि हरि धार्‍यो, तबही शरण रह्यो ब्रज सार्‍यो.
दिव्य दृष्टि बिन दृष्टि न आवे, कञ्चन रूप पुराण बतावे.
मथुरा मण्डल में गिरि सोई, मथुरा मण्डल अब सुन लोई.
ब्रज चौरासी कोष प्रमाना, मथुरा मण्डल व्यास बखाना.
हरि के चरण सदा जो परसें, कृश्ण रूप में निसदिन सरसें.
लीन्हें सखा संग हरि डोलें, सखिन संग में करत कलोलें.

### दोहा

सदा कृष्ण ब्रज में रहें, मोहि मिलत हैं नाहिं।
लहर मिहर कबहूं करें, आन गहैं मम बाहिं ॥

### चौपाई

जा में बारह बन बड़भागी, बारह उपवन हैं अनुरागी.
जिन माहीं हरि बीण बजावें, मधुर मधुर बांके स्वर गावें.
चौथे पद को है वह स्वामी, सब जीवन को अंतरयामी.
भक्तन हेत रहे ब्रज माहीं, गुप्त रहै वृन्द्राबन ठांहीं.
फिरत रहे सब ही बन सुंदर, उत्तम बनो रास को मंदर.
जगत दृष्टि सो रहे अलोपा, मिलहै ताहि ध्यान जिनरोपा.
मथुरा मण्डल प्रगटत नाहीं, प्रगट जु है सो मथुरा नाहीं.
मथुरा मण्डल वही कहावे, दिव्य दृष्टि बिन दृष्टि न आवे.

### दोहा

बन उपबन अब कहत हौं, मथुरा मण्डल मांहि।
बिना भक्ति ब्रज नाथ की, क्यों ही दीसत नाहिं॥

### चौपाई

उपबन कदम सु मण्डल दूजा, नंदी बन नंदन बन पूजा.
मंगल आनँद बनवहि गायो, जहँ महराजा गांव बसायो.
बन संकेत सबहि जग जाने, बरसानो सबही पहिचाने.
भोजन थाली वही कहायो, जहां बैठ प्रभु भातहि खायो.
बन सुगंध अब सोइ कहावे, बन अखंड पुस्तक दरसावे.
खेलन द्रुम बन खेलत जानो, मोहन बन केती बन जानो.
दधिग राम बन वही कहायो, लूट लूट जहँ दध को खायो.
बत्स हरण बन वही कहायो, ब्रह्मा माया देख भुलायो.

## दोहा

ग्वाल बाल ब्रह्मा हरे, राखे कहूं दुराय।
जान बूझ टाला दियो, लीन्हे और बनाय॥

## चौपाई

जब ब्रह्मा समझो करि ज्ञाना, कर्ता कृष्ण सत्य कर जाना.
फिर सुचेत होय शीश नवायो, आदि पुरुष पुरुषोत्तम पायो.
द्वादस उपबन गाय सुनाये, मथुरा मण्डल मध्य बताये.
द्वादश बन की गति सुन लीजे, जिन मांही हरि ध्यान करीजे.
भद्र अरण्य अति शय छबिछायो, श्री बन लालन के मन भायो.
बन भंडीर की महिमा गाऊं, भिन्न २ कर तोहि समझाऊं.
लोही बन महिमा अति भारी, महा बनहु सुंदर छबि धारी.
तालर बन वह दृष्टि निहारो, दानव धेनु जहां हरि मारो.

## दोहा

दानव धेनुक महा बलि, भाव भक्ति हरि हेत।
मुक्ति काज सेवन कियो, तालर बन को खेत॥

## चौपाई

खिद्दर बन जानत सब कोई, फूल माल जहँ लालन पोई.
बहुला बन घन दुर्बन छायो, कुमद अरण्य तोहि समझायो.
कामा बन लालन सुखदाई, मधु बन लालन भूमि सुहाई.
बृन्द्राबन की शोभा भारी, रास रच्यौ जहँ श्री बनवारी.
बन उपबन शोभा गत ईशा, शिव ब्रह्मादिक नायो शीशा.
इन्द्र वरुण कौवेर बिनानी, इनहूं गति मति ब्रज की जानी.
बलरा बन जहँ सेवा लाई, ऊंची नौनिधि उन हूं पाई.
सात ऋषिन मिल सेवन कीन्हो, ऊंचो आसन ध्रू को दीन्हो.

## दोहा

बहुतक सुर नर तर गये, तप कर ब्रज के बीच।
जाति पांति को को गिने, ऊंचा नीचा नीच॥
वृन्दाबन सबसों बड़ो, जैसे पय बिच घीव।
सब धर्मन हरि भक्ति ज्यों, ज्यों पिण्डी में जीव॥
सबै तीर्थ जग में बड़े, तिनहूं मैं है ईश।
सब तीर्थन फल कामना, यह सेवन जगदीश॥
बीस कोस के फेर में, वृन्दाबन को जान।
कुंज गली अति शोहनी, द्रुम बेली पहिचान॥
कञ्चन की जहँ भूमि है, धरै सतो गुण भेष।
चरणदास बलि बलि गयो, दिव्य दृष्टि से देख॥
फूल जो फूले ऋतु बिना, नाना छबि बहु रंग।
अलि मल कत गुञ्जत फिरै, भौंरी सुत के संग॥
ऋतु बसंत जहां नित रहत, बिहरत नंदकिशोर।
कुहुकत कोयल मग्न होय, बोलत दादुर मोर॥
तिहि बिच वृन्दाबन महा, निज वृन्दाबन जान।
त्री कोणी वर्णन कियो, योजन है परमान॥

## चौपाई

जाकी महिमा सबहिन गाई, रास करै जहँ कुंवर कन्हाई.
यमुना जहां परिक्रमा दीन्ही, गुप्त पिया की लीला चीन्ही.
गोपी सुत जहँ नित उठ न्हाई, बर पाये तिन कुंवर कन्हाई.
श्याम रंग निर्मल जल गहरी, वृन्दाबन के ढिग ढिग लहरी.
आशा मनसा कर जो न्हावै, सहज सुरसरी को फल पावै.
दिव वृन्दाबन दिव्य कलिंद्री, देखे सोइ जीते मन इंद्री.
कूल समीप वृक्ष यह छाहीं, आय परी यमुना जल माहीं.

### दोहा

भक्ति बिना पावे नहीं, वृन्दावन की संध।
बिन पाये निंदा करे, भोंदू मूरख अंध॥

### चौपाई

झिल मिल सुव की उठत तरंगा, बोलत दादुर अरु स्वर भंगा.
कालीदह महिमा सुन भ्राता, सहस गंग के फल की दाता.
घाट विहारहि भजन करीजे, जिहि सेवन यम उतर न दीजे
बंशीवट वस हठ इमि कीजे, तजे देह पर दर्शन लीजे.
अब सुन वृन्द्राबन की बतियां, शीतल करत हमारी छतियां.
वन घन कुंजलता छवि छाई, झुक टहनी धरनी पर आई.
मंद वायु जब करत पयाना, वसित सुगंध सबै अरधाना.
बरसत अमृत फुही सुहाई, निकसत कोमल गोभ गुहाई.

### दोहा

वृन्दावन में रहत हैं, ज्ञानी गुणी अतीत।
वृन्द्राबन को ना मिले, कोउ लेतयत जीत॥

### चौपाई

शीतल मंद सुगंध बयारी, वहत निरन्तर सब सुखकरी.
पुष्प प्रफुल्लित रंग विरंगा, लेत वास गुञ्जत सुर भंगा.
बोलत भंवर महा धुन गाजे, मानो अनहद की गति साजे.
जुगनू दमक चमक चकरावे, समय जान कर हर्ष बढ़ावे.
नाचत मोर करत चतुराई, पंख पसार मुदित भगनाई.
कइ एक उचक बोल निज बोलें, कइ इक कुंजन ऊपर डोलें.
युगल नाम ले कीर पुकारें, बार बार बन ओर निहारें.
वृन्दावन चारों युग माही, गोप रहे सुब देव कहाही.

## दोहा

वृन्द्रावन की साध गति , कापै वर्णी जाय ।
जैसी जाकी दृष्टि है, तैसो ही दर्शाय ॥
जैसे हरि मथुरा गये , सवन विलोको आय।
काल कंस की दृष्टि में , साधुन प्रभू लखाय ॥
मथुरा में जोधा वड़े , तिन्हैं मल्ल दर्शाय ।
नारिन दर्शें काम सब , प्रीति रीति अधिकाय॥
वृन्दावन वह देख है ,जिन्हैं दिखें हरि रूप ।
दुर्लभ देवन को भयो , महा गूप सों गूप ॥
वृन्दावन सेवन करे , अमर लोक को जाय।
इन्द्री जीते हरि भजे , प्रेम प्रीति के भाय ॥

## चौपाई

रसिक केल वृन्दावन माहीं , अमर लोक की भांति कराहीं .
अमरलोक तिहुंलोक से न्यारो , मथुरा मण्डल अंश विचारो .
अमर लोक विच है निज धामा , जाको अंश वृन्द्रावन नामा .
पुरुषोत्तम निज धामहि माहीं , कारण प्रेम रहे जग पाहीं .
पुरुषोत्तम प्रभु लीला धारी , वृन्द्रावन में सदा विहारी .
निज धामा का कहिये शोभा , वृन्द्रावन में रहैं अलोभा .
दिब्य दृष्टि विन दृष्टि ना आवे , सकल पुराण वेद अस गावे .
गोल चौतरौ निज वृन्द्रावन , ता पर वारौं अपनो तन मन .
रहौ चौतरौ छिप वह ठाहीं , जैसे अग्नि काष्ट के माहीं .
तापर चौसठ खम्वा सोहे , कोटि काम को निज मनमोहें .
तापर रंग महल अधिकारी , कुन्दन रूप स्वरूप सुखारी .
रंग महल अरु खम्वन माहीं , पन्ना लाल बेलि झलकाहीं .
पन्ना नग लागे जहँ मोती , झलके जगमग जगमग जोती .
रंग महल जो छिपो गुसांई , जैसी लाली मिंहदी माहीं .

नित विहार जहँ करैं बिहारी, कृष्ण कुंवर अरु राधा प्यारी ।
गौर रूप ब्रषभानु दुलारी, श्याम रूप है कृष्ण मुरारी ।
नीलाम्बर ओढ़े सँग राधा, दिव्या भूषण रूप अगाधा ।
भूषण अँग सँग लाजत ऐसे, चन्द्र निकट लघु तारा जैसे ।
पीत बसन पहिने नंद लाला, मोर मुकुट माथे गल माला ।
जरद बादले को अँग नीमा, वही गल जिन्दे सुख सीमा ।
मोतिन की माला गल सोहे, नाक बुलाक अधर पर जोहे ।
मकरा कृति कुण्डल कानन में, युगुल दामिनी मानो घन में ।
श्याम भुवंगम जुल्फ पियारी, बांकी भौंह कुटिल अनियारी ।
ललचौंहे अरु नैन ढरारे, रस के माते अरु कजयारे ।
मोती नाशा के बिच लटकै, बोलत बोल ओट पर मटकै ।
मुरली मुक्ता को रस पीवे, चाहन वारो देखत जीवे ।
गले धुक धुकी सुन्दर झमके, ताबिचकौस्तुभमानिअतिदमकै ।
अधिक सुघर पहिरे हिये चौकी, बनमालाकहियतनवनिधिकी ।
गोल भुजन पर बाजू सोहै, पहुंची कड़ा कनक की दो है ।
पहुंची ढिग पहिरे जहगीरी, रतन चौक छबि लगी जंजीरी ।
रतन चौक है पीठ हथेली, लगे जंजीर मुदरियन भेली ।
सोहे छाप छला अरु मुंदरी, नुह सत पहिरे सुन्दर अंगुरी ।
इकस चिह्न चरनन में धारे, झुनक २ पैजन झुनकारे ।
मन्द मन्द विहसत मुसकाई, मीत जीत रण कही न जाई ।
नित किशोर अरु नित्त किशोरी, द्वादश वर्ष अवस्था भोरी ।
राधे भूषण छबि का गाऊं, नाम लेत मन में शरमाऊं ।
हूं मैं दास नाम रंजीता, भक्ति दान मोहे देहु सप्रीता ।
बहुत सखी जिनके निज संगा, रास केलि खेलैं बहु रंगा ।
वन के चौसठ खम्बा माहीं, होत अखंड रास वहि ठाहीं ।
झुनक झुनक सखियन पग बाजे, घुंघुरू अधिक महा धुन गाजे ।

दिव भूषण पहिरे पिय प्यारी , शशि वदनी त्रैगुण तें न्यारी .
नवल किशोरी गोरी सारी , सुघर सयानी चातुर नारी .
दिव्य वस्त्र अरु दिव्य शरीरा , अधिक रूप छबि गहरु गंभीरा .
कजरारी कच लटकें वेनी , अंजन नैन सैन पिय देनी .
चूड़ामनि गहनो छबि नीका , सीस फूल अरु वैनी टीका .
नथ बुलाक अरु बिन्दी झलकें , घूंघर वाली लटकें अलकें .
मुख ऊपर अलकें छबि ऐसी , चन्द्र चढ़ी दो नागिन जैसी .
कर्णफूल संग झुमको मलकें , सब सखियन के भूषण झलकें .
चम्पा कली नौ लड़ी माला , चन्दर हार सु पहिरे बाला .
कठला जैसें गले जनेऊ , अरु हिय चौकी महा उभयऊ .
फूल माल सखियां सब पहिरें , गुंजन की माला हिय लहिरें .
बांहन में बाजू बंद बांधे , वंक वला बाहर पर साधे .
सदा सुहागन पहिरे चूड़ी , सुखुक पछेली बंगरी रूड़ी .
कंगन अरु पहिरी जागीरी , रतनन चौक आरसी धीरी .
छाप छला पहिरे अंगूठी , नुहसत पहिरे अजब अनूठी .
पायन में पग नेवर बाजें , नख सिख लों आभूषण साजें .
झुनक झुनक नाचे अरु गावें , ठुमक २ निरते अरु धावें .
कर थेई थेई हू कबहूं , कर ऊपर करहू धर कबहूं .
कबहूं घिनन घिनन अँग मोरें , भाव बताय तान बहु तोरें .
कबहूं कर उठाय गति चालें , सांग उपांग बताबत हालें .
हो अनुराग राग बहु गावें , घुंघरू की गति अधिक बजावें .
कोइ नाचें अरु कोई गावें , कोइ मृदंग कोइ ताल बजावें .
वेनु सरू काहू कर राजें , कोउ तंबूरा नारी साजें .
गहि उपंग कर कोउ सहेली , अमिय कुंडली कोउ अलबेली .
कोइ वीन कोइ लिय मुहचंगा , मग्न रूप सबही निज संगा .

---

## दोहा

कहा बुद्धि का कह सकूं, रास केलि को साज ।
बाजे हैं बहु भांति के , वर्णत आवे लाज ॥
कबहूं कर सों कर मिला, निरतत श्री गोपाल ।
कबहूं बैठो सांवरो , निरतत बाल गुपाल ॥

## चौपाई

कबहूं हँसकर निकट बुलावें , कबहूं फूल माल पहिरावें .
कबहूं मन्द मन्द मुसकावें , सैन सैन दै नृत्य बतावें .
वृन्दाबन में ऐसी लीला , चरणदास को जहां वसीला .
जो कोइ इन को ध्यान लगावे , अमर लोक निश्चै कर पावे .
सिमटो मन कबहूं नाहिं फूटे , सोवत जागत ध्यान न छूटे .
जो कोइ इन को ध्यान न करिहै , भरम भर्म चौरासी परिहै .
सुर नर मुनि सबही मिल ध्यावें , शिव ब्रह्मादिक अन्त ना पावें .
वेद बिना यह भेद न पावे , आप भ्रमे अरु जग भरमावे .
वेद पुराण संहिता गावें , चारों युग हरि भक्ति बतावें .

## दोहा

इत उत भटको जग फिरे, कीन्हों नाहिं बिचार ।
सत्य पुरुष जाने नहीं, कैसे उतरे पार ॥

## चौपाई

द्वापर बीतो कलयुग आयो , राजा को शुकदेव सुनायो .
कलयुग की दुर बुद्धि बताऊं , सुनहुपरीक्षितकहसमझाऊं .
ओछी बुद्धि मनुष की होगी , सकलबिकलअरुमानसरोगी.
सूक्ष्म ज्ञान महा अभिमानी , नहीं मान हैं वेद पुराणी .
परमेश्वर की निन्दा करहैं , भूत मसानी चित में धरहैं .
क्षेत्रपाल को भुमिया माने , कृत्रिम को कर्ता कर जाने .

परमेश्वर की बात न भावे, ऐसो उत्तर तुरत बतावे.
कहें राम कहँ है रे भाई, हम हूं को तुम देहु दिखाई.

दोहा

चहूं ओर हरि की बिभव, सात दीप नव खण्ड।
चरणदास कहे ऐ आंधरे, जिन राच्यौ ब्रम्हण्ड॥
भक्ति बिना दीखे नहीं, इन नैनन हरि रूप।
साधुन को परगट भयो, बिना भक्ति हरि गूप॥

चौपाई

साध संत की निन्दा करि हैं, भजन करे तासों बहु अरिहैं.
करिअभिमानआपमुंहजरिहै, गुरु को कहो नेक नाहिंकरिहै.
पंथ खड़े कर हैं छत्तीसा, भर्म पूज्य तजि हैं हरि ईसा.
दम्भ झूठ की सेवा करिहैं, झूठे पंथन में जा परि हैं.
गऊ बिप्र विष्ठा लय होई, बाप पूत में परि है दोई.
विद्या नेक कपट व्योहारा, राजा सुखी दुखित संसारा.
वेद पढ़े करि हैं अभिमाना, हमपण्डित अरुसब अज्ञाना.
पढ़े पुराण भेद नहिं जानें, साधुन से झगड़ा बहु ठानें.
पंथ पुजा हरि को बिसरावें, झूठे बाद बिवाद बढ़ावें.
व्यभिचारिनि है हैं बहु नारी, बोलें झूठ अनेक प्रकारी.
शुकदेव कहें राजा सों बैना, सो अब देखो अपने नैना.
राजा डांड़ बांध कर लूटे, पूजे भूत राम सों छूटे.
गउ विष्ठा सो खाती जानी, पण्डितदेखबहुअभिमानी.
दम्भ कपट बहु पूजा दौरी, कल बाजा हर पूजें बौरी.
पण्डित वेद पढ़े बिसरावें, स्याने भोंपों को शिर नावें.
हरि के साधन को बिसरावें, तजें राम औरन को ध्यावें.
हरिकीभक्तिसदाचलिआई, वेद पुराणन में जो गाई.
इनको समझ भये जो ज्ञानी, नाभा जिनकीभक्तिबखानी.

जिनकीमहिमासबजगजानी, सब जानत हैं चतुरा ज्ञानी .
पीपा सदना सैना नाई, धना जाट अरु मीराबाई .
नाम देव रैदास चमारा, तुलसी माधव मोर बिचारा .
कूबा कुम्हरा फैजू संका, सेऊ संमन रंका बंका .
करमैती अरु कर्मा बाई, दास कबीरा बाणी गाई .
जै देवा अरु नर्सी महिता, दास मलूक कड़ा में रहिता .
अन्ता नन्द कील अरु जंगी, देव मुरार निपट सर्वंगी .
नरहरि लालदास हरि बंसा, रंग नाथ बनवारी हंसा .
नानक सूरदास अरु दादू, सनक सनन्दन कहियेआदू .
ध्रुव प्रहलाद बिभीषण शिवरी, हनूमान शङ्कर अरु गौरी .
बाल्मीक अंमरीष सुदामा, मोरध्वज राजा संग्रामा .
बहुतक भक्त और जो भये, नाम न जानो जात ना कहे .
कई कोटि वैष्णव बहु बांके, सब ही गये मुक्त के नांके .
चरणदास हरि भक्ति बिचारी, सुमिर २ पहुंचो नर नारी .

दोहा

लिख पढ़ समझ बिचार कर, सदा करो हरि ध्यान ।
कृष्ण भक्ति दृढ़ कर गहो, मिटे सकल अज्ञान ॥

कवित्त सांगीत

मुकुट जटित सिर अधिक बिराजत, गहे बसुरिया अधर धरं .
शंख चक्र गद पदम बिराजत, कोटि मदन छबि लाजित करं .
गिरिवर नख धारे असुर सँहारे, सन्तन के दुख हरन परं .
जन चरणदास चर्णन को चेरो, सदा रहे गिरिधर शर्णं .

छन्द

कुंकुम कोबिंदं दितं भालं, उदधि जात द्युति को हरनं.
मकराकृति कुंडल शुभ्र बिराजत, झमक दामनी छबि धरनं.

कटि किंकिनि पग पैंजनि बाजत, मुक्तमाल सुर सुर बरनं.
जन चरणदास चर्णन को चेरो, सदा रहे गिरधर शरणं.

### कबित्त सांगीत

सुन्दर बाल लाल संग लीने, रास करत मन मगनं.
घुमर घुमर झुक झुक कर नृत्यत, खुटर २ नाटक बरनं.
मधुर मधुर धुन मज्जत गज्जत, झनक झनक झन झा झरनं.
जन चरणदास चरणन को चेरो, सदा रहित गिरिधर शरणं.

### कबित्त सोरठा

रास रचावे सब सुख पावे, सांवरो वदन छवि वर्णनं.
धुधक धुधक धूंधू करि निरतं, ताता त्रिती धिननं २.
झुनक झुनक नूपुर झुनकारत, झनक झनक झन झन ननंनं.
जन चरणदास चर्णन को चेरो, सदा रहत गिरधर शरणं.

### कबित्त

नंद के कुमार मैं पुकारूं तो कूं बार २ लीजिये उबार ओट आपनी में कीजिये. काम अरु क्रोध यम त्राश को मिटाय डाल मांगूं प्रभु एक निज भक्ति दान दीजिये. और की छुटाओ आश संतन को दीजे साथ, वृन्दाबन वास मोहि फेरहू पतीजिये. भनत है चरनदास राधाबर तेरी आश होय नहीं हास मेरी श्रवनन सुन लीजिये.

वही हाथ कुच गहके पूतना के प्राण शोषे, पाय ऊंची पदवी निज धाम को सिधारी है. वही हाथ श्रीधर को मुख माड़ौ दही सेती, छाती पर पांव दे मरोड़ जीभ डारी है. वही हाथ कूबरी को कूब काढ़ सीधी कियो वही हाथ मस्तक गज खैंच मूठ मारी है. वही हाथ बांह चरणदास कहे आय गहो, वही हाथ यमुना में नाथो नाग कारी है.

कवित्त

यशोदा को लाल देख, मोहन ब्रज बाल देख, गोपी अरु ग्वाल देख, प्राण वार दीजिये. माथे पर मुकट देख, कुंडल की झलक देख, घूंघर वाली अलक देख, ललक काही कीजिये. बांकी सी मरोर देख, मुरली की घोर देख, पैजन ठकोर देख, देखा ही कीजिये. चरणदास कूर देख, नैनन को मूंद देख, नैनन के बीच देख, यह ध्यान कीजिये.

दोहा

परम धर्म भागवत मत, भक्ति अनन्य बिचार ।
सम्प्रदाय शुक देव मुनि, चरणदास गुरु द्वार ॥

॥ इति श्री चरणदास कृत ब्रज चरित्र सम्पूर्ण ॥

---

ओ३म भगवते वासुदेवाय नमः

॥ अथ गुरु शिष्य सम्वाद अष्टांग योग लिख्यते ॥

शिष्यो वाच दोहा

व्यास पुत्र धनि धन्य तुम, धन्य धन्य यह थान ।
मम आशा पूरी करी, धन्य धन्य भगवान ॥
तुम दर्शन दुर्लभ महा, भये जो मोकों आज ।
चरण लगो आपा दियो, पूर्ण भयो सब काज ॥
चरणदास अपनो कियो, चर्णन लियो लगाय ।
शिर कर धर अपनो कियो, भक्ति दई समझाय ॥
बाल रूप दर्शन दियो, तब ही सब कुछ दीन ।
बीज जु बोयो भक्ति का, अब भयो वृक्ष नवीन ॥
दिन दिन बढ़ता जायगा, कृपा आप की नीर ।
जब लग माली ना मिला, तब लग होत अधीर ॥
अरु समझायो योगहू, बहु भांती बहु अंग ।

उर धारे ताही कही, जीत न विंद अनंग ॥
अरु आसन सिखलाईया, तिन की सारी विद्धि।
कृपा तुम्हारी होंयगे, सब ही कारज सिद्धि ॥
इक अभिलाषा और है, कहते में सकुचाय।
हिये उठे मुख आय के, फिर भी उलही जाय ॥

गुरुरुवाच

दोहा

सद्गुरु से नहिं सकुचिये, रहो चरण ही दासु।
जो अभिलाषा मन विषय, खोल कहो अब तासु ॥

शिष्यरुवाच

दोहा

सतगुरु तुम आज्ञा दई, वरणहु अपनी बात।
योग अष्टांग लखाइये, ताते हियो सिरात ॥
मोहि योग बतलाइये, जो है वह अष्टांग।
रहनी गहनी बिधि सहित, जाके आठों आंग ॥
मत मांही देखे घने, झुम्भखि परे भय प्राण।
जो कुछ चाहो तुम करो, मैं हूं निपट अजान ॥

गुरुरुवाच

दोहा

योग अष्टांग समभ्भायहूं, भिन्न २ सब अंग।
पहिले संयम सीखये, ताते होय न भंग ॥

शिष्यो वाच

दोहा

संयम कासों कहत हों, कहो गुरू शुक देव।
सो सब ही समभ्भाइये, ताको पाऊं भेव ॥

गुरुरुवाच

## चौपाई

भोजन अल्प करे नर जोई, नाश क्षुधा आलस नहिं होई.
थोड़ा सा जल पीवन लीजे, सूक्ष्म बोल वाद ना कीजे.
बहुत नींद भर सोवे नाहीं, दूजा पुरुष न राखे पाहीं.
खट्टा चिर्पर खार न खावे, वीर्य हीन होने नहिं पावे.
करै न कबहूं बैर न मिन्ता, जगत वस्तु की राख न चिन्ता.
निश्चल हो मन को ठहरावे, इन्द्रियन के रस सब बिसरावे.
त्रिया तेल नहिं देह छुआवे, अष्ट सुगंध अंग नहिं लावे.
मानुष की राखे नहिं आशा, गुरु का रहे चरण ही दासा.

## दोहा

काम क्रोध अरु लोभ को, मोह नहीं अभिमान।
रहे दीनता हू लिये, लगे न माया वान॥

## चौपाई

छल नहिं करे न छल पे आवे, दम्भ झूठ के निकट न जावे.
यन्तरु टोना भूत न ध्यावे, झूठ जान के सब बिसरावे.
धातु रसायन मन नहिं लीजे, झूठ जान याहू तज दीजे.
स्वागत मासहि बाग न जइये, आशन ऊपर बैठ बितैये.
दृढ़ हो लगे युक्ति के माहीं, तातें विघ्न होय कछु नाहीं.
रूठा रहे जगत लोगन तें, न्यारा रहे सबहि भोगन तें.
इन्द्र आदि ले सुख संसारी, नेक न चाहे चित्त मँझारी.
सिमट रहै हिय माहि समावै, ऐसे योग सधे सिधि पावै.

## दोहा

ऋद्धि सिद्धि अरु कामना, तन की राख न आस।
मान बड़ाई चपलता, त्यागे चरणहि दास॥

## चौपाई

गहि संतोष क्षमा हिय धारै, संयम करके रोग निवारै.
अहंकार को छोटा करिये, कुटिल मनोर्थ चित्त नहिंधरिये
वसिये जित हो देश सुथाना, निरु उपाद गुप्त शुभ थाना.
भली भूमि लखि गुफा बनावे, नीची ऊंची रहन न पावे.
भूमि बराबर चौरस होई, वा में वास करो तुम सोई.
सकरा द्वार कपाट लगावे, कतहूं छिद्र रहन नहिं पावे.
ता में बैठ योग तप कीजे, भीतर दूजा मनुष न लीजे.
कहि शुक देव चरण ही दासा, जग सों रहिये सदा उदासा.

## दोहा

याही सब निश्चय करै, योग युक्ति की याद।
पहिले ऐसा साध के, पाछे साधन साध॥
आठ अंग कहुं योग के, सुनों चरण ही दास।
मेरे वचनन के विषय, चित दे करो निवास॥

## चौपाई

पहिले यम का अँग सुन लीजे, दूजे नेम कहों चित दीजे.
तीजे आसन हित कर साधौ, प्राणायाम चौथे आराधौ.
प्रत्याहार पांचवां जानो, षष्ट धारना को पहिचानो.
सातों ध्यान मिटै सब बाधा, कहौ आठवां अंग समाधा.

शिष्यो वाच

धन्य धन्य तुम श्री गुरु देवा, प्राण पिता मेरे शुक देवा.
व्यास पुत्र तुम दीनदयाला, मो अनाथ को कीन्ह निहाला.
आठ अंग मोहि दियो सुनाई, वर्णहु भिन्न भिन्न समुझाई.
एक एक को जुदा बखानो, जासों जाय दास पै जानो.

गुरुरुवाच

## दोहा

एक एक को कहत हों, जुदा जुदा बिस्तार।
सर्वन सुनो विचार के, लेहु हिये में धार॥

अथ यम अंग वर्णनम

## चौपाई

पहिले यम के दस कह अंगा, समझहु योग न होवे भंगा.
प्रथम अहिंसा है सुन लीजे, मन कर काहू दोष न दीजे.
कड़वा बचन कठोर न कहिये, जीव घात तन सों नहिं दहिये.
तन मन बचन न कर्म लगावे, यही अहिंसा धर्म कहावे.
दूजे सत्य सत्य ही बोले, हिय में तौल बचन मुख खोले.
तृतिय स्तेय त्याग सुन लीजे, तन मन सों कछु नाहिं हरीजे.
तन चोरी के लच्छण नाशै, मन की चोरी कछु नहिं राखै.
चौथा ब्रह्मचर्य बतलाऊं, भिन्न भिन्न कर तोहि सुनाऊं.

## दोहा

ब्रह्मचर्य यासों कहौं, सुन ले चरणन दास।
आठ अंग सो नारि की, नेक न राखे आस॥

## चौपाई

यती होय दृढ़ कांछ गहीजे, बीर्य चीण नहिं होने दीजे.
मैथुन के सुन अष्ट प्रकारा, ब्रह्मचर्य रह इन सों न्यारा.
अबला सुमिरण नाहिं करीजे, गुण को श्रवण न रूप धरीजे.
रस सिंगार पढ़े नहिं गावे, नारिन से नहिं हंसे हंसावे.
दृष्टि न देखे विष नहिं दौरे, मुख देखे मन होजा औरे.
बात एकान्त करे नहिं कबहीं, मिलन उपाय जो त्यागे सबहीं
आठ वास पर निकट न जावे, काम जीत योगी सुख पावे.

अष्ट प्रकार के मैथुन जानो, इन के तजै ब्रह्म पहिचानो.
कह शुक देव चरण ही दासा, ब्रह्म सत्य में करै निवासा.

दोहा

पंचम सुखदाई छमा, जलन बुझावे सोय।
जो दुक आवे घट विषय, पातक डारे धोय॥

चौपाई

कोइ दुष्ट कडुवा कह जावे, गाली देकर कोइ पिछयावे.
कै कोइ सिर पर धूरा डारे, कै कोइ दुःख देय अरु मारे.
बाकी कछु नहिं मन में लावे, उलटा उन को शीश नवावे.
ऐसी छमा हृदय में लावो, बोली शीतल अग्नि बुझावो.
छटा अंग धीरज का जानो, धीरज ही निज हिय में आनो.
योग युक्ति धीरज सों कीजे, सब कारज धीरज सों लीजे.
धीरज से बैठे अरु डोले, धीरज राख समझकर बोले.
आन पड़े दुःख ना अकुलावे, धीरज सों दृढ़ता मन लावे.

दोहा

धीरज रहा तो सब रहा, काहू सों न डराय।
सिंह प्रेत अरु काल को, धीरज देत भगाय॥

चौपाई

दया सातवीं अब सुन लीजे, सब जीवन की रछा कीजे.
लख चौरासी का सुखदाई, सब के हित की कहैं बनाई.
रहिये तन मन वाच दयाला, सब ही से निर्वैर कृपाला.
आठों कहूं आर्जव बोले, हिय कोमल कोमल वच बोले.
सब को कोमल दृष्टि निहारे, कोमलता तन मन में धारे.
कोमल धरती बीज बुवावे, वृच्छे वेग फूल फल लावे.
ऐसो कोमल हियो बनावे, योग सिद्ध करि पद पहुंचावे.

यही आर्जव लक्षण जानो , गुरु शुक देव कहे उर आनो.

दोहा

मिताहार जो नामकी , समझ लेहु मन माहिं ।
सतगुण भोजन खाइये , ऐसा वैसा नाहिं ॥
खावे अन्न बिचार के , खोटा खरा सम्हार ।
जैसा ही मन होत है , तैसा हो आहार ॥

चौपाई

सूक्ष्म चीकना हलका खावे , चौथा भाग छोड़कर पावे.
वाण प्रस्थ कै हो सन्यासी , भोजन सोलह आठु गिरासी.
कर गृहस्थ बत्तीस जु ग्रासा , आवै नींद न बहुत न श्वासा.
ब्रह्मचारी भोजन कर इतना , पढ़न माहिं धीरज रहै जितना.
दशवांशौच पवित्र जु कहिये , कर दातौन हमेश नहैये.
जो शरीर में होवे रोगा , रहे न तन जल छूवन योगा.
यह तन माटी से शुध कीजे , अभ्यन्तर शुध की सुन लीजे.
राग द्वेष हिय से सब टारे , मन से खोटे कर्म निवारे.

दोहा

दश प्रकार का यम कहा , पहिल योग की नींव ।
कहूं नेम अब दूसरा , सो है साधन सींव ॥

अथ नियम अंग कथ्यते

चौपाई

दूजा अंग नेम का गाऊं , भिन्न भिन्न सब अंग सुनाऊं.
पहिला तप इन्द्री वश कीजे , इन के स्वाद सकल तज दीजे.
खातपियत अरु सोवत जागत, योगी इन्द्रिन को वश राखत.
तन को वश कर मन को मारे , ऐसी विधि तप का अंग धारे.
दूजा अंग कहौं संतोषा , भय अरु हानि न मानैशोका.

लाभ भये नाहीं हरषावे, ऐसी समता हिय में लावै.
प्रारब्धहि वश होय सु होई, कल्प विकल्प न राखे कोई.

दोहा

तीजा आस्तिक अंग है, ताको सुनो विचार।
समझ समझ मन में धरे, ताको है संचार॥

चौपाई

शास्त्र सुने विश्वास जो कीजे, सत्य ब्रह्म निश्चय कर लीजे
बुधि निश्चल आतम के माहीं, जगत सांच कर माने नाहीं.
चौथा दान अंग विधि दोई, पात्र कुपात्र विचारौ कोई.
एक दान उपदेश जो दीजे, भव सागर तें पार करीजे.
दूजा दान अन्न और पानी, दीजे कीजे बहु सन मानी.
और पराये दुख की बूझे, सुख दानी परमारथ सूझे.
पंचम ईश्वर पूजा करिये, तन मन बुद्धि जहां लों धरिये.
है निष काम तजे सब आसा, सेवा करे होय निज दासा.

दोहा

पाती फूल जो भाव सों, अरु सुगन्ध करि धूप।
शुकदेव कहैं यों कीजिये, पूजा अधिक अनूप॥

चौपाई

छठौं सिद्धांत श्रवण सुन वाणी, कर विचार गहिये मन मानी
सार असार विचार जु कीजे, पानी को तज पय को पीजे.
अरु सतगुरु सों निश्चय करिये, परख सम्हार हिये में धरिये.
करनी करै तिन्हों से मिलना, वचन अयोगी के नहिं सुनना.
सप्तम में जो कहिये लाजा, सो वह सकल सम्हारै काजा.
साधु गुरू सों लाज करीजे, तन मन डुलने नाहीं दीजे.
कर्म विवर्जित सब परिहरिये, हिय आंखन में लज्जा भरिये.

शुकदेव कहें सुन चरणन दासा, लाज भवन मांहीं करवासा

दोहा

कुटुम मित्र जग लोगही, सब सों कीजे लाज।
बड़ी लाज हरि सों करो, नीके सुधरें काज॥

चौपाई

अठवें मति दृढ़ ही जो कहिये, सो विशेष साधों को चहिये.
शुभ कर्मन की इच्छा करनी, हो न सकै तो बहिये धरिनी.
बहकै ना काहू बहकावे, कैसे हू नाहिं हिलै हिलावे.
जग सुख देखन मन में आने, स्वर्ग आदि सुख तुच्छहि माने.
कोइ स्तुति आदर कर सेवे, कोइ कु भाव करि गारी देवे.
दोनों में निश्चय रह जोई, शुकदेव कहें दृढ़ मति है सोई.
गुफ में जाप करै गहि मौना, मन जिह्वा सों कीजे जौना.
होय सकै मन पवन गहीजे, मंत्र गुरू जप तामें कीजे.

दोहा

हरि गुरु की स्तुति पढ़े, शोभा कहिय न जाय।
रण जीतहि शुकदेव कह, नाशहि त्रिविधि अपाय॥
दशवें समझो होम ही, कीजे दोय प्रकार।
अग्नि माहिं साकल्य को, वेद कहे ज्यों डार॥
दूजे पावक ज्ञान की, तामें इन्द्री होम।
याहि प्रगट ही भूमि है, वाको हिय की भूमि॥

चौपाई

यम का भेद सबै कहि दीन्हा, नेम कहा सो भी तुम चीन्हा.
निरे योगही के मत आनो, सब के कारज को पहिचानो.
यहतो योग प्रथमही चहिये, शुभ करमन के मारगलहिये.
जो ये होय तो होवे योगा, नाहीं वही जगत के भोगा.

जिज्ञासी को पहिल सुनीजे, पीछे भेद योग का दीजे .
यम अरु नियम दोऊ बतलाये, आछे नीकी भांति सुनाये .
अब तीजो आसन समझाऊं, जुदे २ कहि सबै सुनाऊं .
योग पहिल आसन ही साधै, आसन बिना योग बरबादे .

आसन वर्णनम्

**दोहा**

चरणदास निश्चय करौ, बिन आसन नहिं योग ।
जो आसन दृढ़ होय तो, योग सधै भज रोग ॥

**चौपाई**

चौरासी लख आसन जानो, अरु उनकी बैठक पहिचानो .
तिन में चौरासी चुन लीने, दुर्लभ भेद सुगम सो कीने .
सो मैं तुमही पहिल बताये, तिनको साधोगे चितलाये .
तिन में दोई अधिक प्रधाने, तिनको सब योगीश्वर जाने .
आसन सिद्ध पद्म कहिलावे, इनको निश्चल कर ठहरावे .
अरु आसन सब रोग भजावें, ये दो आसन योग सधावें .
इन को साधे जो जन कोई, ध्यान समाधि लगावे सोई .
चरणदास शुकदेव ने कह्यो, आसन दोनों है ज्यों वरण्यो .

(अथ पद्मासन)

**चौपाई**

पहिलो आसन पद्म बताऊं, ज्यों की त्यों मूरति दिखलाऊं .
पहिले बांयां पांव उठावे, दहिनी जंघा ऊपर लावे .
दहिना पांव फेर फैलाके, बांई से बल ऊपर राखे .
बांयों कर पीछे से लावे, बांय अंगूठा गहि तन तावे .
ऐसे हाथ दाहिना लावे, दहिन अंगूठा पकड़ डिठावे .
ग्रीवा लटक चुबुक हियआवे, नाशा आगे दृष्टि लगावे .
दिव्य दृष्टि है कौतुक दरशे, कह शुकदेव अभय पद परसे .

दोहा

चिबुकहि राखे हृदय पर , या सम राखे देह ।
कै घुटनो पर हाथ धर , कै अंगुठा गहि लेह ॥

( अथ सिद्ध आसन )

चौपाई

दूजा आसन सिद्ध जु कीजे , बांयें पांव गुदा दृढ़ दीजे .
दहिना पांव लिंग पर लावे , दृष्टि भृकुटि ऊपर ठहरावे .
अचरज जहांअधिकदरशावे , खुले किवाड़ मोक्ष गति पावे .
आसन साध व्याध पर हरे , भूख नींद जोपे बश करे .

दोहा

एड़ी बांये पांव की , सियन मध्य लै राख ।
लिंग गुदा के मध्य में, मूल बोलिये साख ॥
संयम से इन्द्री गहे , राखे सरल शरीर ।
दृष्टि उठा भृकुटी धरे , मैटे दोनों पीर ॥
दहिना लावे लिंग पर , भाग बराबर राख ।
बारी २ कीजिये , शूकदेव यह भाख ॥

( अथ प्राणायाम का अंग )

दोहा

चौथे प्राणायाम ही , कहूं सुनो चित लाय ।
जा बल जीते पवन को, चढ़े गंग को धाय ॥
षट चक्र को छेद के, सुख्मन ही की राह ।
सहस्र दल के कमल में, पहुंचे करे उछाह ॥
हृदय में स्थान है , प्राण वायु का जान ।
याके रोके सब रुकें , वायुन में परधान ॥

जैसे गंगा एक ही, घाट २ को नांव।
ऐसे प्राणहि वायु के, नांम कहे बहु ठांव॥
चौरासी स्थान पर, चौरासी ही बाय।
ताम दश य मुख्य हैं, वर्णा सुनिये ताय॥
प्राण अपान समान है, और व्यान उद्यान।
नाग धनञ्जय देवदत्त, कूरम किरकिर जान॥
दश वायू जो ये कहे, तिन में दीरघ दोय।
सो वे प्राण अपान हैं, तिन्ह पहिचाने कोय॥
जब अपान प्राणैं मिले, रहै प्राण को प्राण।
शुक्राचार्य वर्णन कियो, अब इन के स्थान॥

चौपाई

प्राण वायु हिरदय के ठाहीं, बसे अपान गुदा के माहीं.
वायु समान नाभि स्थाना, कंठ माहिं बायू उद्याना.
व्यान जु व्यापक है तन सारे, नाग वायु से उठत डकारे.
पलक उघारे कूरम बाई, देवदत्त सों होय जम्हाई.
किरकिल बायू भूख लगावे, मुग धन्य जो देह फुलावे.
सब में प्राण वायु मुख जानो, हृदय मध्य ताको पहिचानो.
हृदय रहै देही के माहीं, जो कुछ है सो झांई झाई.
योगीश्वर झांई फल पावे, जहँ से अनहद नाद जगावे.

(अथ चक्र वर्णनम्)

दोहा

अब चक्कर वर्णन करूं, पीछे प्राणायाम।
बरनूं नाड़ी सुष्मना, सुघर सबहि है काम॥
ह वे सूरत कमल की, छोटा और बिशाल।
मूल सु लेकर शीश लों, एक तासु की नाल॥

कुंडलिया

लाल रंग पहिला कहौ, अधार चक्र तिहि नांव।
चार पांखुरी तासु की, है जु गुदा के ठांव॥
है जु गुदा के ठांव, देह ताही पर साजें।
चारों अक्षर जहां, देव गणेश बिराजें॥
पवन सुरत तहां ले धरे, सोल कहैं शुकदेव।
दूजा लिंग स्थान है, ताका सुन अब भेव॥
पीत वर्ण षट पांखुरी, नाम जु स्वाधिष्ठान।
षट अक्षर जापै दिपे, ब्रह्म देवता जान॥
ब्रह्म देवता जान, संग सावित्री दासा।
इन्द्र सहित सब देव, जहां सबही का वासा॥
मन पूरक चक्कर कहौं, तीजा नाभ स्थान।
नील वर्ण दस पांखुरी, दस अक्षर पहिचान॥

दोहा

विष्णु तहां का देवता, महा लक्ष्मी संग।
चरणदास अब कहत हों, चौथे का परसंग॥
अनहद चक्र हृदे बिषें, द्वादश दल अरु श्वेद।
शिव शक्ती अरु देवता, द्वादस अक्षर भेद॥
पंचम चक्कर कंठ में, नाम विशुद्ध जिहि केर।
षोड़स दल जिव देवता, षोड़स अक्षर हेर॥
छठा जु भौंहों बीच में, आज्ञा चक्कर सोय।
ज्योति देवता जानिये, दो दल अक्षर दोय॥

शिष्यो वाच

कमलन पै अक्षर कहे, समुझ न आई मोहिं।
कौन कहां को है अक्षर, बिनय करू प्रभु तोहिं॥

गुरो वाच

चौपाई

पहिल कमल आधार सुनाऊं, व श ष स अक्षर वर्ण बताऊं.
दूजा कमल जु स्वाधिष्ठाना, व भ म य र ल जु बखाना.
तृतिये मन पूरक जो कहिये, ड ढ ण त थ ही तहँ लहिये.
द ध न प फ जो गाये, ये दस अक्षर वर्ण बताये.
चौथा चक्कर अनहद माहीं, द्वादश अक्षर वर्ण बताहीं.
क ख ग घ ङ जो जाना, च छ ज झ ञ ट ठ जो मानो.
पंचम षोड़स बिशुध जु आछे, आदि अकार २ जु पाछे.
छटा जु आज्ञा चक्कर मानो, हंस वर्ण दो अक्षर जानो.

दोहा

मन्दिर भंवर गुफा में, तहां त्रिवेणी न्हान।
नित परवीं तहँ होत है, करै पाप की हान॥
उलटी पवन बेधै षटन, ऊपर पहुंचे जाय।
शुकदेव कहे चरणदास जु, सुष्मन सहज समाय॥
कमल सहसदल सातवां, शीस मध्य है बास।
तहां देवता सतगुरू, पूरी करें जु आस॥
जहँतक सुष्मन का सिरा, सो सातों की नाल।
हैं वे उलटे षट कमल, तले अपान बयाल॥
अपान वायु को साध के, ऊपर लावै मोर।
जब होवें उलटे कमल, मुख अकाश की ओर॥
अपान वायु ज्यों २ चढ़ै, चक्कर २ पास।
त्यों २ सीधे होंय सब, पूरा जान अभ्यास॥
अपान वायु आवै जबै, चक्र अनाहद माहिं।
दश प्रकार के नाद हू, शनैः शनैः खुलजाहिं॥

### चौपाई

पहिले नाद खुलै जो ऐसा, चिड़ी चिंकला बोले जैसा.
एकहि बार कहै यो चिन्न, दूजी बार खुलै चिन्न चिन्न.
छुद्र घंट ज्यों तीजे जानो, चौथी नाद शंख पहिचानो.
पंचम नाद बीन ज्यों गाजे, छठवीं नाद ताल ज्यों बाजे.
सप्तम उपजे मुरली ऐसी, अष्टम उठै पखावज जैसी.
नवें नफीरी नाद सुनावे, दशवें सिंह गरज उपजावे.
नौ तज दशवें सों हित लावे, अनहद सुनअनहदहोजावे.
होय जीव सो ब्रम्ह अगाधा, जो कोइ सुनेसुअनहदनादा.

### दोहा

खुले सु अनहद नाद ज्यों, सो साधन सुन लेहु।
जासों पहुंचे सिद्धि कों, सो करनी चित देहु॥
अधार चक्र सों खेंच कें, अपान वायु सज लेहु।
सूधिष्टान के पास ही, तीन लपेटा देहु॥

### चौपाई

या की विधि सब तोह सुनाऊं, जैसे हैं तैसे समझाऊं.
पहिले मूल द्वार को शोधै, बंध लगाय अपान निरोधै.
पहिले चक्कर में पहुंचावे, खेंच दूसरे के ढिग लावे.
वाके आसहि पास फिरावे, दहिने तीन लपेट लगावे.
फिर मन पूरक में पहुंचावे, फेर अनाहद में ले जावे.
अनहद खुले सुने सुख पावे, फिर वहां प्रानअपानमिलावे.
हिरदय कंठ मध्य ठहरावे, संयम सों ताको परचावे.
बंध दूसरो तहां लगावे, चरणदास शुकदेव बतावे.

## अष्टपदी

पहिले अनहद नाद खुलै हिय ऊपरे ।
कंठ से नीचे रोक ध्यान वहां ही धरे ।
जहां अपर बल होयजु अनहद शब्द ही ।
फिर यौं जानों जाय कंठ के मध्यही ।
तहां किये अभ्यास ध्यान राखे घना ।
होवे अध की नाद सुनें साधू जना ।
केतिक दिवसन माहिं ब्रम्ह रंध्र कनै ।
जाय खुलै जहां नाद सुरत दे वहां सुनै ।
शनैः शनैः यो होय जाने कोई साधही ।
हृदय अरु ब्रम्ह एक लों एकहि नादही ।
मीठी और स्वाद बहुत ही पाइये ।
सतगुर के प्रताप जहां मन लाइये ।
ब्रम्ह लोक की बात सुनी होवे जो वहां ।
सबही सूझै वस्तु जो कुछ होवे तहां ।

## दोहा

अनहद की सम और फल, या शरीर में नाहिं ।
पटतर नहिं कछु कर सकों, सब कुछ है वा माहिं ॥
पांच थके अनहद बढै, अरु मनुआं बश होय ।
शुकदेव कहैं ऐ दास, आप अपन जा खोय ॥
नारिन में सुष्मन बड़ी, सो अनहद की मात ।
कुम्भक में केवल बड़ा, सो है वाको तात ॥
मुद्रा बड़ी जु खेचरी, वाकी बहिनी जान ।
अनहद सा वाजा नहीं, और न या सम ध्यान ॥
सेवक सों स्वामी बनै, सुनै जो अनहद नाद ।
जीव ब्रम्ह हो जात है, पावै अपनी आद ॥

चरनदास अब कहत हौं, वहीं जु प्राणायाम।
शुकदेव कहै ताके किये, पावे मन विश्राम॥

चौपाई

बहतर सहस अष्ट शत चौसठ, नारिन की जड़ नाभि माँहिंपठ.
तिनमें दश नाड़ी शिर मौरी, पंच बायें पंच दहिने ओरी.
जिनमें तीन अधिक परिधाना, इड़ा पिङ्गला सुषमन जाना.
उनमें सुषमन अधिक अनूपा, सो वह कहिये अग्नि स्वरूपा.
दस नाड़ी स्थान बताऊं, ठौर २ तोहि कहि समझाऊं.

दोहा

नारि संखिनी गुदा में, कुर कुल लिंग अस्थान।
पोषा सरवन दाहिने, जस्वनी बायें कान॥
गंधारी दृग बाम है, हस्तिनी दहिने नैन।
नारि लंबिका जीभ में, सकल स्वाद की दैन॥
नाशा दहिने अंग है, पिंगला सूरज बास।
इड़ा सुबायें ओर है, जहँ शशि और प्रकाश॥
दोनों के मध सुष्मना, अद्भुत या को भेव।
ब्रम्ह नाड़ी हू कहित है, सो या कहि शुकदेव॥
इड़ा ब्रम्हा जमुना जहां, सुषमन विश्नु निवास।
और सरस्वति जानिये, ये हो चरनहिं दास॥
शिव पिंगल गंगा सहित, सो वह दहिने अंग।
तिरबेणी याते भई, मिला जु तीनों संग॥
कभी इड़ा सुर चलत है, कबहीं पिंगल माहिं।
मध्य सुषमना बहत है, गुरबिन जाने नाहिं।
सो वह अग्नि स्वरूप है, बड़ो योग सरदार।
याही तें कारज सरे, ऐसी, सुषमन नार॥

चौपाई

इन सों प्राणायाम करीजे, पूरक कुंभ करे चक हीजे.
इड़ा पिंगला मारग थाकै, उलट सुषमना चालन लागै.
वायु खेंचना पूरक जानों, ठहरा वन कों कुंभक मानों.
फेर उतारे रेचक वोई, प्राणायाम कहावे सोई.

दोहा

इड़ा पवन पूरक करे, कुंभक राखे रोक।
रेचक पिंगल सों करे, मिटे पाप के थोक॥

चौपाई

पिंगल रोके पवन न जोवे, इड़ा ओर सों वायु चढ़ावे.
कुंभक करि हिय चिबुक लगावे, जित का तित मन कू ठहरावे.
सोलह मात्रा पूरक लीजे, चौंसठ कुंभक में जप कीजे.
रेचक फिर बत्तीस उतारो, धीरे धीरे ताहि निवारो.
पहिले २ ही कीजे आधे, तीन महीने ऐसे साधे.
या सों आगे फेर बढ़ावे, दोय आठ अरु चार चढ़ावे.
बाढ़त २ ऐसहि बाढ़े, यों ही चौंसठ तांई चाढ़े.
इड़ा वायु सों पूरक कीजे, पिंगल सों रेचक तज दीजे.
फिर पिंगल सों पूरक धारै, बहुर इड़ा ही सों निरवारै.
ऐसी वारी वारी करिये, जीते प्राण वायु अघ हरिये.
होय सके कुंभक सर कावे, चौंसठ से भी परे बढ़ावे.

शिष्यो वाच

दोहा

चरनदास कर जोर कह, सुनों गुरु शुकदेव।
कौन समैया कों करे, रात दिना कहि देव॥
मात्रा कासों कहित हो, जो बतलायो जाय।

कै तो करै अहार ही, जाको कहिये नाय ॥

गुरुरु वाच

ओं बिन्दी सहित ही, ताही मात्रा जान ।
बीज मंत्र तासों कहत, प्रणवह को पहिचान ॥
कोमल भोजन कीजिये, आधी रखिये भूख ।
पवन बास सुख सों जहां, तन नहिं पावै दूख ॥
साठ घड़ी दिन रात की, आठ तासु के याम ।
लीजे चौथा भागही, कीजे प्राणायाम ॥
चार भाग ताके करे, चार समै ठहराय ।
चार चार छटिका करे, दृढ़ ब्रत चित्त लगाय ॥

चौपाई

और दूसरी भांति सुनी जे, होय न सकै तो या कों कीजे ।
बारह ऊपर पवन चढ़ावै, कुंभक माहिं बीस ठहरावै ।
बारह पिंगल पवन उतारे, रात दिना में चारहि बारे ।
फेर बढ़ावे कुंभक दुगुनी, केते दिबसन में फिर तिगुनी ।
फिर पिंगल सों पूरक लीजे, इड़ा वायु रेचक ही कीजे ।
बिरिया एक इड़ा सों खेंचे, पिंगल दूजी बार सु ऐंचे ।
कबहूं यासे कबहूं वासों, रेचक करे सो पूरक जासों ।
कुंभक तिगुनी सों अधिकावे, होय सकै जितनी सरकावे ।

दोहा

भांति दूसरी और सुन, साधन अधिक अनूप ।
गुर बिन भेद न पाइये, महां गूप सों गूप ॥

अष्ट पदी

प्रान वाय की जुगति कहो जो बात है ।
द्वादश अंगुल नाशिका आगे जात है ॥

संयम ही सों सहज जु उलट घटाइये ।
शनैः शनैः साध जु ताहि समाइये ॥
अपान वायु कों खेंच प्रान घर लाइये ।
फिर बाहर सों रोकि जु तिन्हें मिलाइये ॥
तीन करम पूरक के कुंभक के कहे ।
रेचक हीके कर्म दोय निश्चय भये ॥
दो रेचक के कर्म पूरक के कहे तीन ही ।
ये सब ही रह जांय होय जब छीन ही ॥
पूरक रेचक छूटे केवल कुंभक वहीं ।
ठौर समै का बंधन राखे ना सही ॥
या किरिया को अंत जानो तुम वहां ताहीं ।
प्रानहि वायु को रोके काया के माहीं ॥

दोहा

साठ सहस इकीस लख, सब की श्वास प्रमान ।
यह तो रोकै देह में, जब लग एकहि प्रान ॥
याके होवें सौ दिना, साधन होय जु सिद्धि ।
केवल कुंभक जानिये , पूरी होवे बिद्धि ॥

अष्टपदी

इतनी होवे शक्ति रुकनि जब श्वास की ।
रहै नहीं परमान जु गिन्ती मास की ॥
द्वादश के सौ बरष सहस के लाख ही ।
चाहे जब लग रखै सांच यह साख ही ॥
गुप्त महा यह जान कठिन है साधना ।
कोटिन में कोइ एक करे आराधना ॥
देखा देखी बहुत मनुष याको लगै ।
कोई चढ़ै प्रमान घने मध्यम थके ॥

चरनदास समुझाय कह्यो शुकदेव ही ।
शनैः शनैः कर पाय लाभ यह देहही ॥

दोहा

मूल बंध अरु खेचरी , मुद्रा ही को जान ।
दोनों के साधे बिना , अपान न होवे प्रान ॥

चौपाई

मुद्रा खेचरि कहौं बखाने , जाको कोटि में कोई जाने .
सकलशिरोमणियोगमँझारी , ज्यों देहिन्ह में छत्तर धारी .
शीश फूल ज्यों गहने माहीं , या बिन तारी लागे नाहीं .
साधन कर २ जीभ बढ़ावे , ब्रह्म रंध्र ताईं सो लावे .
उरे ताल वा ठौर कहावे , रसना सों तहँ बंध लगावे .
जासों पवन न सरकन पावे , श्रवण नैन जो बाट रुकावे .
प्राण वायु बाहिर नहिं आवे , मुख नाशा हो निकस न जावे .
शुकदेव कहै चरनदास बताऊं , आगे मूल बंध समझाऊं .

इति खेचरी

---

## अथ मूलबंध लिख्यते

दोहा

मूलबंध जानो यही , एड़ी गुदा लगाव ।
थक दहिनी बामी कभी, सिद्धासन ठहराव ॥

चौपाई

मूलबंध जा कारण दीजे , सो मैं कहौं सबै सुन लीजे .
अधार चक्र सों पवन उठावे , स्वाधिष्ठानहिं के ढिग लावे .

दाहिनी ओर जु ताहि फिरावे, ऐसे तीन लपेट लगावे।
सीधी हो ऊपर को धावे, मन पूरक चक्कर में आवे।
शनै शनै पुनि ताहि चढ़ावे, चक्कर २ में पहुँचावे।
छुवि चक्कर के ऊपर ताईं, ब्रह्म रंध्र के लावे ठाईं।
ऐसे षट चक्कर कों शोधै, प्राण वायु को यों परमोधै।
वायु अपान जु यां तक आवे, प्राण वायु हो सहज समावे।
कह शुकदेव चरणहीदासा, सहज शून्य में करे निवासा।

## अथ अष्ट प्रकार के कुंभक

शिष्यो वाच

### दोहा

प्राणायाम की युक्ति सब, गुरु तुम दई सुनाय।
सो लेकर हिय में धरी, तद्यपि दीन्ह भुलाय॥
चरणदास के शीश पर, तुमहीं गुरु शुकदेव।
कुंभक अष्ट प्रकार के, तिन को कहिये भेव॥
लक्षण नाम स्वभाव गुण, जुदे २ समझाव।
चरणदास के मन विषे, सुनबे को अति चाव॥

गुरू बचन

अब आठों कुंभक कहौं, नाम भेद गुण रूप।
कहैं शुकदेव प्रसिद्ध हैं, योगहि माहिं अनूप॥
प्रथमहिं कुंभक ही कहौं, नाम जु सूरज भेद।
दूजे याहू को सुनो, साधे छूटे खेद॥
शीतकार अरु शीतली, पंचमी भस्त्रा का जान।
छठी भ्रामरी नाम है, नीके कर पहिचान॥
नाम मूर्छा सातवीं, अठवीं केवल होय।

रन जीता सब से बड़ी, आयु बढ़ावे सोय॥

चौपाई

पवन पूर पूरक ही कीजे, पाछें बंध जलंधर दीजे।
कुंभक रेचक के मध जानो, बंध उड़ान वही पहिचानो।
पवन जोर ही से गह लीजे, अर्ध ऊर्ध संकोच न कीजे।
मध्यम कीजे पश्चिम ताने, ब्रम्ह नाड़िका माहिं समाने।
नाड़ी पवन खेंचिये ऐसे, भरिये सब संधिन जू जैसे।
अपान वायु ही ऊपर लावे, प्राण वायु नीचे ले जावे।
जोपै यह साधन बनि आवे, योगी बूढ़ा होन न पावे।
तरुण अवस्था दीसे ऐसी, नितही रहै जानिये जैसी।

अथ सूर्य भेदन

कुंडलिया

कुंभक सूरज भेदही, पहिले देहु सुनाय।
सुख आसन कै कीजिये, अथवा वज्र लगाय॥
अथवा वज्र लगाय, पूरक दहिने स्वर कीजे।
नख शिख सेती रोक, वायु को बंध करीजे॥
बायें सेती रेचिये, धीरे २ जान।
कपाल शोधनी जानिये, चरणदास पहिचान॥
वायु किरम पीड़ा हरे, कीजे बारंबार।
कुंभक सूरज भेदनी, चरणदास हिय धार॥

अथ उज्जाई

चौपाई

अब उज्जाई कुंभक सुनिये, समुझसीखमनमाहींगुनिये।
दोइ स्वर सम कर पवन चढ़ावे, पेट कंठ लों ताहि भरावे।
ताको रोकै दृढ़ कर राखे, सहज इड़ा सों रेचक नाखे।

ऐसें जो कोइ साधन करई, रोग श्लेष्मा के सब हरई.
हृदय कंठ माहिं जो होई, कफ़ का रोग रहै नहिं कोई.
रोग जलंधर हू का भागै, भगै वायु दुख पावक जागै.
बैठत चलत पवन को भरे, यह उज्जाइ कुंभक करे.
चरणदास शुकदेव बतावे, तीजी शीत कार समझावे.

शीतकार

## दोहा

ओड जम्हाई नाशिका, लीजे खेंच जु पौन।
ताहि कछू ठहराय कें, छोड़े मुख सों जौन॥
धीरे २ रेचिये, शीस शब्द उच्चार।
सुंदर होवे तेजस्वी, अधिक रूप को धार॥
भूख प्यास व्यापे नहीं, आलस नींद न होय।
तन चेतन ही होत है, रहै उपाधि न कोय॥
जो या विधि साधन करे, योगिन में हो भूप।
शुकदेव कहै चरणदास सों, कुंभक यही अनूप॥

अथ शीतली

## चौपाई

कहो शीतली कुंभक आगे, जो कोइ करे भाग तिहि जागे.
मूल तालु जिह्वा बल सेती, प्राण वायु पीवे कर हेती.
कुंभक राखे सब तन माहीं, ढीला गात रमावे झाहीं.
नाशा सेती रेचक कीजे, एक मास में सिधि सुख लीजे.
पीवे पवन जीभ को मोर, सहजहि छोड़े नाशा ओर.
दोनों रंधर सों तज दीजे, यहि अभ्यासहिं पूरा कीजे.
ताप तिली गोला ज्वर होई, वाके तन में रहै न कोई.
देह पुरानी नव तस होय, तीन वरष साधे जो कोय.

जैसे सांप कांचुली भोई, श्वेत बार तज कारो होई.
काहू भांति दुःख नहिं व्यापै, भूख प्यास पित्त भागे आपै.

अथ भस्त्रिका

## दोहा

अब कहौं कुंभक भस्त्रिका, पित्त कफ़ बाय नशाय।
अग्नि बढ़े अभ्यास सों, तीन गांठ खुल जाय॥

## चौपाई

आसन पदम जु या बिधि करई, बाम जानु दाहिनो पग धरई.
बांया पग दाहिने पर लावे, जांघन सों दोउ हाथ मिलावे.
ग्रीवा पेट बराबर राखे. आगे सुन शुकदेवा भाखे.
मुख मूंदे रेचै नाशा सों, पूरक चपल करे श्वासा कों.
रेचक पूरक ऐसे कीजे, बारंबार तजै अरु लीजे.
जैसे खाल लुहारा भरे, रेचक पूरक आतुर करे.
करत २ जबही थक जावे, नेक ठहर दूजी बिधि लावे.
फिर पूरक सूरज सों करे, पवन उदर के माहीं भरे.
तबहि तर्जनी सों दृढ़ रोके, नाशा मध्ये धर कर जोखे.

## दोहा

कुंभक पिछली भांति कर, रेचि इड़ा सों बाय।
कफ़ पित बाय नशाय के, लेवे अग्नि बढ़ाय॥
कुंडलनी देवे जगा, यह कुंभक सुख दाय।
करे जु हित चितलाय कें, चरणदास हित लाय॥
कुंडलनी सरकाय कें, बेधै तीनों गांठ।
पंचम ऐसी भस्त्रिका, रहै न कोई आंट॥

## चौपाई

ब्रम्ह नाड़ी के छिद्रहि माहीं, रोक रही मुख दे रही झाहीं.

लाय लपेटे नाभीं ठाईं, दृढ़ ह्वै बैठी सरकै नाहीं.
सवा बिता की जाकी देही, ता में स्थित जीव सनेही.
शक्ति नागिनी यह जो कहिये, या का भेद गुरू सों लहिये.
महा अपर बल जागै नाहीं, तातें नर सब मर २ जाहीं.
कोइ इक योगी ताहि डुलावे, सुख मन बाट गगन लै जावे.
ब्रह्म रंध्र में जाय समावे, लगै समाधि बहुत सुख पावे.
जो कुछ होय सु कहि नहिं जावे, चरणदास शुकदेव सुनावे.

दोहा

शिव शक्ती इकठा भये, रहो न द्वितिया भाव ।
कुंडलनी परमोदिका, जो कोई करे उपाव ॥

शिष्यो वाच

व्यास पुत्र शुकदेव जी, कीन्ही कृपा दयाल ।
चरणदास आधीन है, समझत भयो निहाल ॥
एक बार फिर खोल कें, कुंडलनी समझाय ।
याके सबही भेद को, सुन वे को अति चाव ॥

गुरुरु वाच

फिर भी तोसों कहत हों, कुंडलनी विस्तार ।
ताके सबरे भेद ही, सुनकर हिय में धार ॥
नाभि स्थान नागिनि रहै, कुंडल शशि आकार ।
प्राणं पियारा वही है, आगे सुनो विचार ॥
कुम्भक कोई कर्म कर, देवे शक्ति जगाय ।
जैसे लागी लाठिका, नागिनि शीश उठाय ॥

चौपाई

सीख गुरू सों कुंभक साधे, नीकी विधि ताको आराधे.
पवन ठमक लग ताहि जगावे, तबै ऊर्ध को शीश उठावे.

नाभि ठौर ताका है वासा , पद्म राग मन ज्यों परकाशा.
सात लपेटे बामी जानो , तातें शक्ति कुँडलनी मानो.
नाड़ी सहस लगी हैं वाको , एपर छुटी जानिये ताको.
नाड़ी त्रै तिन में अधिकाई , इड़ा पिंगला सुष मन गाई.
तिनकेमाहिं शिरोमणि सुषमन, नालकमलजानतयोगीजन.
जा पहुंची बृम्ह रंध्ररताई , ऊर्ध कमल सात वें माहीं.
आवन जान पवन की वाटा , सकत चलन ऊरध का घाटा.
कहि शुकदेव चरण के दासा , आगे कहूं जु होय प्रकासा.

## दोहा

नागिनि सूक्ष्म जानिये , वाल सहसवां भाग ।
शुकदेव कहै आकार ही , रक्त वर्ण ज्यों नाग ॥
कुंभक होय अत्यन्त जब , तबहि ऊर्ध कों जाय ।
ब्रह्म रंध्र में आय के , घड़ी दोय ठहराय ॥
करै अमियका पान सो , पूरा होय अभ्यास ।
उड़ते देखो सिद्ध तब , वाको माहिं अकास ॥

## चौपाई

पै देखत है नैन बिनाही , चहै करै लीला उन माही.
खेचर मिल खेचर हो जावे , यह विधि शक्ति उड़न कीपावे.
अधकी ठहरे लगै समाधा , यह तो कहिये खेल अगाधा.
शिव शक्ती जहँ मेला होई , होय लीन मन उन मुनि सोई.
योग युक्ति कर याको पावे , परा शक्ति अपने वस लावे.
चाहै अर्ध ठौर ले आवे , जब चाहै ऊर्धहि ले जावे.
कबहूं हृदय मध्य ही आने , याही कों आपन पन जाने.
इच्छा करे सिद्धि की जैसी , होवे प्राप्ति बेग ही वैसी.
चहै स्थूल सूक्ष्म तन धारू , वैसा ही हो जाय सवारू.
भन शुकदेव चरणही दासा , जो कुंडलनी हृदय प्रकाशा.

दोहा

कुंडलनी परकाश ही, भौंरा एक अनूप।
सोउ प्रकाशत है जहां, शूकर कैसो रूप॥
हृदय बीच उजियार ही, होत चपल यहि भांति।
जैसें धूमर मेघ में, बिजली ही दमकाति॥

चौपाई

शुकदेव कहैं चरणदास बताऊं, और अनूठी सिद्धि सुनाऊं.
चाहै पर देही में धरऊं, अपनी काया को फिर हरऊं.
रेचक प्राणायाम प्रतापे, कुंडलिनी जो आपहि आपे.
रेचक किये बाहिरहि आवे, पर काया में जाय समावे.
स्थित होय जाय यो जानो, सदा बिराजत जैसें मानो.
ऐसे पहिली देह गिरावे, ज्यों मन के डोरा तजि जावे.
जब चाहै अपने घट माहीं, परा शक्ति ही आवे झाहीं.
काया पलट कहत है याकों, कोइ इक योगी जानत ताकों.

दोहा

चाहै तन को छोट कर, देह कल्प धरि और।
मन मानें तहँ भ्रमण कर, फिर आवे निज ठौर॥

अथ भ्रामरी कुंभक

छठी सु कुंभक भ्रामरी, सुनिये चरणहिदास।
शुकदेवा हों कहत हों, तामें करो बिलास॥
जैसें भृंगी धुन करे, यो उपजे हिय माहिं।
दोनों स्वर सों कीजिये, प्रगट सुनी ये नाहिं॥
बलसेती पूरक करे, यही शब्द सँगात।
भृंगी कैसी धुन सहित, रेचै मंद सुहात॥

या अभ्यास के किये तें, चित चंचल रह नाहिं।
योगेश्वर लीला करो, चिदानंद के माहिं॥

अथ मूर्छा

सतवीं कुंभक मूरछा, पूरक ऐसे होय।
खैंचत होवे शोरसा, मेघ धार ज्यों जोय॥
बंध जलंधर दीजिये, सहज कंठ तर जान।
रेचत वाहीं मूरछित, होय यही पहिचान॥
सुखदाई सुख की करन, कहि सोई शुकदेव।
केवल कुंभक आठमी, गुरु सों पावे भेव॥
पूरे रेचक ही सही, ये कुंभक करि लेहु।
केवल कुंभक ना सधे, तब लग यां चित देहु॥
केवल कुंभक आस धर, यह साधत सब लोग।
बल पावे बश पवन हो, और भगे तन रोग॥

अथ केवल कुंभक

आब बढ़ावे सिद्धि दे, लागै और समाध।
केवल कुंभक गुण भरी, बिन परमाण अगाध॥
केवल कुंभक जब सधे, तब ये सब रह जाय।
जैसे सूरज उदय तें, तारे सबै छुकाय॥
केवल कुंभक योग में, ज्यों नगरी में भूप।
रेचक पूरक के बिना, जैसे बांधा कूप॥
सो तुम सों पहिले कही, बिधि गति सब समझाय।
सो सुन तुम हिय में धरो, देहु नहीं बिसराय॥

चौपाई

प्रणायाम बड़ा तप सोई, या समान बल अन्य न कोई.
प्राण वायु कों यह बश लावे, मन को निश्चल कर ठहरावे.

आयुर्दा को यही बढ़ावे , तन में रोग रहन नहिं पावे ·
पाप जलावे निर्मल करई , उपजै ज्ञान तिमिर सब हरई ·
योग युक्ति की जड़ यह जानो , याहि टेक गहि करनी ठानो ·
अर्धासन सों याकों कीजे , नवो द्वार पट नीके दीजे ·
पांचो इन्द्री के रस पेलो , इड़ा पिंगला सुषमन खेलो ·
कहि शुकदेव चरण ही दासा , प्रत्याहार सुन विषय निराशा ·

इति चौथा प्राणायामांग संपूर्णम्

## अथ पंचमो प्रत्याहार अंग

### दोहा

प्रत्याहार जु पांचवां , समझाऊं पद दासु ।
शुकाचार्य वर्णन करें, नीके समझहु तासु ॥

### चौपाई

प्रत्याहार पांचवां कहिये , सो योगी को निश्चय चहिये ·
विषय ओर इन्द्री जो जावें , अपने स्वादन को ललचावें ·
तिन की ओर न जाने देई , प्रत्याहार कहावे येही ·
रोकि २ इन्द्रिन को लावे , ध्यान आतमा माहिं लगावे ·
जैसें कछुवा अंग समेटै , रंकहि शीतकाल में लेटै ·
जैसें माता पूत खिलावे , बालक वस्तुन को ललचावे ·
सर्प आग अरु शस्तर कोई , कछू और दुख दाई होई ·
तिनको बालक नेक न जाने , पकरन को दोड़े मन आने ·

### दोहा

बालक जानत है नहीं , दुख दाई है येह ।
जो पकरूंगा हाथ सों , दुख पावेगी देह ॥

माता जानत है सबै , खोटे खरे बिकार ।
राखै सुत को खैंच कर , बारंबार निहार ॥
ऐसे ही बुध ज्ञान सों , पांचहु इन्द्री रोक ।
बिषय ओर सों फेरिये, लहै न अपना भोग ॥
ज्यों २ इन को भोग दे, प्रबल होतही जाहिं ।
बिना भोग होही नहीं , वह बल रहै जो नाहिं ॥
नैन जो भोगैं रूप को , और गंध को घ्रान ।
षट रस भोगै जीभ हू , शब्दहि भोगै कान ॥
षट रस भोग न चाहिये, बाढ़ै अधिक बिकार ।
पांचो इन्द्री जानले , इनका यही अहार ॥
इनसों मिल २ मन बिगड़ , होय गया कछु और ।
इन्द्री रोके मन रुके , रहे जो अपनी ठौर ॥
ज्यों २ होवे प्राण बश , त्यों २ मन बश होय ।
ज्यों २ इन्द्री थिर रहै , बिषय जाय सब खोय ॥
तातें प्राणायाम कर , प्राणायांमहि सार ।
पहिले प्राणायाम कर, पाछे प्रत्याहार ॥

इति प्रत्याहार पंचमो अंग सम्पूर्णम्

## अथ छठा धारिना अंग

### दोहा

तत्वन की कह धारना , तिनमें करि परवेश ।
शनै शनै साधन करै , पहुंचे निर्भय देश ॥

चौपाई

पाहिले भूमि धारना कीजे, ठौर काल जा में चित दीजे.
पीत बरण चौकोर अकारो, ब्रह्म देव हैं तहां बिचारो.
प्राण लीन तहँ पांच घड़ी जो, स्थिर चित तबही होवेजो.
यासों पृथ्वी को बश करिये, यही धारना जो नित धरिये.
हिय तें ऊपर जल को जानो, कंठ तईं ताको पहिचानो.
चन्द्र फांक अरु श्वेत अकारो, हृषीकेश तहँ देव निहारो.
यहांहू पांच घड़ी सुस्थावे, प्राण लीन कर चित दे आवे.
व्यापे ना बिष काहू विधिको, शुकदेवकहैंफलजलकोसिधिको.

दोहा

ऊपर कंठ से तालु लों, पावक को सु स्थान।
लाल रंग तिरकोण है, रुद्र देवता मान॥
तहां लीन कर प्राण को, पांच घड़ी परमान।
भय व्यापे नहिं ज्वाल को, अग्नि धारना जान॥
जाके आगे वायु है, भृकुटी लों मर्याद।
मेघ वरण षट कोन है, ईश देवता साध॥
प्राण लीन तहँ कीजिये, घड़ी पांच लों तात।
पै है खेचर सिद्धि ही, तत्पद ही हो जात॥
ब्रह्म रंध्र आकाश है, बड़ा जु तत्वन माहिं।
ब्रह्म देव जी श्याम रंग, योगी वसें तहाहिं॥
लीन प्राण घड़ि पांच कर, पावे मुक्ति अनूप।
व्योम तत्व की धारना, जहां छांह नहिं धूप॥
पृथ्वी संग लकार ही, जल के संग वकार।
पावक संग रकार है, मारुत संग मकार॥
पंचम तत्व अकाश है, सब के ऊपर जान।
अक्षर जहां हकार है, श्री शुकदेव बखान॥

पहिल धारना थंभिनी, दुजी द्रावनी होय।
तिजी दाहिनी जानिये, चौथि भ्रामिनी सोय॥
पंचम नाम जु शोषनी, इन को लीजे जान।
शुकदेवा अब कहत हों, आगे और विधान॥

चौपाई

प्रथम गुरू की धारन लीजे, अपना रूप उन्हीं सा कीजे.
ऐसे ध्यान सबै सुध पावे, जैसी धारे सोइ होय जावे.
वेगी सब साधन सध आवे, आलस कायरता भग जावे.
लोक प्रलोक सभी सुख लेवे, जो गुरू को ऐसी विधि सेवे.
दूजे परमातम की धारन, मुक्ति देन अरु बंध निवारन.
धारन सों चित घनो लगावे, सिमिट सभी ओरीं सों आवे.
जो कुछ होय सो आगे आगे, टेक पकर मारग में लागे.
चरणदास शुकदेव बतावे, सती सूरमा जो मन लावे.

दोहा

प्राण वायु की धारना, परमेश्वर पहिचान।
परमातम होय जात है, जो पै रोके प्रान॥
बारह मात्रा सों चढ़ै, जहँ तक पहुंचे जाय।
बारह सौ अरु छानवे, कुंभक में ठहराय॥
यही धारना अंग है, शनै शनै कर धाय।
यातें दुगुणी ध्यान में, प्राण वायु पर वाय॥
दूना ज्ञान समाधि लौं, ध्यानहि सेती येहु।
पांच सहस अरु एक सौ, चौरासी गिन लेहु॥

इति धारना अंग

## अथ सातवां ध्यान का अंग

शिष्यो वाच

### दोहा

अंग धारना का कहूं, सो धारो चित्त माहिं।
ध्यान अंग वर्णन करूं, गह चरणन की छांह॥

गुरो वाच

चरणदास अब ध्यान सुन, कहूं तोहि समुझाय।
शुकाचार्य सुनकर समझ, करो ताहि चितलाय॥
ध्यान जु चार प्रकारके, कहूं जु उनकी रीत।
पदस्थ पिंड रूपस्थ है, चौथा रूप अतीत॥

अथ पदस्थ ध्यान

हिय पद पंकज ध्यान करि, फिर कर सारी देह।
नख शिख लों छबि निरखकर, चर्णन में चित देह॥
कै कुंभक ही कीजिये, वह प्रणाम का जाप।
मन निश्चल हो सहज में, भागे तिर विधि पाप॥
पदस्थ ध्यान या कों कहैं, करें सु जाने भेव।
पिंडस्थ ध्यान को कहत हूं, खोल खोल शुकदेव॥

अथ पिंडस्थ ध्यान

यह ब्रह्मांडहि पिंड है, या में करि करि बास।
कमलन के लखि देवता, लहो प्राप्ति को तास॥
शोधै सिगरे पिंड को, षट चक्कर को ध्यान।
शोधत २ आ चढ़ै, भँवर गुफा अस्थान॥
तिरवेणी संगम वहै, ज्योति जहां दरसाय।

सात जन्म सुध होय तब , ध्यान करे मन लाय ॥
आगें कमल हजार दल , सतगुरु ध्यान प्रधान ।
अमृत द्रवै बह कर चले , हंस करे अस्नान ॥
ऊपर तेजहि पुंज है , कोटि भानु परकाश ।
शून्य सिखर ता ऊपरे , योगी करे विलास ॥

अथ रूपस्थ ध्यान

## दोहा

रूपस्थ ध्यान को भेद सुन , कीजे मन ठहराय ।
देखै त्रिकुटी मध्य हो , निश्चल दृष्टि लगाय ॥
ध्यान किये पहिले जहां , अग्नि फूल दिखाय ।
केते दिवस न माहि पुनि, दीप जोति प्रगटाय ॥
शनै शनै आगें जहां , दीप माल दरशाय ।
फिर तारों की मालसी , दामिनि बहु दमकाय ॥
बहुत चंद्र सूरज घने , देखे कोटि अनंत ।
अणु ज्यों कर भू भर भरे , ध्यान माहि दरशन्त ॥
झिल मिल झिल मिल तेज मय, भासै सब संसार ।
तन मन उपजे सुख घना , आनँद अधिक अपार ॥
जल अथाह में डूब ज्यों , देखे दृष्टि उघार ।
जो देखे तो नीर ही , दश दिशि अपरंपार ॥
यह तो ध्यान प्रत्यत्त ही , गुरू कृपा सों होय ।
कह शुकदेव युदास मम , तन मन आलस खोय ॥

अथ रूपातीत ध्यान

## चौपाई

रूपा तीत शून्य ही जानों , ताको परब्रह्म पहिचानों.
त्रिकुटी परें शून्य स्थाना , सो कहिये ये पद निर्वाना.

चिदा नंद ताको हिय जानो , वाही में मन ही को सानो .
आठ पहर तहँ चित्त लगावो , याके करने सों लय पावो .
ज्यों अकाश में पक्षी धावे , धावत धावत दृष्टि न आवे .
बहुरि अचानक दीखै आई , वहां ध्यान ऐसा हो जाई .
इसपरमशून्यकाअधिकाध्याना, सब ध्यानन में है परधाना .
सो योगी यह लहै ठिकाना , सायुज्यमुक्तिहोजायनिदाना.

दोहा

या सों लगै समाधि ही , निद्रा कहिये योग ।
ध्याता होवे लीन तब , रहै न त्रिपुटी रोग ॥
सप्तम कहा जु ध्यान ही , अष्टम कहों समाधि ।
ज्ञान ध्यान जहँ बीसरे , तहां न विद्या वादि ॥

इति ध्यान अंग

---
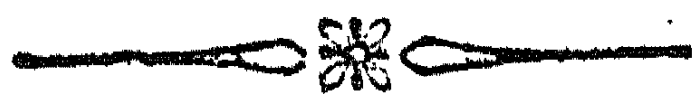
## अथ आठवां समाधि अंग वर्णन

### अष्ट पदी व छन्द

अष्टमी कहों समाधि, सब लक्षण वर्णन करूं;
तोकों सब समझाय , तेरी दुबिधा मैं हरूं .
जब लगै समाधि , योगी आनंद लहै ;
योग भया सिध जानि , क्रिया कोई ना रहै .
मिल ध्याता अरू ध्यान, एक होवे जहां ;
दूजा रहै न भाव , मुक्ति बरते तहां .
निर उपाधि निर वेद , ऐसा वह देश है ;
कर्म भर्म अरू धर्म , नहीं कोइ लेश है .

आपा रहै न कोय , सकल आशा गलै ;
चिन्ता का दुख नाहिं , बासना सब जलै .
पांच विषय जहँ नाहिं, नहीं गुन तीन ही ;
होवे ब्रम्ह स्वरूप , जीवता छीण ही .
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति , होय सब हीन ही ;
चौथे पद को पाय , होय जहँ लीन ही .
ऐसे कह शुकदेव , सुन चरणदास ही ;
यह निरद्वन्द्व समाधि , करो जहँ वासही .

**दोहा**

जहां कछू गम ना रहै , विद्या वेद न बादि ।
ऋद्धि सिद्धि गत मिट सुखहि, ऐसी शून्य समाधि ॥

**अष्ट पदी**

तहां किये परवेश , रहै न अकार ही ;
रूप नाम गुण क्रिया , यही शाका रही .
पाप पुण्य दुख सुख्य , तहां नहिं पाइये ;
मत मारग कुल धर्म , न देत दिखाइये .
भूख प्यास अरु ऊष्ण, तहां नहिं शीत है ;
हर्ष शोक नहिं नेक , बैर नहिं प्रीत है .
इन्द्री मन नहिं रहत , गलित हो जात है ;
सिध साधक गुरु शिष्य , न भाव रहात है .
उड़ गण चंद्र न सूर्य , दिवस नहिं रात है ;
तत्पद ईश्वर ब्रम्ह , न जानो जात है .
जैसे जल में नीर , छीर में छीर ही ;
आसि पद में ज्यों जीव , नीर में नीर ही .
अहं मिटे मिट जाय , जु आपा थोक ही ;
ना परमातमातम , बंधन मोक्ष ही .

ऐसे कह शुकदेव , यो होय समाधि में ;
वैसे ही हो जाय , जोई था आदि में .

दोहा

हुता आदि परमात्मा , बिच उठ लगा विकार ।
मिल समाधि निर्मल भये , लहै रूप तत सार ॥

अष्ट पदी

जहां आत्मा देव , न सेवक सेव है ;
स्वामी भी वह नाहिं , न पूजा देव है .
नवधा नेम न प्रेम , ज्ञान नहिं ध्यान है ;
जड़ चेतन कछु नाहिं, सुरत नहिं ज्ञान है .
विधि निषेध नहिं भेद, अन्यो वित रेकना ;
निश्चय अरु व्योहार , कछू तामें न वहां .
उत्तम मध्यम भाव , न शुभ्य अशुभ्य है ;
सिंह सर्प डर नाहिं , न वामें शस्त्र भै .
पावक दग्ध न करे, डुबावे जल नहीं ;
वहां न पहुंचे काल , न ज्वाला है तहीं .
ऐसा भवन समाधि , भाग सों पाइये ;
तज के जगत उपाधि , तहां मठ छाइये .
यत्न करे लख माहिं , और सब भेष ही ;
कोटिन में कोइ होय , समाधी एक ही .
वां तक पहुंचे जाय , सोई सिध साध है ;
कह शुकदेव पुकार , जु कठिन समाधि है .

दोहा

ज्ञान भक्ति अरु जोग की, रीति कठिन है साध।
गुरु मिलै तो सुगम है , नाहीं कठिन अगाध ॥

अथ भक्त समाधि

सब इन्द्रिन कों रोकि कर, हरि चरणन को ध्यान।
बुद्धि रहै सुरति हू रहै, तो समाधि मति जान ॥
ध्याता बिसरे ध्यान में, ध्यान होय लै देहु।
बुद्धि लीन सुध ना रहै, पद समाधि लखि लेहु।

अथ योग समाध

आसन प्राणायाम करि, पवन पंथ गहि लेय।
षट चक्कर को छेद कर, ध्यान शून्य मन देय ॥
आप बिसारे ध्यान में, रहै सुरति नहिं नाद।
लीन होय किरिया रहित, लागे योग समाधि ॥

अथ ज्ञान समाधि

जब लग तत बिचार कर, कहै एक अरू दोय.
ब्रम्ह बरत बाधे रहै, जहां लग ध्यानहि होय.
मैं तू यह वह भूलकरि, रहै जु सहज स्वभाव.
आपा देह विसार के, ज्ञान समाधि लगाय.
ज्ञान रहित ज्ञातारहित, ज्ञेय रहित जब जान.
लगी कभी छूटे नहीं, यह समाधि विज्ञान.
पूछे आठों अंग जे, योग पंथ की बात.
शुकदेव कहें तामें चलो, गुरू कृपा लै साथ.

इति अष्टांग जोग

## अथ षट कर्मी हठ योग वर्णन

### शिष्यो वाच

अष्टांग योग वर्णन कियो, मोहि भई पहिचान.
छहों कर्म हठ योग के, बरनो कृपा निधान.

गुरो वाच

पहिले ये सब साधिये, काया होवे शुद्धि.
रोग न लागै देह को, उज्वल होवे बुद्धि.

### चौपाई

अरु साधे षट कर्म बताऊं, तिनके तो कों नाम सुनाऊं.
नेती धोती बस्ती करिये, कुंजर कर्म रोग सब हरिये.
नवल किये भागै तन बाधा, देख २ जिन गुर सों साधा.
त्राटक कर्म दृष्टि ठहरावे, पलक २ सों लगन न पावे.

अथ नेती कर्म

### कुंडलिया

मिही जु सूत मँगाय के, मोटी बाटे डोर।
ऊपर मोम रमाय कें, साधे उठ कर भोर.॥
साधे उठकर भोर, डेढ़ बीता की कीजे।
ताको सीधी करे, हाथ अपने में लीजे॥
नाशा रंधर मेलके, खेंचे अंगुर दोय।
फेर विलोवन कीजिये, नेती कहिये सोय॥

### दोहा

कान नाक अरू दांत को, रोग न व्यापे कोय।
उज्वल होवें नयन ही, नित नेती कर सोय॥

अथ धोती कर्म

### दोहा

धोती कर्म यासों कहैं, पट्टी सोला हाथ।
कुष्ट अठारा होंय नहिं, करे जु नित्य प्रभात ॥

### कुंडलिया

चौड़ी अंगुल चार की, मिहीं वस्त्र की होय।
जलमें भेय निचोर करि, निगल कंठ सों सोय ॥
निगल कंठ सों सोय, सिरा वाहिर रह जावे।
फेर निकासे ताहि, पित्त कफ दोउ न आवे ॥
काया होवे शुद्ध ही, भागै कफ पित रोग।
चरणदास इस धर्म को, साधैं योगी लोग ॥

अथ बस्ती कर्म

### कुंडलिया

तीजे बस्ती कर्म ही, कहों सुनो चितलाय।
किरिया करे गणेश ही, कुंजी तहां लगाय ॥
कुंजी तहां लगाय, मूल को धोवन कीजे।
पस्सारन संकोच, सुरति दे यह कर लीजे ॥
नीर गुदा सों खेंचके, थाम्हैं उदर मझार।
कछू डोल अरु बैठ के, फिर दे ताहि उतार ॥
यह जो बस्ती कर्म है, गुरु विन पावे नाहिं।
लिंग गुदा के रोग जो, गर्मी के नश जाहिं ॥

### अथ गज कर्म

गज कर्म यह जानिये, पिये पेट भर नीर;
फेर युक्ति सों काढ़िये, रोग न भवै शरीर;

अथ न्योली कर्म

## चौपाई

न्योली पद्मासन सों करई, दोनों कर घुटनों पर धरई.
पेट पीठ बराबर होये, वाम दहिन नहिं लेय विलोये.
मैल पेट में रहन न पावे, वायु अपान तासु वश आवे.
ताप तिली गोला अरु शूला, होन न पावें नेक न भूला.
जो गुरु करिके ताहि दिखावे, न्यौली कर्म सुगम कर पावे.
और उदर के रोग कहावें, सो भी वे रहने नहिं पावें.

अथ त्राटक कर्म

## चौपाई

त्राटक कर्म टकटकी लागे, पलक २ सों मिले न ताके.
नैन उघारहिं जो नित रहैं, होय दृष्टि थिर शुक देव कहैं.
आंख उलट त्रिकुटी में आनो, येही त्राटक कर्म बखानो.
जेतो ध्यान नैन का होई, चरणदास पूरन हो सोई.

## दोहा

कपाल भांति अरु धौंकनी, बांधी संख पखाल।
चार कर्म ये और हैं, इन्द्री छहों के नाल॥

इति त्राटक कर्म

## अथ खेचरी लीला

शिष्यो वाच

### दोहा

एक बार फिर भी कहो, मुद्रा पांच दयाल।
मोसे रंक अधीन पै, होकर बहुत कृपाल॥

गुरू बचन

### अष्ट पदी

आगे मुद्रा तोहि, कहैं समझाइयां.
फिर भी कहौं अब खोल, सुनो चित लाइयां;
पहिले मुद्रा खेचरी, की साधन भनूं.
जैसे आगे करी, सभी ऋषि मुनि जनूं;
तातें जलके कुल्ले कर, जब गाइये.
ता पीछे चौ वस्त को, चूर लगाइये;
जीभ हाथ सों पकड़, मर्दन छीलन करे.
दोहन तानन करे, बहुरि दशनन धरे;
फिर कर चाल ताहि, छेदनहिं कीजिये.
तन्तू ज्यों कट जाय, यतन सोइ कीजिये;
ब्रम्ह रंध्र को धोयके, मल निरवारिये.
बाम अँगूठा ऊपर, काग को धारिये;
सहस सहज सरकाय, जु आगे लाइये.
यह सब साधन कठिन, गुरू सों पाइये;
दो अंगुली की कुची सों, कर मेलना.
जिभ्या उलटी राखि, जु नित प्रति खेलना;

यह उपाय षट मास , करे तज मानही .
रसना यो बढ़ जाय , चढ़ै अस्थान ही ;

दोहा

चार काज यासों सरैं , फल दायक बहु भांति ।
योग माहि बड़ि भूप हैं , अधिकी ताकी क्रांति ॥

अष्ठ पदी

एक जु प्राणायाम , जीभ सों कीजिये .
दुजे बंध उडियान , याही सो दीजिये ;
तीजे करकर ध्यान , निरख जहां ज्योतिही .
चौथे अमृत पिय खुले , जहां सों तहीं ;
खैंचे त्रिकुटी पाट , सहज अरु फेरिये .
द्रवै सुधारस नीर , जहां मन घेरिये ;
अमृत ही के स्वाद , कौन वखानई .
जो कोई अँचवै हंस , सोई गुण जानई ;
दिन दिन पलटे देह , रकत दूधा भवै .
बीस वर्ष अरु , चार माहिं ऐसा हवे ;
इच्छा चारी होय , बरष छत्तीस में .
सब लोकन में जाय , जु अपनी शक्ति तें .

दोहा

जेते बिष व्यापे नहीं , रोग न दहै शरीर ।
जो कोइ पीवे युक्ति सों , काम धेनु का चीर ॥
भूख प्यास अरु नींद के , रहै न तीनों लेव ।
नाद बिंद गुटका बधै , कहैं यही शुकदेव ॥
तीन महीने चार का , बालक गोदी माय ।
ना वह पीवे नीरही, अन्न नहीं वह खाय ॥

वह तौ जीवे दूध सों, बाकौ वही जु काम।
लगा रहै माता कुचन, बिसरै एक न याम॥
अमृत पीवे योगिया, ऐसा चरणहिदास।
पहरहु वह छांड़े नहीं, काम धेनु का पास॥
ऐसे धारे तो बने, सुधा रसीला संत।
दिब काया हो जाय जब, धनि कह कमला कंत॥
आठ पहर लागा रहे, पीवै कै कर ध्यान।
मैं कहा जैसाही बनै, परसै पद निर्बान॥
भेद गुरू से पै लहै, और छिपावे वाहि।
जो जो फल याके अधिक, होय परापत ताहि॥
योगेश्वर अरु देवता, मुनी ऋषीश्वर जान।
रखवारे याके घने, करन न देवे ध्यान॥
टेक गहो तो जा पिये, और करे वहां ध्यान।
यती सती अरु गुरु मुखी, जाकी ऐसी आन॥
बड़ी जु मुद्रा खेचरी, मुख में याको वास।
कही जु मैं शुकदेव ने, जानहु चरणहिदास॥

अथ भूचरी मुद्रा

दूजी मुद्रा भूचरी, नाशा जाको बास।
प्राण अपान जुदी २, इक कर चरणहिदास॥
जित की तित रख प्राण को, वा घर लाय अपान।
ताहि मिलावे युक्ति सों, करि २ संयम ध्यान॥
जब वह जीते पवन को, मन चंचल ठहराय।
गगन चढ़न की आश हो, कह शुकदेव सुनाय॥
गुदा द्वार बंध दीजिये, एड़ी पांव लगाय।
आसन सिद्ध जु कीजिये, मन पवना बश लाय॥

अपान वायु तब बश भवै, ऊरध खेंच चलाय।
शनै शनै जाकर चढ़े, प्राण वायु हो जाय॥

अथ चाचरी मुद्रा

तीजी मुद्रा चाचरी, जाकी नैनन वास।
नाशा आगे दृष्टि को, राखो मन धर आश॥

**चौपाई**

अंगुल चार नाशिका आगे, चित अस्थिर कर देखन लागे.
खोलै पांच तत्व कर कोई, मन अरु पवन जहां थिर होई.
फिर वां ते नाशा पर आवे, अचल टकटकी तहां लगावे.
जहँ बहुतक अचरज दरशावे, विभौ स्वर्ग की आगे आवे.
तित सों पलटे त्रिकुटी माहीं, ध्यान करे कहुं अंत न जाहीं.
दीरघ तारा सा परकाशै, उदय होय सूरज ज्यों भासै.
चित चेतन दोउ मेला करे, लै उपजे अरु दुविधा हरे.
यही चाचरी मुद्रा जानो, चरणदास याको पहिचानो.

अथ अगोचरी मुद्रा

कहौ अगोचरी चौथी मुद्रा, तामें सुख पावे योगिन्द्रा.
या मुद्रा का सर्व न वासा, शुकदेव कहैं सुन चरणहिदासा.

**दोहा**

ज्ञान सुरति दोऊ कहौ, पलट अगोचरि जाय।
शब्द अनाहद में रतें, मन इन्द्री थिर पाय॥

अथ उनमुनी मुद्रा

मुद्रा पंचम उनमुनी, द्वार दशम में वास।
सिद्ध समाधि मिलै जहां, दग्ध होय सब आश॥
आनंदहि आनँद जहां, तहां न काल कलेश।

तीनों गुण नहिं पाइये, वहां न माया लेश ॥
जीवातमा परमातमा, होय जाय वा ठौर ।
ध्याता ध्यान न ध्येय जहँ, तहां न किरिया और॥

अथ महाबंध साधन विधि

चौपाई

महा बंध तोहिं पहिल बताऊं, पाछे मूल बंध समझाऊं.
बायों पाव सियन गहि दीजे, मूल द्वार एड़ी बंध कीजे.
दहिनी जंघ जंघ पर लावे, गउ मुख आसन नाम कहावे.
राखै चिबुक हिये पर लाय, पवन राह पूरब को जाय.
ध्यान त्रिकुटी संयम करे, प्राण वायु हिरदे में धरे.
महा बंध ऐसे कर साधे, गुरू प्रताप याहि आराधे.
बिना पुरुष त्रिया को जानो, बंध बिना मुद्रा पहिचानो.
निष्फल जाय पुरुष बिन नारी, महा बंध बिन मुद्रा धारी.
माहिं कंठ के ध्यान लगावे, सुरति निरति कर वहि ठहरावे.

दोहा

महा बंध आस्थित करे, सो योगी हो जाय ।
पवन पंथ मुद्रित करे, ध्यान कंठ में लाय ॥

चौपाई

शशिघर को सूरज घर लावे, रेचक पूरक पवन फिरावे.
महां बंध करे अभ्यासा, अमृत अँचवै बुझै पियासा.
जरा मृतु देही नहिं आवे, महा बंध तीनों गुण पावे.
जठर अग्नि परचै बहु भारी, निसि दिन माहिं करे अठवारी.
पहर पहर में पवन भरीजे, प्रथम अल्प अभ्यास करीजे.
त्रिया सेवन तापन नहिं करे, काम अग्नि काया नहिं जरे.

## दोहा

ऐसी बिधि साधे पवन , योग पंथ धर पाय ।
पहर पीछला उन यतन , आयुर्दा बढ़ जाय ॥

अथ मूल बंध

मूल बंध अब कहत हों , अपान वायु बश होय .
ऊपर को खेचन करे , मिले प्राण में सोय ;
कमल कमल सीधे भवे , नाभि तले है राह .
आगे मारग सुगम हो , पहुंचे योगी नाह ;

चौपाई

मूल बंध गुण ऐसा होई , वायु अधोगत जाय न कोई .
रेता ऊरध यासों सधे , दिन दिन आब सबाई वधे .
यासों कारज सब वनि आवे , रोग रक्त के सभी नशावें .
योगी पहिले यह आराधे , अपान वायु को नीके साधे .
अबमैं मूल बंध बतलाऊं , ज्यों का ज्यों साधन दिखलाऊं .
गुदा वास याको तुम जानों , गुदा द्वार बंध देना ठानो .
बामें पांव की एड़ी सेती , मूल द्वार रोके केहि हेती .
ऊरध ही को खेंचन कीजे , शुक देव कहै नीके सुन लीजे .
अरु कवहूं मन ऐसी धरे , आसन पद्मा कर को करे .
कपडे की इक गेंद वनावे , गुदा मध्य कस बंध लगावे .
यो भी वायु सधै यह भांती , जो पै लगा रहै दिन राती .
पवन तलें की ऊपर आवै , प्राण अपान सहज मिल जावे .
नाद विंद मिल जावें दोऊ , एक वरष साधे जो कोऊ .
योग माहिं ये भी पर धाना , बुड्ढा देह पलट हो ज्वाना .
जठर अग्नि बाढै अधिकाय , जो चाहे तो बहुतहि खाय .
सुन चरणदास कहै सुख देव , जो गुरु पूरा देवे भेव .

अथ जलंधर बंध

## दोहा

मूल बंध तोसों कहा, गुण हू सब समझाय।
बंध जलंधर कहत हों, सुनहु श्रवण कर चाय ॥

## चौपाई

तीजा बंध जलंधर जानो, कंठ बास जाको पहिचानो.
ग्रीवा लटक चिबुक हियलावे, कंठ पवन रोके परिचावे.
हृदय प्राण पूर्ण करि रहिये, बंध जलंधर यासों कहिये.
ऊर्ध पवन नीचे को जाय, अरध पवन ऊरध को लाय.
उदर मध्य लै ताहि बिलोय, ब्रम्ह रंध्र जा पहुचे सोय.
यह बिधि ब्रह्म पंथ को धावे, सहज २ ही मध्य समावे.
जरा मरन जहँ भय नहिं व्यापै, लहै अमर पद है रह आपै.
चरणदास शुक देव बतावें, जो पै बंध उडान लगावें.

अथ उड़ान बंध

## दोहा

उडान बंध आगे कहा, जिह्वा उलट लगाय।
कान आंख मुख नाक के, स्वर सब बन्ध कराय ॥
यह सुबंध महिमा अधिक, लागे वज्र किवाड़।
सात द्वार की बाट हो, निकसे नाहिं बयार ॥
पांचो मुद्रा बंध सब, दिखलाया यह देश।
शुक देव कहैं रनजीत सुन, और कहूं उपदेश ॥

इति उडान बंध

## अष्ट पदी

चौरासी ही जान, जु आसन योग के.
सिद्ध पद्म तिन माहिं, बडे जो थोक के;
बहु नारिन के माहिं, जु नौ नारी भनी.
तिन में सुषमन जान, बड़ी गुरु सों सुनी;
तीन बंध के मांहिं, मूल को जानिये.
मुद्रा ही में बड़ी, खेचरी मानिये;
वायुन में परधान, प्राण को देखिये.
सब कुंभक हू मांहि, केवल बड़ लेखिये;
बाणी चारों मांहिं, पराही गाइये.
चार अवस्था माहिं, तुरिय बड़ पाइये;
परम शून्य को ध्यान, परे सों है परे.
याकी सम कोई नाहिं, ध्यान तिन को धरे;
अजपा ही के जाप, बराबर और ना.
शील दया सो मीत, न कोई देहमा;
पूजन में बड़ी जान, जु आतम की करे.
ज्ञान समान न पुन्य, सकल बिपदा हरे;
गुरु सा रक्षक और, नहीं कोई लोक में.
योग युक्ति सा स्वाद, नहीं कोई भोग में;
कहैं गुरू शुक देव, सुनों रनजीत ही.
बड़ी बड़ी जो गांस, खोल तुम को जु दी;

## छन्द

अमरी करतें वजरी रोके, वजरी कर तें वाई.
रोके छींक साधना करके, नाश लेय जुमुहाई;
जल संयम सों नभ को देखे, संयम नाद सोंजोती.
संयम पवन होय थिर काया, सो वस राखे मोती;

जिया बिछावे मृतक ओढ़े, बुढ्ढी होय न काया.
संयम नींद विंदु नहिं जावे, यह शुक देव वताया;
दहिन स्वर में भोजन कीजे, बायें स्वर में पानी.
दहिने सुर में अमरी रचे, देह न होय पुरानी;
दहिने स्वर में जल सों न्हावे, बाये स्वर में लंघी.
सब आसन सों सोवन कीजे, नारि न कीजे संगी
पावक सों तापन नहिं कीजे, जो तापे तो नैना.
भोजन गर्म न खट्टा खावे, फटे फिरे नहिं मैंना;

दोहा

गर्म्मी ही के रोग में, चंद चला रवि बन्द।
शीत रोग सूरज चला, शसिघर राखे वन्द॥
तीन रोज कै पांच दिन, कै दिन राखे सात।
रोग देख जैसी करे, होय निरोगी गात॥
सूरज रात चलाइये, दिवस चलावे चन्द।
पवन फिर ऊधा वधे, श्वासा चले जो मन्द॥
कान आंख अरु दांत के, सब ही रोग भजांहिं।
श्याम वार नहिं श्वेत हों. करे जो नीके भांहि॥
रूई पुरानी बहुत ही, दिन को दहिने राख।
बायें राखे रात कों, खोल साधना भाखि॥
शीत उष्ण व्यापे नहीं, विष नहिं व्यापिक होय।
बीस बर्ष साधन किये, रहे विकार न कोय॥
बासा ग्रिष्ट न खाइये, सुत्तम कर आहार।
जल बहुतक पीवे नहीं, सपरस करे न नार॥
तन मन साधे बचन ही, पाप न लागन देह।
शुक देव कहैं चरणदास सुन, अधिकी साधन येह॥
सब जीवन सुख दीजिये, सब में मीठा बोल।

आतम पूजा कीजिये, पूजा यही अमोल ॥
दया पहुप चंदन नवन, धूप दीप है मन्न ।
भांति भांति नैवेद सों, करो देव परसन्न ॥
जो कोइ आवे राजसी, देव बड़ाई ताहि ।
जाकों देखो तामसी, करो नमनता वाहि ॥
जो कोई होवे सात्विकी, मिलो ताहि तजि मान ।
ग्रन्थि खोल चरचा करो, लेहु तत्व मत छान ॥
सबही को परसन्न कर, आप रहो परसन्न ।
वास लहो हरि धाम ही, यहां कहैं सब धन्न ॥
राजस तामस सात्विकी, क्षेत्र तीन ही भांति ।
क्षेत्रज्ञ आतम देव है, सब की सहिये क्रांति ॥
सब में देखे आप कों, सब कों अपने मांहिं ।
पावे जीवन मुक्ति को, यामें संशय नाहिं ॥
सब में देखै आतमा, अपने में कर ध्यान ।
यही ज्ञान ब्रह्मज्ञान है, येही है विज्ञान ॥
अहंकार मिटे से ब्रम्ह हो, परमातम निर्वान ।
शुकदेवा हीं कहत हों, चरणदास हिय आन ॥
जो तें पूछा सो कहा, भेद कहा सब खोल ।
और तेरे हिय में कछू, सकुच खोल कर बोल ॥

शिष्यो वाच

पना लखि किरपा करी, समझाया बहु भांति ।
ाग ओर ते गुरू जी, हिय में आई शांति ॥
ारी क्या अस्तुति करों, मोपै कही न जाय ।
ी शक्ति नहिं जीभ को, महिमा कहै बनाय ॥
रपा करी अनाथ पै, तुम हो दीनानाथ ।
ह्थ जोर मांगूं यही, मम सिर तुमरा हाथ ॥

मोसे रंक गरीब की , तुम गहि पकरी बांह ।
भव बूड़त राखो जु मोहि, चरण कमल की छांह ॥
आपहि तुम किरपा करी , मैं कित लहता तोहि ।
तुम को पाऊं ढूंढ़कर , इतनी शक्ति न मोहि ॥
व्यास पुत्र शुकदेव तुम , जग माहीं विख्यात ।
तुम दरशन दुर्लभ महा, मनुषन को न दिखात ॥
बड़े भाग मेरे जगे , पूरबले परताप ।
कृपा भई गोपाल की, आय मिले तुम आप ॥
चरणदास अपनो कियो , दया परम संतोष ।
बैठ करोंगो ध्यान ही , अब कछु रहौ न शोक ॥
चलत फिरत ह्यां आइया , तुम भर दीन्हों मोहि ।
नयन प्राण तन मन सभी , देखत अर्पे तोहि ॥
चाह मिटी सब सुख भये , रहा न दुख का मूल ।
चाहूं तो चाहूं यही , तुव चरणन की धूल ॥

सद्गुरो वाच

योग तपस्या कीजिये , सकल कामना त्याग ।
ताका फल मत चाहियो , तजिये दोषरु राग ॥
अष्ट सिद्धि जो पै मिले , नेक न कीजे नेह ।
धारि हृदय परमातमा , त्यागे रहिये देह ॥
जेती जगकी वस्तु हैं , तामें चित मत लाय ।
सावधान रहियो सदा , तोहि दियो समझाय ॥
बार २ तोसों कहों , या मत दीजो चित्त ।
सिद्ध स्वर्ग फल कामना , तज कीजो हरि मित्त ॥
जो कीजो हरि हेत ही , ये हो चरणहिदास ।
भक्ति योग अरु शुभ करम , नीकी ठौर निवास ॥

शिष्यो वाच

ऐसे ही अब करूंगा, तुव चरणन परताप।
अष्ट सिद्धि समझो चहूं, वर्णन कीजे आप॥
समझो तो त्यागो उन्हें, करवायो पहिचान।
कहा नाम लक्षण कहा, कौन रहै अस्थान॥

## अथ अष्ट सिद्धि के नाम

गुरू बचन

शुकदेव कहैं वर्णन करूं, अष्ट सिद्धि के नांव।
लक्षण गुण सबही सहित, नीके तोहि समझांव॥

### चौपाई

प्रथमहि अणिमा सिद्धि कहावे, चाहै तो छोटा हो जावे.
अणु समान छिप जावे सोई, ऐसी कला जु पावे कोई.
दूजी महिमा लक्षण येता, चाहै बड़ा होय वह जेता.
तीजे लघिमा वह कहलावे, पुहुप तुल्य हलका हो जावे.
चौथी गरिमा कहीं बिचारी, चाहे जितना होवे भारी.
पांचवीं प्राप्ति सिद्धि कहावे, जित चाहै तित ही हो आवे.
छठवीं पराकाम गुण धरई, शक्ति पाय चाहे सो करई.
सतवीं सिद्धि ईशता रानी, सब को आज्ञा माहि चलानी.

### दोहा

सिद्धि आठवीं वश करन, कहें गुरू शुकदेव।
चाहे जिस को वश करे, अपना ही कर लेव॥
चरणदास ये सिधि कहीं, समझ देख मन माहिं।
जो हैं जनुआं राम के, इन में उरझें नाहिं॥

## चौपाई

योग किये आठों सिधि पावे, कै भोगै कै चित न लगावे.
योग किये मन जीता जावे, पलटै जीव ब्रम्ह गति पावे.
योगेश्वर चाहे सो करे, भरी रितावे रीती भरे.
योगेश्वर ईश्वर हो जाई, दिन २ वाढ़े कला सवाई.
तजिये भोग योगही करिये, त्रैगुण परे ध्यानही धरिये.
चौथे पद में करे निवासा, काहू विधि का रहै न सांसा.
योग करे सोई परवीना, श्री शुकदेव प्रगट कहि दीना.

## दोहा

पोथी मांही देख के, करे जु कोई योग।
तन छीजे सिधि ना भवे, देही आवे रोग॥
देख २ गुरु सों करे, ले आज्ञा रह संग।
सिद्ध होंय साधन सवै, कछू न आवे भंग॥
योग तपस्या में बड़ा, पहुंचावे हरि पास।
जन्म मरण विपदा मिटे, रहै न कोई आश॥

### शिष्यो वाच

मैं समझी जानी सवै, सूझ भई हिय माहिं।
कृपा करी जो २ कहा, ताकों बिसरूं नाहिं॥
व्यास पुत्र श्री जनक जे, जै जै श्री शुकदेव।
जै जै यह सुख ता रहे, समझायो करि हेव॥
हियो हुलस आनँद भयो, रोम २ भयो चैन।
भये पवित्तर कान ये, सुन सुन तुम्हरे बैन॥

## छप्पय

गुरु ब्रम्हा गुरु विष्णु जू, गुरु देवन के देव;
सर्व सिद्धि फल देन गुरु, तुमहीं मुक्ति करेव;

गुरु खेवट तुम होय, करौ भौ सागर पारी ;
जीव ब्रम्ह कर देत, हरौ तुम व्याधा सारी .
श्री शुक देव दयाल गुरु, चरणदास के शीस पर :
कृपा करो अपनो कियो, सबही विधि सों हाथ धरि.

इति श्री गुर शिष्य संवाद अष्टांग योग संपूर्णम्

## अथ श्री चरणदास कृत भाषा अथर्वण वेद की प्रथम हंसनाद उपनिषद लिख्यते

### दोहा

बंदत श्री शुकदेव कों, उनको हिय में लाय ।
छिपो भेद परगट कियो, परमारथ के दाय ॥
संस्कृत से भाषा करी, ताको यह दृष्टांत ।
खोल खोल सबही समझ, छूटे मनकी भ्रांत ॥
ब्राम्हण क्षत्री वैश्य अरु, शूद्रहू चाहे होय ।
वह पीवेगा हेत करि, बहु प्यासा जो कोय ॥
संस्किरत था कूप सम, भाषा नीर निकास ।
प्याऊं जिज्ञासीन को, तिनकी भागै प्यास ॥
पूजे ऋषि मुनि देवता, पूजे इन्दर भूप ।
पूजा सबही सृष्टि को, देखा हरि के रूप ॥
सर्वत्तर प्रभु देख कर, सब को शीस नवाय ।
उपनिषदें जो वेद की, प्रगटहि कही बनाय ॥

### अष्ट पदी

प्रथम प्रगट ये करी, छिपे ही भेद की ;
हंस नाद यह नाम, अथर्वन वेद की .

गोतम ऋषि कर चाव, ऋषीश्वर पै गये ;
संत सुजान जो नाव, बहुत आदर किये .
गोतम अस्तुति करी, बहुत ही प्रीति सों ;
फिर पूछी यह बात, जु लघुता रीति सों .
परमेश्वर पहिचान, मोहि समझाइये ;
मुक्ति होन को पंथ, सबै जु दिखाइये .
होकर बहुत प्रसन्न, ऋषीश्वर बोलिया ;
गौरा अरु महादेव की, चरचा खोलिया .
सब देवन को देव, महादेव है सही ;
उपनिषदें जो वेद की, गौरा सों कही .
सो मैं तुम सों कहूं, प्रीति के भाव सों ;
तुमहूं नीके सुनौ, अधिक ही चाव सों .
गुप्त महा यह भेद, हिये में राखिये ;
जो जड़ मूरख होय, न वा सों भाखिये .

## दोहा

हरि भक्ता अरु गुरु मुखी, तप करने की आश ।
सत संगी सांचा यती, तेहि दे चरणनदास ॥

## अष्ट पदी

अब मैं कहूं सम्हाल, सुरति यहां दीजिये ;
यह तो अचरज कथा, श्रवण सुन लीजिये .
यही श्वास से हंस, जु आवै जाय है ;
पूरा सतगुर मिले तो, भेद बताय है .
जो कोई याको समझ, और कर ध्यान ही ;
ऋद्धि सिद्धि सुख होय, जु उपजे ज्ञान ही
अंत मुक्ति ही होय, अभय पद में रहै ;
बहुरि जन्म नहिं होय, परम आनँद लहै .

अब मैं बरनूं हंस, परम अरु हंस ही;
जिहिं समझे होय ब्रम्ह, जाय सब संशाही.
हंस हंस जो मंत्र, अर्थ पहिचानिये;
वह मैं हूं यों कहे, निश्चय कर जानिये.
यह मंतर सब माहिं, सदा ही भर रहो;
कोटिन में कोइ जान, ध्यान सोइ धर रहो.
जैसे काठ में आग, तिलों में तेल है;
तैसे सब घट माहिं, इसी का मेल है.

### दोहा

दूध मांहिं ज्यों घीव है, महँदी माहीं रंग।
यत्न विना निकसे नहीं, चरणदास सो ढंग॥
जो जाने या भेद को, और करे परवेश।
सो अविनाशी होत है, छूटे सकल कलेश॥

### अष्ट पदी

तन मथने का यत्न, कहूं अब जानिये;
ज्यों निकसे ततसार, विलोवन ठानिये.
पहिला चक्कर जान, मूल द्वारे विषे;
जितही पांव की एड़, सोई बंध दे रखे.
मूल चक्र सो खेंच, अपान चलाइये;
दूजे चक्कर पास, जु आन फिराइये.
दहिने ओर सो तीन, लपेटे दीजिये;
तीजे चक्कर माहिं, गमन फिर कीजिये.
चौथे चक्कर माहिं, पवन जो लाइये;
वहुरि पांचवें, चक्कर में पहुंचाइये.
षष्टम चक्कर माहि, जु ताहिं चढ़ाइये;
सो त्रिकुटी के मध्य, तहां ठहराइये.

रोकै त्रिकुटी माहिं, प्राणही वायु को ;
षट चक्कर कों छेद, चढ़ै जब धावहू .
अपान वायु चढ़ जाय, वही अस्थान है ;
प्राणवायु होय जाय, साधु कोइ जान है .
रोकै प्राण वायु, त्रिकुटी मध्य ही ;
ओंकार कर ध्यान, शीश मग ध्यावही .
यह तो ऊंचा ध्यान, जु अधिक अनूप है ;
चरणहिदास होय जु, ब्रम्ह स्वरूप है .

## दोहा

नाम ब्रम्ह का है नहीं, है तो ओंकार ।
जाने आपन को वही, मैं हूं तत्व अपार ॥

## अष्ट पदी

अनहद शब्द अपार, दूरतें दूर है ।
चेतन निर्मल शुद्ध, देह भर पूर है ॥
ताहि निरच्छर जान, और निष्काम है ।
परमातम तिहि मान, वही परब्रम्ह है ॥
हृदय कमल के माहिं, ध्यान सोऽहं करे ।
वाको अजपा जान, सुरति मन लै धरे ॥
बिना जपे जप होय, जु सांची बातही ।
सहस इक्कीस अरु छैसो, जहां दिन रातही ॥
याको किये तें ध्यान, होत है ब्रम्ह ही ।
धारे तेज अपार, जाय सब भर्म ही ॥
वा पटतर कोई नाहिं, जु योंही जानिये ।
चंद सूरज अरू सृष्टि, मांहि पहिचानिये ॥
सो वह तेज अपार, आप को मानिये ।
निश्चय अरु यह सांच, जु मन में आनिये ॥

जब लग याही भेद को, जाना था नहीं।
जीवातम अरु हंस, हो रहा था तहीं॥
जबहिं अगोचर भेद, जु मन माहीं लया।
परमातम परहंस, रूप निश्चय भया॥

दोहा

जो जीवातम सों भया, परमातम अरु ब्रम्ह।
बाकी सर्भार को करे, पाई परे न गम्म॥
पहुंचे ना वा तेज को, कोटि कोटिही भान।
चरणदास कोइ जानि है, जाको निर्मल ज्ञान॥

अष्ट पदी

परम जोति को भास, जोई नर होत है।
जिन मन जीता होय, लगाया गोत है॥
जिन मन जीता नाहिं, विषम आशा वहे;
हृदय कमल दल आठ, वहीं फिरता रहे.
अष्ट पांखुरी जान, जु आठों अंग ही;
वेही दिशा हैं आठ, करे मन भंग ही.
पखरी पूर्व दिशा, जबै मन जात है;
तब इच्छा हिय पुराय, करन की आत है.
आग्नेय दिशा पखुरी पै, जब जावे मना;
ऊंघ नींद अरु आलस, आवे घना.
दक्षिणहिं जु दिशा, पखुरी पर राजई;
उपजै बहुतक क्रोध, कठोरता साजई.
दिशा जु नैऋत पखुरी, पै मन रंज ही;
पाप करन की उपजे, हिये तरंग ही.
पश्चिम दिशा की पखुरी, पै मन आ रहै;
होवे खुशी प्रफुल्ल, जु लीला को चहै.

### दोहा

वायव्य दिशा जु पांखुरी , जब मन पहुंचे जाय ।
हलन चलन उपजे हिये , बैठे देह उठाय ॥

### अष्ट पदी

उत्तर दिशा की पखुरी, पर मन आवई ;
मिथुन करन की चाह हिये उपजावई .
ईशान दिशा की पांखुरी, पै मन आवे जभी;
दान करन की चाह, अधिक उपजे तभी .
हृदय कमल के बीच , जबै मन जा रहे ;
उपजे त्याग वैराग , तजन जग को कहे .
हृदय कमल के छेद के, बाहिर मन फिरतही;
आसै पासै जान , होय जाग्रत नही .
हृदय कमल के घेर , के मध जातही ;
जब आवत है स्वप्न , जहां बहु भांति ही .
धान बराबर छेद , तामें मन जात है ;
होय सबै गुण लीन, सुषुप्ति आत है .
हृदय कमल को छोड़ , होत जब न्यारही ;
तुरिया में मन जात , जु तत्व अपार ही .
यौ जीव आतमा जान , जु अनहद लीन हो;
सो परमातम होय , जीवतो जाय खोयहो .

### दोहा

अजपाही के जाप को , सिद्ध भयो जब जान।
पहुंचे या स्थान ही, रहे न दूजा ज्ञान ॥
यह जो सब कुछ मैं कहो, हिय में जाना जाय।
ताही को पहचानिये , चरणदास चितलाय॥

## अष्ट पदी

कैसे अनहद उठे, हिये अस्थान सों;
यह जीवातम सुने, हृदय बल ध्यान सों.
दश प्रकार के नाद, सुने भिन भिन्न ही;
सो उपनिषद ही माहिं, कहे सब चिन्ह ही.
पहिले ऐसे होय, चिड़ी ज्यों चिंकला;
एक बार कह चिन्ह, सुनो सोइ सुरति ला.
ऐसे ही दो बार, जु दूजी जानिये;
चिन्ह चिन्ह ही होत, ताहि पहिचानिये.
छुद्र घंटिका तीसरी, चौथी शंख ज्यों;
पंचम ऐसी जान, बजत है बीन त्यों.
छठी बजे ज्यों ताल, सातवीं बांसुरी;
अठवें शब्द मृदंग, लगै मन गांसरी.
नवें नफीरी नाद, जु दशवें सिद्ध है;
बादर कैसी गर्ज, हद्द दहंद है.
करते में अभ्यास, जु नादें सब खुले;
जैसे बटाऊ चलत, नगर नौ मग मिले.
दशवें पहुंचे जाय, नमो बिसराइया;
रहन किया वा देश, जहां घर छाइया.
ऐसे ही नौ छोड़, नाद दशवां गहै;
बादल कैसी गर्ज, जहां मन दै रहै.
वाको छोड़े नाहिं, सदा रह लीन ही;
यह जो अनहद सार, जाने परवीन ही.
याकी भांति कहो, जु मन में आनियो;
गौरा सो शिव कहो, सांच कर जानियो.

## दोहा

चरणदास ने अब कही, जुदी २ दश नाद।
वही प्राप्ति को लहै गो, जो कोइ साधे साध॥

## अष्ट पदी

पहिलि परीक्षा जान, जु अनहद नाद की;
सब रोमावलि उठैं, जु वाके गात की.
अरु दूजी जब सुने, नाद चित लावई;
सब तन अंगन माहिं, आलसै छावई.
तीजे अनहद नाद, सुने जितही जुटे;
सब अंगन हिय माहिं, प्रेम पीड़ा उठे.
चौथी सुन जब नाद, परीक्षा पावई;
तब सिर घूमन लगे, अमल जिमि खावही.
पांचवीं उठे जब नाद, सुने तामें पगे;
वाके शीस सो जान, अमी उतरन लगे.
छठवीं उठे जब नाद, सुरति वामें धरे;
कंठ सों नीचे उतर, अमी पीवन करे.
सप्तम खुलै जब नाद, बिना श्रवनन सुने;
अन्तरयामी होय, लखै सब के मने.
दूर दूर के बचन, सुने कोई कहै;
होय पर की दृष्टि, छिप्यो कछू ना रहै.
अठवीं परीक्षा जान, प्राप्ति जोपे बनै;
सब माहीं सब ठौर, नाद अनहद सुनै.
है सब ही के माहिं, बैन समझै सुने;
यह समझै अरु सुने, ताहि नीके गुने.

### दोहा

खुले नवीं जब नाद ही , लक्षण यह पहिचान ।
सूक्षम हो जित तित गवन , करे धरे जो ध्यान ॥
काहू ही की दृष्टि सों , चहै अगोचर होन ।
होय सके दीखे नहीं , वह सब देखे जोन ॥
जैसे सुर सब को लखें , उन्हें न देखे कोय ।
रनजीत कहै अस्थूल हो , चाहै सूक्षम होय ॥

### अष्ट पदी

दसमा खुलै जब नाद , परे सोऽहं परे ;
पारब्रम्ह हो जाय , ध्यान ताको करे .
ध्यानी का मन लीन्ह , होय अनहद सुने ;
आप अनाहद होय , बासना सब भुने .
पाप पुण्य छुट जाय , दोऊ फल ना रहै ;
होय परम कल्याण , जु त्रैगुण ना गहै .
होवे बोध स्वरूप , तेज हो जात है ;
अटक रहै नहिं कोय , सब ठांव समात है .
अज अवि नाशी शुद्ध , पवित्तर सत्य ही ;
होवे आनँद रूप , परम जो तत्व ही .
निर्बिकार निर लेव , और निर्वानि ही ;
आनंद सब को देत , आप को जानही .
या ध्यानी को नाम , कहो ओंकार है ;
सब नामन में बड़ा , कियो जु बिचार है .
याको ऐसे माने कि , वह जो है मैंही हूं ;
रूप नाम गुण जाने , कि यह सब बाहीं सूं

### दोहा

करते अनहद ध्यान ही , ब्रम्ह रूप हो जाय ।
चरणदास यों कहत है , व्याधि सबै मिट जाय

इति श्री हंस नाद उपनिषद संपूर्ण

जोपै करे विचार और गुरु सों लहै ।
वाकी गहनी गहै और रहनी रहै ॥

इति हंस

---

## अथ तत्व योग नाम उपनिषद तीसरी लिख्यते

### अष्ट पदी

तीजी अरु जो कहौं , अर्थर्वन बेद की ;
तत्व योग जिहि नाम , गुप्त ही भेद की .
अपने शिष्य सों कहा , जु प्रजापती ने ;
योग सार मैं कहौं , जु पावे तत्व ने .
योगेश्वर को लाभ होय , जाके किये ;
पढ़े पाप भग जाय , सुने राखे हिये .
निश्चय होवे मुक्ति , यही तू जानियो ;
चौथे पद लह बास , सांच कर मानियो .
बड़ा योगेश्वर विष्णु , अधिक तप ज्ञान है ;
जाकी माया गह , नहीं परमान है .
योगी करके योग , सु जोति निहारई ;
दीपक कैसी लोय , लखै होय पारही .
सो वह बिष्णु सरूप , सबन के मांहि है ;

घट २ में भर पूर, खाली कोइ नाहिं है.
ऐसी जोति को छोड़, और मन लावई;
वे नर भोंदू जान, जु कूर कहावई.

दोहा

दूध पिया जिन कुचन सों, उन कों मल सुख लेत।
जन्म खोय खाली चले, नारिन सों करि हेत॥

अष्ट पदी

जिस द्वारे सें निकस, जनम जग में लिया;
ताही में परवेश, करन को मन किया.
वा वही नारि को रूप, जु तासों मा कही;
लगे भार्या कहन, जु अपने सँग लई.
याही पुरुष स्वरूप को, कहते बापही;
फिर लागे पुत्तर कहन, वाही को आपही.
वही पुत्र जो जग में, पिता कहावई;
सोई पुत्तर भया बड़ो, अति चावही.
जैसे कूप का रहट, लोटे रीते भरे;
बस्तु एक ही जान, कभी ऊपर तरे.
यही भर्म अज्ञान सो, आशा ही दहै;
बहु लोकन के माहिं, सदा भरमत रहै.
अब कह वही उपाव, जगत सों ज्यों छुटै;
आवा गमन को फंद, शीघ्र जासों कटै.
जासों भरम नाही रहै, थिर होय के;
पावे निज अस्थान, विपति सब खोय के.
ओंकार बड़ नाम है, हृदय ध्यान करे;
शुक देव कहै चरणदाससों, सबही व्याधिटरे.

## अष्ट पदी

ओंकार के अक्षर, कहिये तीन हैं;
अकार बकार मकार, जानें परवीन हैं.
तीनों अक्षर माहिं, तीनों ही थोक ही;
पहिले अक्षर में, जु रहै भूलो कही.
दूजे अक्षर बीच, जानों आकाशही;
तीजे अक्षर माहिं, बैकुंठ निवासही.
तीनों अक्षर माहिं, जु तीनों वेद हैं;
ऋग्वेद यघुर अरु सामही, जो भेद हैं.
तीनो अक्षर माहिं, तिंह जो देव हैं;
ब्रह्मा विष्णु महेश, बड़े जो भेव हैं.
तीन प्रकार की अग्नि, तीन अक्षर महीं;
एक अग्नि यह जान, दीखे प्रत्यक्ष ही.
दूजे अग्नि प्रचंड, सूर्य की भासई;
तीजी अग्नि सब माहिं, जठर परगाशई.
तीनों गुण तिन माहिं, समझ जानो यही;
रजगुण तमगुण, और सतो गुण हैं सही.

## दोहा

अक्षर ओंकार के, जिनका चौथा भाग।
अर्ध मात्रा बोलिये, ऊपर बिंदी लाग॥

## अष्ट पदी

जो कोइ याको जपे, समझ अरु धाय है;
ऊपर कही जो बस्तु, सबन को पाय है.
अक्षर साढ़े तीन, प्रणव के माहिं ही;
सब बस्ते वा मांहि, बाहर कछु नाहिं ही.
ऐसे रहत वा माहिं, पहुप में गंध ज्यों;

जैसे तिल में तेल, दूध में घीव ज्यों.
जैसे पाहन माहिं, जु कनक बताइये;
ऐसे ओंकार में, सब को पाइये.
वाही को कर ध्यान, परम पद को लहै;
वेद पुरानन माहिं, सास्त्र योंही कहै.
अब प्रणव कौ ध्यान, जु देहों बताय कें;
सबही याकी सूझ, कहूं समझाय के.
हिरदय ही के माहिं, जो कमल पहिचानिये;
ऊपर कों है नाल, नीचे मुख जानिये.
वाही के छिद्र बीच, रहत मन भूप है;
कहे चरणहिदास, जु भेद अनूप है.

दोहा

अक्षर ओंकार का, पहिला है आकार।
ताहि कहे सों होत है, हिरदय शुद्ध बिचार॥

अष्ट पदी

दूजो जपे उकार, कमल विकसे कली;
शनै शनै खुल जांय, बसे तामें अली.
तीजा जपै मकार, प्रगट होय नादही;
सुन २ आनँद होय, जु परम अगाधही.
अर्ध मात्रा बिंदी, सदा थिर जानिये;
हलन चलन कछु नाहिं, यही चित आनिये
वामें मन होय लीन, जोति हो जात है
सो निर्मल अरु शुद्ध, बिल्लौर की भांति है.
सूरज कैसी किरण, महा उज्वल वही;
जोइ करे यह ध्यान, पुरुष पावे सही.
सब में ज्योति स्वरूप, सकल भरपूर है;

निकट निकट सों निकट, दूर सों दूर है.
जो इस ही का ध्यान, हिये कियो जापना;
तो कर मस्तक माहिं, होय परापना.
शीश में जब सिध होय, रोक नौ द्वार ही;
निकसन देवे वायु, न काहू बारही.

दोहा

दो पग एड़ी बांधिये, नीचे के दो द्वार।
दोउ अँगूठे हाथ के, रोके श्रवननद्वार॥

अष्ट पदी

तर्जनी अंगुली दोउ, दृगन पर दीजिये;
मध्यमा सों दोउ नाक, छेद बंध कीजिये.
अनामिका दोउ हाथ की, और कनिष्ठिका;
होंठन को बंध करे, जु नीके पुष्ठिका.
नाशा के दोउ छेद, एक ही जित भये;
दोउ भौहन के बीच, चरणदासहि कहे.
निश्चय ताहि व नार, सदेह की जानिये;
वाही की तो ओर, दृष्टि को तानिये.
महा कुंभक यह नाम, इसी बिधि साधिये;
ध्यान किये होय मुक्ति, यही आराधिये.
इन्द्रियन ही के मारग को, जो बंध करे;
वायु बिना घट माहिं, जैसे दीपक बरे.
होय घना परगाश, इसी ही देह में;
इसी ध्यान परताप, मिले या गेह में.
पावे सुध चैतन्य, किये इस योगही;
कर्मन की हो नाश, मिटे मन रोगही.

### दोहा

ऊपनिषद पूरी भई , नाम योग ही तत्व ।
अंग अथर्वन वेद का, चरणदास ही सत्व ॥

इति तत्व योग उपनिषद सम्पूर्णम्

---

## अथ योग सिखा उपनिषद चौथी लिख्यते

### दोहा

योग शिखा चौथी कहों , तामें अद्भुत ध्यान ।
परजापति ऐसी कहै , शिष्य सुनो दे कान ॥

### अष्ट पदी

यामें अद्भुत राह , बड़े ही ज्ञान की ;
कांपन लागे देह , कठिन सुध ध्यान की .
जब आवे मन माँहि , मोह तन ना रहे ;
पाँचन ही की आग, नहीं हिय में दहे .
वाकी विधि अब कहों , सभी सुन लीजिये ;
बैठ इकान्तहि ठौर , जु आसन कीजिये.
आसन पद्म लगाय , या सुख आसन करो ;
सीधो राखो मेर , नैन नाशा धरो .
दोउ पावन के साथ , जु हाथ मिलाइये ;
सब स्वादन सों रोक , जु मन को लाइये .
प्रणव ही का जाप , जु मन में राखिये ;
इस बिन और उपाव , सबन को नाखिये .
जाका ओं नाम , ध्यान ताका करे ;
आठ पहर संग्राम , बिना खांड़े लरे :

देह यही अस्थूल, बड़ा घर जानिये ;
तामें दीरघ थंभ, एक पहिचानिये .

दोहा

अरु यामें नौ द्वार हैं, छोटे थंभ हैं तीन ।
पांच देवता तिहिं विषे, लहै साध परबीन ॥
यह जो घर मैंने कहा, सोइ मनुष्य की देह ।
कहैं गुरु शुकदेव जी, चरणदास सुन लेह ॥

अष्ट पदी

एक बड़ा जो थंभ, मेरु ही डंड है ;
सोई पीठ का हाड़, जासों सब मंड है .
अरु वाही के बीच, नाड़ी सुषमन भली ;
सब नारिन सिर मौर, जोगी माने रली .
नौ द्वारे अब कहों, तिन्हें पहचानिये ;
दो श्रवन दो आंख, भली विधि जानिये .
नाशा छिद्दर दोय, जो मुख का एक है ;
लिंग गुदा दो जान, नमो का लेख है .
तीन जु छोटे थंभ, तीनों गुण ही कहे ;
सतगुण रजगुण, और तमो गुण ही लहे.
पांच देवता कहे, सो पांचों प्राण हैं ;
प्राण अपान अरु व्यान, उद्यान समान हैं.
ऐसे मन्दिर माहिं, हृदय में छेद हैं ;
तामें सूरज मन्दिर, अचरज भेद हैं .
ताकी बड़ी है ज्योति, किरण उजियार है
पूरा योगी होय, सो ताहि निहार है .

दोहा

जोति मई मन्दिर लखै, हृदय कमल में होय।
तामें दीखे और इक, दीवे कैसी लोय॥

अष्ट पदी

दीपक कैसी ज्योति, मानो ऊपर चले;
रहे आपनहि ठौर, भांति ऐसी लहे.
वाही जोत को जानो, ब्रम्ह स्वरूप ही;
यही समझ के ध्यान करे, जु अनूपही.
योगी करे जु ध्यान, यही हिय माह ही;
अंत समय तन छूट, ऊपर को जाय ही.
सूरज ही का मंदिर, जावे वेध ही;
सुख मरग सों जाय, शीस को छेद ही.
सायुज्य मुक्ति को जाय, प्राप्त होय ही:
कोटिन माहिं लहै, जु विरला कोय ही.
सब जोतिन की जोति, बड़ी जो जोत है;
ताको पाये होय, एक ही गोत है.
आलस सों दुर भाग, ध्यान ना कर सके;
तौ दिन में तिरकाल, पाठ करने लगे.

दोहा

प्रात काल अरु मध्य में, संध्या ही की बार।
उप निषदहि तीनों समय, पढ़े विचार विचार॥
कर्म कटें जम ही डटे, चौरासी हट जाय।
देही पावे मनुष की, पूरा गुरु मिल जाय॥
फिर पावे यह ध्यान ही, पीछे कहा जु खोल।
जावे परमहि धाम को, छूटे सब झक झोल॥
थोड़ा सा यह ध्यान ही, मैं समझाया तोहि।

परजा पति शिष सों कहे , बड़ा जु निश्चय मोहिं ॥
यह पदवी मोकों मिली , इसी ध्यान परताप ।
जीवन मुक्ता ही रहों , छूटे आप अरु धाप ॥
निश्चल हो या ध्यान को , करे जु कोई और ।
जग छूटे आपा मिटे , पावे निरभय ठौर ॥
आनँद ही आनँद जहां , अब बिन काल कलेश ।
चरणदास या ध्यान सों , पावे ऐसा देश ॥
बहु लोकन में जन्मधर , पाप मिटा नहिं सूर ।
चरणदास इस ध्यान सों , सबै होत हैं दूर ॥
दूर करन दुख जगत के , आन उपाव न होय ।
योगी को या ध्यान सम , और बस्तु नहिं कोय ॥
उपनिषद चौथी यहीं , भई समापित येह ।
चरणदास कह पांचमी , हित चित कै सुन लेह ॥

इति योग सिखा उपनिषद संपूर्ण

---

## अथ लिख्यते चरणदास कृत छप्पय कवित्त

### छप्पै

श्री व्यास को पुत्र , तासु को दास कहाऊं .
सदा रहौं हरि शरण , और ना शीस नवाऊं .
साधुन सों यह चहों , मैं यह बात दृढ़ावो .
माया जाल संसार , तासु सों वेग छुड़ावो .
एहो श्री ब्रजनाथ विनय , सुन लीजिये .
चरणदास को भक्ति , कृपाकर दीजिये . १
गुरु ईश्वर गुरु ईश , रीझ गुरु राम वतावें .

गुरु काटें यम फांस, विपति सब अघे नशावें .
गुरु देवन के देव, भेव ब्रम्हादि लखावें .
गुरु भवसागर तार, पार वह लोक बसावें .
चरणदास यह जानके, सत संगति हरि को भजो .
सुखदेव चरण चित लायके, सो झूठ कान दुविधा तजो. २
चरण शुद्ध जब होहिं, साधू के मग को धावे .
हस्त शुद्ध तब होहिं, दोउकर शीस नवावे .
नैंन शुद्ध तब होहिं, साधु के दरशन पावे .
रसना शुद्ध तब होय, राम गुण मुख सों गावे .
चरणदास सब शुद्ध होय, जब चरण परस गुरुदेव के
वे आतम तत्व विचार कर, दरशन अलख अभेव के. ३

दोहा

दुख मेटन सुख के करन, चरणदास वे साध ।
दाता ज्ञान विज्ञान के, देवै मता अगाध ॥
साध मुक्ति नहिं चहत हैं, सिद्ध ना चाहत साध ।
स्वर्ग लोक नहिं चहत हैं, जिन का मता अगाध ॥

चौपाई

इड़ा पिंगला सुख मन धारो, आसन वज्र नागिनी टारो .

अष्ट पदी

द्वादस अंगुल हो, बेध षट चक्कर लीजे ;
जब बाजे अनहद तूर, जहां मन निजकर दीजे .

चौपाई

खेचरी मुद्रा त्रकुटी आवे, अमृत पिये परम सुख पावे .
मेरु डंड को प्राण चलायो, शून्यशिकर जब नगरी पावो .
जा नगरी में चंदन भान, पहुंचे साधू चतुर सुजान .

जहांजातिपांतिनामनहिंनाता, श्वेतअरुश्यामपीतनहींराता.
योग यज्ञ तप जहां न दाना, तीरथ व्रत जहाँ नहींनन्हाना.
क्रिया कर्म जहां नहिं पूजा, मैं तू नहीं एक नहिं दूजा.
जहां दिवसअरुसांझन राता, एकहि ब्रम्ह अखंड विधाना.

दोहा

चरणदास राम की घाटी, पहुंचे गुरु मति शूरा।
ओछी बुद्धि बाद बहु ठाने, करनी करे सो पूरा॥

छप्पय

बैठ गुफा के मध्य, योग की युक्ति विचारे.
आय अकेलो रहै, और ना मनुष निहारे.
चार वार नित करे, जाय ओम् आराधे.
सूक्ष्म करे अहार, ओम रोपत लो साधे.
आसन पदम लगाय के, सीधौ राखे मेर.
ठोढ़ी हिये लगाइये, पलक झांप करि हेर.

दोहा

कुंभक आठ प्रकार के, तिन में उत्तम येक।
केवल कुंभक जानिये, ताकों साध विशेष॥
त्रिकुटी में तीरथ अगम, तिर वेनी जिहिनाम।
न्हाय योग की युक्ति सों, पूरन हो सब काम॥
रनजीत कहै तहाँ न्हाइये, त्रिकुटी तीरथ धाम।
नित परवी जहाँ होत है, भजन करौ निह काम॥

चौपाई

जा तीरथ कों पवन न लागे, जा तीरथ में जन अनुरागे.
जा तीरथ में रतन अनेका, पूरे गुरु सों मिल मिल देखा.
वा तीरथ में जो कोई न्हावे, भव सागर में बहुरि न आवे.

जहाँ चंद्र सूर्य नहिं तारे, गुरु गम पहुंचे अति मतवारे.
जा तीरथ का वँधा जु नीर, उज्जल निर्मल गहिर गम्हीर.
ब्रम्हा विष्णु जहां तिर देवा, योग युक्ति में लावे सोवा.
वारह मास दामिनी दमके, सोन पटीला जुगनू झमके.
रन जीत मीत जहां वासा कीजे, नित अस्नान महा सुख लीजे.

छप्पय

अमरी वजरी साध, बायु सरने नहिं पावे.
द्वादश अंगुल प्राण, सुरति दे ताहिं घटावे.
मौंन गहै नित रहै, अल्प सूक्षम सो वोले.
एक वार आहार जम्हाई, कबहु न खोले.
बांध सुजाय दृढ़ छींक को, अनहद धुन अति गाजई.
भन चरणदास शुक देव वल, सु योग युक्ति इमि साजई.

दोहा

मन पवना बश कीजिये, ज्ञान युक्ति सों रोक।
सुरत बांध भीतर धसे, सूझै काया लोक॥
मन हिरदे में रहत है, पवन नाभि के माहिं।
इन्दर रोके ये रुके, और कछू विधि नाहिं॥

छप्पय

सूक्षम करे अहार, जीत धरनी जब लेई.
नीर जीत जब लेय, विंदु जाने नहिं देई.
मोह लोभ जब तजै, अग्नि को जीत मिलावे.
पवन जीत जब लेय, गगन को बांधि चलावे.
अरु हर्ष सोग सम कर गिने, पांच जीत ऐकै करे.
भन चरणदास साधन गहे, होय प्रकाश कारज सरे.

## दोहा

गगन मध्य में कमल है, बाजत अनहद तूर ।
दल हजार को कमल है, पहुंचे गुरु मति शूर ॥
गगन मँडल के कमल में, सतगुरु ध्यान निहार ।
चरणदास शुकदेव कह, परसे मिटे विकार ॥
सहस्र दल के कमल में, रूप अगम अपार ।
सोऽहं सोऽहं जाप सो, सहजै होत हजार ॥

## छप्पय

नौ नाड़ी की खेंच, पवन लै उर में दीजे ।
बज्जर ताला लाय, द्वार नौ बंध करीजे ॥
तीनों बंध लगाय, अस्थिर अनहद आराधे ।
सुरति निरति का काम, राह चल गगन अगाधे ॥
शून्य सिखर दृढ़ चढ़े, तहां जाय आसन करे ।
भन चरणदास तारी लगै, सो राम दरश कलिमल हरे ॥

## छप्पय

चौथा पद निर्वान, धाम बेगम पुर कहिये ;
गुण अतीत तहँ राम, नृपति नयनन सुख लहिये .
अद्वैत रूप अखंड, मंड मंडल बहु बंका ;
जहां काल नहिं जाय, शब्द अति उठे निशंका .
निज पारब्रम्ह चौरी रची, शिव सहित शक्ति फेरी करें;
भन चरणदास चारों मुक्ति सों, हाथ जोर पाइन परें .
मूल कमल में खेल, पिया को देखन चलिये ;
उलट वेध षट चक्कर, जा सतवें सों मिलिये .
प्राण अपान मिलाय, राह पच्छी की लीजे ;
बंक नाल कर शुद्ध, प्राण लै तामें दीजे .
मेरु डंड चढ़ जाय जब, लोक २ की गम पड़े ;

भन चरणदास ब्रम्हंड में, ब्रम्ह दरशी दर्शन करे.

### दोहा

चरणदास यह बिधि कही, चढ़ने को आकाश।
सोधि सोधि साधू अगम, पूरण ब्रह्म बिलास॥

### छप्पय

दल असंख को कमल, रूप जहँ सत्य बिराजे;
भानु अनंत प्रकाश, जहां अनहद धुनि गाजे.
सुन्दर छबि अति हंस, संत जनु आगे ठाढ़े;
तहां पहुंच कोइ सूर, बीर निशान जो गाड़े.
कमल मध्य जो तख्त है, शोभा अपार वरणों कहा;
कहैं चरणदास उस तखतपुर, आदि पुरुष अद्भुत महा.
छत्र फिरत नित रहत, चँवर ढोरत जहँ हंसा;
जहां दर्श कर शिष्य, मिटे युग युग का संसा.
आवा गवन होय रहित, मरन जीवन नहिं होई;
आन मिलै जब चार, मुक्ति कहियत है सोई.
जहं अमर लोक लीला अमर, फल अनेक तहँ पावई;
भन चरणदास सुख वल सों, चौथा पद इमि गावई.
जहां चंद नहिं सूर्य, जहां नहिं जग मग तारे;
जहां नहीं त्रैदेव, त्रिगुण माया नहिं लारे.
जहां बेद नहिं भेद, जहां नहिं योग यज्ञ तप;
जहां पवन नहिं धरन, अग्नि नहिं जहां गगन अप.
अरु जहां रात नहिं दिवस है, पाप पुन्य नहिं व्यापई;
आदि अंत अरू मध्य है, कह चरणदास ब्रह्म आपई.
जहां काल नहिं ज्वाल, भर्म नहिं तिमिर उजारा;
जहां राग नहिं दोष, जहां नहिं कर्म अचारा.
जहां काम नहिं क्रोध, लोभ नहिं मोह न रेशा;

जहां मित्र नहिं शत्रु , जहां नहिं देश विदेशा .
चरणदास इक ब्रम्है , और न दूजा कोइ तहां ;
भया जीव सो ब्रम्ह जब , योग युक्ति पहुंचे जहां .
जहां आतम देव अभेव , शिव कबहूं न करावे ;
इच्छा दोय न द्रोह , कर्म ना भर्म सतावे .
जहां जाप थाप नहिं आप , जहां नहिं रूप न रेषा ;
जासु जाति नहिं पांति , नारि नहिं पुरुष बिशेषा.
अरु पारब्रम्ह पूरन सदा , है अखंड नहिं खंडिता ;
भन चरणदास तारी लगै , सो शून्य सिखर में मंडिता.
ब्राह्मण सो जो ब्रम्ह पहिचाने, बाहर जाता भीतर आने;
पांचो बशकर झूठ न भाखे , दया जनेउ हृदय में राखे.
आतम विद्या पढ़े पढ़ावे , परमातम का ध्यान लगावे ;
काम क्रोध मद लोभ न होई, चरणदास कह ब्राह्मण सोई.
हतो आप में आप , सृष्टि नहिं देत दिखाई ;
ज्यों पाला जल मांह, धरन पर लीक लिखाई .
भांड़े माटी माहिं , कनक में भूषण राजे ;
तरुवर वीरज माहिं, माहिं फल फूल बिराजे .
गुण रूप नाव सब ब्रम्ह में, ओंकार तासों भई;
चरणदास शुकदेव सो , वही ब्रम्ह माया वही .
पांच तत्व तिहि माहिं, तीन गुण जुदे न होई;
चित बुधि इन्द्री तहां , पाप अरु पुण्य समोई .
बिष अमृत तिहि माहिं , भूत अरु देव मुनीश्वर ;
फूल शूल तिहिं माहिं , जमुन औतार ऋषीश्वर .
चरणदास शुकदेव भज , ये सब दूर सें दृष्ट अब ;
निराकार निर्गुण कहत , भूले भटके लोग सब .

## कवित्त

जैसे जल में जल कुंभ बसे, जल भीतर बाहर पूर रहो है.
जैसे जल में जल पाल बंधो, जब फूट गयो जल आप भयौ है.
ऐसे जग में वह व्याप रहौ, किनहूं कर लोचन नाहिं गहौ है.
भन चरणदास दुई दूर करो, सगरो जग एकहि डोर गहो है.
जैसे पट मैल को संग कियौ, जुगयौ सब सेंत भयो तन कारो.
श्याम स्वरूप अकाश भयो, जब धूम धुंआं जु भयो अति भारो.
माया पिशाच को संग कियो, जब जीव भयो करता करतारो.
शुक देव कहै दुइ दूर करो, चरणदास सभी इक सूत निहारो.

दीसत न वार पार, पूर रहो जगत सार;
ऐसोही अटल नेक, टारो न टरत है.
ताको तो नाहिं नाश, ठौर २ रहो भाश;
जैसे रहै पुहुप वास, पास ही रहत है.
लोचन रहौ समाय, वेद हू सकै न गाय;
पुस्तक लिखो न जाय, जारो न जरत है.
शुकदेव जी की दया, चरणदास को प्रकाश भयो;
जैसे में खोय जाय, पायो ना परत है.
कई कोटि दुर्गा, जहां हाथ जोरे रहैं;
कई कोटि शिभूं, जहां ध्यान लगावें.
कई कोटि ब्रम्हा जहां, खड़े अस्तुति करें;
शेष नारद नाहिं पार पावें, बेद यशही करें.
भेद कछू ना लहैं, पंथ की बात बे भी बतावें;
चरणहि दास की आस, जित ही रहैं.
कोटि तेंतीस जहां, शीस नावें;
रामहि देव अरु, राम देबल भयो.
रामहि रामहि की, करें पूजा;

रामही धर्म अरु, भर्म भये.
रामही रामही ज्ञान, अज्ञान सूझा;
रामही एक अनेक है, रामही रामही परगट भयो अरु गूझा.
चरणदास शुकदेव सब, रामही राम है;
सो धन निश्चय, किया नहिं दूजा.

ब्रम्ह ही आदि अरु ब्रम्ह ही मध्य है, ब्रम्ह ही अंत को बेद गावै.
ब्रम्ह ही एक अनेक है, ब्रम्ह ही आपनी दृष्टि में आपही आवै.
होय दूजा कोई नाहिं ऐसी भई, आपही आप अनंद बढ़ावै.
ब्रम्ह शुकदेव चरणदास भी ब्रम्ह है, ब्रम्ह ही ब्रम्ह का ध्यान लावै.

अरिल्य

आतम ज्ञान बिना नहिं मुक्ता, बेद भेद सब देखा जोय.
ब्रम्हा शेष महेश पूजकर, बस वह लोक रहित नहिं सोय.
जल पाहन अरु भूत भवानी, पूज पूज भरमा सब कोय.
चरणदास ततबिरला जाने, आवा गवन दुख बहुरि न होय.

कबित्त

न ऊर्ध बाहु न अंग भभूत, न धूनी लगाय जटा सिर धारों.
न मूड़ मुड़ाय फिरों बनही बन, तीरथ बरत नहीं तन गारों.
उलट लखो घट में प्रतिबिंब, सु दीपक ज्ञान चहूं दिशि जारों.
चरणदास कहैं मनही मन में, अब तुही तुही करि तोहि पुकारों.
तारी जो लगाय देखो, बेद अर्थ पाय देखो.
भक्ति बिना अखिल ईश, किनहूं नहिं पायो है.
दसों दिशा धाय देखो, तीरथ नहाय देखो.
भटको सब प्रेम बिना, समृथ यौ गायो है.
हिमालय तन गार देखो, करवत सिर मार देखो.
ऐसी २ बातन चौरासी, भर मायो है.
भाखै चरणदास, शुकदेव के प्रताप सेती.

आदि पुरुष भक्त सेत , नंद ग्रह आयो है .
भूलत भरत कूर , फिरि इन बातन में का काज सरै गौ .
बैठ रहौ हरि मारग में , करता जो करे सोइ होय रहे गौ .
अपने हितसों जिन तोहि उपजो , अलेख बिलोक कैसी चकरे गौ .
चरणदास बिचार कहा भटके , हरिनाम बिना दुख कौन हरेगो .
वही राम वहि श्याम विधाता , वही विश्वम्भर पतित तरे .
वही विश्नु वहि कृष्ण मुरारी , वही निरंजन जोति धरे .
दीना नाथ हरी वह कहियत , हैं जो चाहै सोई वही करे .
चरणदास क्यों भट के मूरख , राम बिना दुख कौन हरे .

इति

---

अथ भक्ति सागर ग्रन्थ में कुछ २ बातों की कथा
लिख्यते चरणदास कृत

## अथ ब्रम्ह ज्ञान अंग

### दोहा

जैसे हैं शुकदेव जी , जानत है संसार
भगवत मत प्रगट कियो , जीव किये बहु पार ॥
तिन मोपै क्रिपा करी , दियो ज्ञान विज्ञान ।
सो शिष तुमसों कहत हों , छूटे सब अज्ञान ॥
शिष्य सुनों अब कहत हों , परम पुरातम ज्ञान ।
निगुरे को नहिं दीजिये , जाके तप की हानि ॥
देह मरे तू अमर है , पारब्रम्ह है सोय ।
अज्ञानी भटकत फिरे , लखेते ज्ञानी होय ॥

पांच पचीसों देह संग , गुण तीनों हैं साथ ।
घट उपाधि सो जानिये , करत रहै उत्पात ।

### अथ तामस

तामस अरु हिंसा करे , बचन चलन विपरीत .
आलस आल अरु निद्रा करे , तामस गुण की रीत .
दंभ कपट छल छिद्र वहु , खोट सबै व्योहार .
झूठ बचन एठोर है , सो तामस गुण धार .

### अथ राजस गुण

मान बड़ाई नामना , सिद्धि चहै भज राम .
भोजन नोने स्वाद के , राजस गुण के काम .
खेल तामसी राजसी , अरु सुगंध की बास .
आपन को ऊचो गिने , औरन की कर हास .

### अथ सात्विक गुण

दया क्षमा आधीनता , शीतल हिरदय धाम .
सत्य वचन गुण सात्वि की , भजन धर्म निहकाम .
दुखी न काहू को करे , दुख सुख निकट न जाय .
सम दृष्टी धीरज सदा , गुण सात्विक को पाय .
राजस सों तामस बढ़े , तामस सों बुधि नाश .
रजगुण तमगुण छोड़ के , करो सतो गुण बास .
सतगुण में मन थिर करो , कर आतम सों नेह .
आतम निरगुण जानिये , गुण इन्द्रिन संग देह .
सात्विक राजस तामसी, त्रैगुण सों संसार .
तीन पांच को नाश है , माया ब्रम्ह बिचार .
अहं तत्व ओंम् भयो , जिनते तीनों देव .
तिन के परे जु आतमा, अगम अगोचर भेव .
उपजे सो माया सभी , विनश क्षणक में जाय .

छल माया सों कहत हौं, स्वपनो सकल विहाय.
निराकार अहै अचल, निरवासी तू जीव;
निरालम्भ्य निर बैर सो, अज अबिनाशी सीव.
जिह्वा इन्द्री नीर की, नभ की इन्द्री कान;
नाशा इन्द्री धरणि की, कर बिचार पहिचान.
त्वचा सु इन्द्री वायु की, पावक इन्द्री नैंन;
इन को साधे साध जो, पद पावे सुख चैन.
चाम हाड़ नाड़ी कहौं, रोम जान अरु मास;
पृथ्वी की प्रकृती यही, अंत सबन को नाश.
रक्त बिंदु कफ तीसरो, भेद मंत्र को जान;
चरणदास प्रकृति ये, पानी से पहिचान.
निद्रा संगम आलकस, भूख प्यास जो होय;
चरणदास पांचों कही, अग्नि तत्व सों जोय.
बल करना अरु धावना, उठना अरु संकोच;
देह बढ़े सों जानिये, वायु तत्व है शोच.
काम क्रोध मोह लोभ, तत्व अकाश को भाग;
नभ की पांचो जानिये, नित न्यारो तू जान.

अंस

रोम गगन नाड़ी पवन, मास अग्नि को अंश;
त्वचा नीर सों जानिये, अस्त पृथ्वी का बंश.
कफ आकाश बिंदु सों, रक्त अग्नि सों बूझ;
मुत्तर जल रनजीत मन, भेद पृथ्वी सों सूझ.
नींद व्योम सपरस पवन, आलस अग्नि पहिचान;
प्यास नीर रनजीत मन, भूख पृथ्वी तें जान.
उठना तो आकाश सों. बल करना है वाय;
बढ़न अग्नि धावन उदक, संकोचन महिं आय.

लोभ जु नभ का अंश है, काम वाय का भाग ;
क्रोध अग्नि मोह नीर सों, भय पृथ्वी का लाग .
पांच पचीसों एक ही, इनके सकल स्वभाव ;
निर्विकार तू ब्रम्ह है, आप आप को पाव .
निराकार निर्लिप्त तू, देही जान अकार ;
आपन देही मान मत, यही ज्ञान है सार .
जले कटे काया यही, बने मिटे फिर होय ;
जीव अविनाशी नित्य है, जाने बिरला कोय .
जरा मरण धर्म देह को, भूख प्यास धर्म प्राण ;
सकल बिकल मन जानिये, स्वाद सों इन्द्री जान .
आंख नाक जिह्वा कहों, त्वचा जान अरु कान ;
पांचों इन्द्री ज्ञान है, जाने संत सुजान .
जो जो इन सों जानिये, निश्चय ना ठहराय ;
इन्द्री जान सकै नहीं, मन बुधि लहै न ताय .
गुदा लिंग मुख तीसरो, हाथ पांव लख लेह ;
पांचे इन्द्री कर्म हैं, ये भी कहिये देह .
पृथ्वी कलेजे ठौर है, मुखै जानिये द्वार ;
पीरो रंग पहिचानिये, पीवन खान अहार .
जल को बासा भाल है, लिंग जानिये द्वार ;
मिथुन कर्म आहार है, रंग सफेद निहार .
पीते में पावक रहे, नैंन जानियो द्वार ;
लाल रंग है अग्नि को, मोह लोभ आहार .
पवन नाभ में बसत है, नाशा कहिये द्वार ;
हरो रंग है बायु को, गंध सुगंध अहार .
आकाश शीश में बास है, श्रवन जु द्वारे जान ;
शब्द कुशब्द अहार है, ताको श्याम पहिचान .

चित बुधि मन अहंकार जो , अंतस करन सुचार;
ज्ञान अग्नि सों जारिये , आतम तत्व बिचार .

उत्पतगुण

जल सों मन निश्चल कियो , भयो वायु सों चित्त;
अहंकार भयो अग्नि तें , बुधि पृथ्वी तें मित्त .
शब्दस परस अरु गंध है , अरु कहियत रस रूप ;
देह करम तन मतारा , तू कहियत निह रूप .
शब्द गुण आकाश का , सपरस गुण है बाय ;
पृथ्वी का गुण गंध है , सो यह प्रगट दिखाय .
रूप अग्नि का गुण कहो, रस गुण जल का जान;
सुषुप्ति में सब लीन है , ये जग जड़ के मान .
श्रवण मुख इन्द्री भई , तत्व अकाश सों दोय ;
त्वचा हाथ इन्द्री युगल , वायु तत्व सों होय .
पावक सों इन्द्री युगल , भये नैन अरु पांव ;
जल सों जो इन्द्री लिंग है , अरु रसना दो नांव .
गुदा नाशिका दो भई , पृथ्वी सों पहिचान ;
चरणदास यों कहत हों , एक कर्म इक ज्ञान .
राजस सों इन्द्री भई , तामस तत्व जु पांच ;
सात्विक से चारों भये , चरणदास कह सांच .
तीनों गुण ते है परे , सो आतम को रूप ;
सो वह दृष्टि न आवई , अगम अगोचर गूप .
कारण सुच्छम लिंग है , अरु कहियत अस्थूल;
शरीर तीन सों जानिये , मैं मेरी जड़ मूल.
जाग्रत का अस्थूल है , स्वपने लिंग शरीर;
कारण जान सुषुप्ति को , तुरिया साक्षी बीर .
जाग्रत स्वप्न सुषुप्तिहि , तुरी अवस्थ बिचार ;

परा परसंती मध्यमा, बेषरी बानी चार.
जाग्रत बासा नैन में, स्वप्न कंठ अस्थान;
जान सुषोपति हिये में, नाभि तुरिय मन तान.
नाभि मध्य बाणी परा, हिये पसंती सुख्य;
कंठ मध्यमा जानिये, कहो बेषरी मुख्य.
दश इन्द्री तत्व पांच हैं, तन मात्रा भी पांच;
चारों अंतःकरण हैं, ये चौबीसो बांच.
पंद्रह को अस्थूल है, नौ को लिंग शरीर;
कारण झीनी बासना, तुरिया निर्मल धीर.
जाग्रत में चौबीस हैं, स्वप्न में नौ जान;
सुषुप्ति में सब लीन है, ये अँग जड़ के मान.
तुरिया इक रस आतमा, निर्मल अचल अनाद;
घटे बढ़े उपजे नहीं, तहां न बाद बिबाद.

उपनिषद उच्यते

## अष्ट पदी

तीन अवस्था मिटें, मिटे अहंकार है;
तुरीया ही रह जाय, जु तत्व अपार है
परमातम जो पुरुष, सदा निरलेव है;
केवल ज्ञान स्वरूप, जु ब्रम्ह अभेव है.
अब कोठों की बात, कहूं चित दीजिये;
जुदा २ परकाश, सबै सुन लीजिये.
पहिला कोठा कहों, अन्य सेती भरो;
छः कोठे तिहिं माहिं, सोई श्रवनहि धरो
तीन पिता की ओरसें, लाया संग ही;
बीरज मींगी हाड़, स्वेत जू रंग ही.

अब माता के अंश, तीन ही जानिये ;
लोह त्वचा अरु मांस, अरुण पहिचानिये .
प्राण सों कोठ भरा, दसों जहँ वायु हैं ;
अगले भी छः कहे, रहे जु समाय हैं .
तीजो कोठा जान, धरो तहां सुद्धि ही ;
मन चित अरु अहंकार, भरी जहाँ बुद्धि ही .
चौथा कोठा देख, इन्हीं का जानना ;
तामें भरा है ज्ञान, सभी पहिचानना .
पँचवें कोठा जान, जु आनँद से भरा ;
जैसे सगरो वृक्ष, बीज माहीं धरा .

दोहा

चारों कोठा जो कहे, अरु कारण को देख ।
जहां सभी ये रहत हैं, वा ठौरी कों पेख ॥
वा ठौरी को जानिये, ज्यों तरुवर का बीज ।
डार पात फल फूल ही, रहै जु वाके बीच ॥
ऐसे या को समझ कें, रहै जु आनँद आहिं ।
आनँद ही आनँद भरा, पंचम कोठा माहिं ॥

अष्ट पदी

आतम करता जान, जु जामें बुधि रहे ;
दुख सुख वाही माहि, सभी आसा धरे .
इच्छा पूरी भये, होत मन मोद है ;
जब पूरी नहिं होय, घना दुख होत है .
दुख सुख दोनों होत, जु पांचन के विषे ;
सोई इन्द्री जान, विना इनके कसे .
श्रवन आदि पांच बिषय हैं, तासों जीव आतम है ;
सूक्ष्म अस्थूल शरीर, प्रकृति में बंधा है .

जैसे कनक में टांक है, वस्त्र में मैल है ;
सोधे तें शुद्ध होय, मलिनता जात है.
जीव आतम यह भांति, फलन त्यागन करे ;
आतम ही रह जाय, जीवता ना रहै .
खोटे कर्मन है त्याग, भले सहजहि करे ;
तिनका फल जो होय, नहीं आशा धरे .

दोहा

जीव ब्रम्ह हो जात है, रहै न कछू लगाव ।
चरणदास यों कहत है, ऐसा किये उपाव ॥
चेतन ज्यों का ज्यों सदा, सदा अकर्ता जोय ।
सब करमन सों रहित है, आतम ऐसा होय ॥
काहू तें उपजो नहीं, वातें भयो न कोय ।
वह न मरे मारे नहीं, राम कहावे सोय ॥
योग युक्ति कर खोजले, सुरति निरति कर चीन्ह ।
दश प्रकार अनहद बजे, तहां होय मन लीन्ह ॥
तीन बंध नौ नाटिका, दश वाई को जान ।
प्राण अपान समान हैं, अरु कहियत उद्यान ॥
व्यान वाय अरु किरकिला, कूरम वायू जीत।
नाग धनंजय देवदत्त, दश वायू रन जीत ॥
नवहु द्वार को वंद कर, उत्तम नाड़ी तीन ।
इड़ा पिंगला सुषमना, केलि करे परवीन ॥
करते प्राणायाम के, पावे आतम भेष।
अनहद धुनि के बीच में, देखे शब्द अलेख ॥
पूरक कर कुंभक करे, रेचक पवन उतार ।
ऐसे प्राणायाम कर, सूच्छम करे अहार ॥
धरती बंध लगाय के, दसों वायु को रोक ।

मस्तक प्राण चढ़ाय के, करे अमर पुर भोग ॥
पांचो मुद्रा साध के, पावे घट का भेद ।
नाड़ी शक्ति चढ़ाइये, षट चक्कर कौ छेद ॥
नाशा ध्यान दृष्ट भृकुटी में, सुरति श्वास के माहिं ।
आतम देखो जात है, या में संशय नाहिं ॥
योग युक्ति को कीजिये, कै आतम को ध्यान ।
आपा आप विचारिये, परम तत्व को ज्ञान ॥
सुंदर बैश्य शरीर, ब्राम्हण अरु रजपूत ।
बूढ़ा बाला तू नहीं, चरणदास अबधूत ॥
काया माया जानिये, जीव ब्रम्ह है मीत ।
काया छूटे सुरति मिटे, तू परमातम नित्त ॥
पाप पुण्य आशा तजो, तजो मान अरु थाप ।
काया मोह विकार तज, जपो सु अजपा जाप ॥
आप भुलानों आप में, बंधो आप में आप ।
जाको तू ढूंड़त फिरे, सो तू आपहि आप ॥
इच्छा दोय बिसार के, क्यों न होय निर्वास ।
तूतो जीवन मुक्त है, तजो मुक्त की आश ॥
आपा खोजे आप लख, आप अपन को देख ।
चरणदास तू ब्रम्ह है, तू ही पुरुष अलेख ॥
जैसे कछुवा सिमिट कर, आपहि माहिं समाय ।
तैसे ज्ञानी श्वास में, रहै सुरत लव लाय ॥
सब घट रमो सो राम है, आदि पुरुष निर गम्म ।
लख चौरासी योनि में, एक समानो सम्म ॥
दृष्टि मुष्ट आवे नहीं, रूप न देखा जाय ।
बिना सुरति बिन नाम को, घटघट रहो समाय ॥

छप्पै

इच्छा दुइ कर दूर, आप तू ब्रम्ह हो जावे ;
और सों दुतिया कौन, तासु को शीश नवावे.
माला तिलक बनाय, पूर्व अरु पश्चिम दौरा ;
नाभि कमल कस्तूर, हिरन जंगल भयो बौरा.
चरणदास लख दृष्टि धरे, एक शब्द भर पूर है ;
निरख परख ले निकट ही, कहन सुनन सों दूर है.

छप्पय

झूठी सी यह दृष्टि, जगत सब झूठो दरसे ;
मूरख जाने सत्य, तासु सों फिर फिर परसे.
चंद्र सूर्य थिर नहीं, नहीं थिर पवन न पानी ;
तिर देवा थिर नहीं, नहीं थिर माया रानी.
नौ नाथ चौरासी सिद्ध जो, चरणदास थिर ना रहै ;
ब्रम्ह सत्य सर्वज्ञ है, आत्म बिचार क्यों ना गहै.

दोहा

जो मुख सेती बोलिये, अरु सुनियत है कान।
जो आखिन सों देखिये, सबही माया जान॥
एकहि सब में रम रहो, चेतन जड़ के माहिं।
माया दरसत है सबै, ब्रम्ह दीखत है नाहिं॥
जैसें तिल में तेल है, फूल मध्य ज्यों वास।
दूध मध्य ज्यों घीव है, लकडी मध्य हुताश॥
माया यही स्वभाव है, उदय होय छिप जाय।
चंचल चपल सुहावनी, ओला ज्यों गलि जाय॥
सत्त चेतन आनंद है, आदि अंत मधि हीन।
आदि अंत आकार को, सो तू झूठो चीन्ह॥
सुरत नाम आकार है, ज्यों भूतन को नाच।

मृग तृष्णा को नीर है, निकट गए नहिं सांच ॥
चित्त वसी सांची लगे, खोज किये मिट जाय।
दीखे है पर है नहीं, कौतुक सो दरशाय॥

शिष्यो वाच

ब्रम्ह बिना खाली नहीं, धरबे को इक पांव।
माया को कहां ठौर है, सतगुरु मोहि बताव ॥
निरविकार तो ब्रम्ह है, अछै अचल अपार।
आई माया कहां तें, सतगुरु कहो बिचार ॥

गुरुरु वाच

आप ब्रम्ह माया भयो, ज्यों जल पाला होय।
पाला गल पानी भवै, ऐसे नाहीं दोय ॥
झूठी माया सों कहे, ज्ञानी पंडित लोय।
भर्म भूल सांची लगे, समझे सांच न होय॥
सोंने को गहनो गढ़े, कहन सुनन को दोय।
गहनौ ना सौनो सबै, नेक जुदो नहिं होय ॥
झूठ सांच दो नाव है, झूठ मिटे इक सांच।
नाव मिटे सूरति मिटे, भूषण को लग आंच ॥
जाको माया कहत हैं, सो तूं नेक निकास।
जैसे हींग कपूर की, नेक जुदी कर बास॥
जल समान तो ब्रम्ह है, माया लहर समान।
लहर सबै वह नीर है, लहर कहे अज्ञान ॥
खेल खिलोना खांड़ के, कीजे लाख पचास।
सकल खिलौना खांड़ है, ऐसे गहि विश्वास॥
चरणदास खिलौना खांड़ के, भाजन राखे खांड़।
बिन बिनसे भी खांड़ है, बिनस जाय तो खांड़ ॥

माटी के भांड़े भवे, सूरत अरु बहु नांव।
बिगस फूट माटी भई, बासन कहो किहि ठांव ॥
ऐसेही माया नहीं, समझ देख मन माहिं।
जित देखो तित ब्रम्ह है, माया दीसत नाहिं ॥
इच्छा मेट दुई तजे, एकै मन विश्राम।
ब्रम्ह ज्ञान बिज्ञान है, समझ परम पद धाम ॥

## कवित्त

श्वास उसास चले जब आपहि, है जु अखंड टरे नहिं टारो.
भीतर बाहर है भरपूर, सो ढूंढ़ कहां नहिं नाहिं निनारो.
चरणदास कहै गुरु भेद दियो, भ्रम दूर भयो जु हतो अति भारो.
दृष्टि अदृष्टि जु राम कों देखत, राम भयो पुन देखन हारो.

## दोहा

आप आप में आप है, खेलो बहु बिस्तार।
द्वितिया तो कछु है नहीं, एकहि एक निहार ॥
कहिं नारायण नाम है, कहिं ब्रह्मा कहिं वेद।
कहिं शंकर कहिं गौरजा, कहीं अभेदा भेद ॥
जल थल पावक राम हैं, राम रमो सब माहिं।
हरि सब में सब राम हैं, और दूसरो नाहिं ॥

## चौपाई

दश अवतार आप है आयो, सेवक साहिब आप कहायो.
जैसे जल तरंग है आई, उलट फेर जल माहिं समाई.
ना कुछ गया नहीं कुछ आया, अपना भेद आपही पायो.
स्वपनो मिट भयो एक आकारा, ज्ञानी अबही लेहु निहारा.
नहिं सुक्षम अस्थूल न भारी, रूप रंग नाहिं है परकारी.
वार पार कछु दीसत नाहीं, कब से है अरु कबसों नाहीं.
कहा कहों कछु कहत न आवे, गूंगा स्वपनो कहा बतावे.

वारपार पार नहिं पायो, ढूंढ़त ढूंढ़त आप भुलायो.
कहत कहत में गयो हिराई, अब मोपै कछु कहो न जाई.

दोहा

हद कहों तो है नहीं, बे हद कहों तो नाहिं।
हद वे हद दोनों नहीं, चरणदास भी नाहिं॥
जग स्वपना सा हो गया, भयो पेखना गांव।
जब जागो तब मिट गया, चरणदास नहिं नांव॥

छप्पय

तब नहिं चन्द्र न सूर्य, नहीं नभ में तारागण;
नहिं धरनी नहिं शेष, नहीं अगती पारायण.
तब न रूप नहिं नाव, नहीं त्रैगुण त्रैदेवा;
तब न ब्रम्ह नहिं जीव, नहीं साहिब नहिं सेवा.
रनजीत मीत नहिं बैर तब, निरगुण सगुण नाहता;
तब न वेद बानी नहीं, नहिं ज्ञानी नहिं पंडिता.
जो श्रवन सों सुनो, और मुख सेती भाखे;
जो कुछ देखे नैन, और सोवे अरु जागे.
अरु आवे दुर्गंध, गंध नाशा के माहीं;
यह सब झूठो जान, कछू ठहरत है नाहीं.
अरु चरणदास उपजे नहीं, बिनशै नहिं संसार कहूं;
ब्रम्ह सत्य सर्वज्ञ है, सो झूठो दरस स्वपनो यहू.

दोहा

ब्रम्ह बिना खाली नहीं, सरसों सम कहुं ठौर।
स्वपनो सो जग देखिये, स्वप्न भयो तन मोर॥
शुद्ध ब्रम्ह है रैन सम, जगत दिवाली दीव।
ज्यों तरंग जल में उठें, ब्रम्ह बीच है जीव॥
वार न जाको पाइये, पार परे नहिं चीन्ह।

ऐसे सिंधु अथाह में, जगत जानिये मीन ॥
ब्रम्ह बीच ये जीव सब, फिरत रहत आधीन ।
जैसे सागर सिंधु में, नाना रूपी मीन ॥
जैसे लहर समुद्र की, उठत रहत तिहिं माहिं ।
बिन इच्छा बिन भावना, हो २ मिट २ जाहिं ॥
औंडो सीव गम्हीर है, बिन इच्छा बिन दोय ।
निज स्वभाव जग होत है, मिट २ फिर २ होय ॥
जगत ब्रम्ह में यों दिपै, ज्यों धरती पर रेख ।
रेख मिटे धरती रहे, ऐसे ही जग देख ॥
झूठ सांच दो नाव हैं, झूठ मिटे थिर सांच ।
ज्यों लोहा पावक मिलो, लोह रहे मिट आंच ॥
देखन को अति निकट है, कहबे को बहु दूर ।
एकै ब्रम्ह अखंड है, सकल रहो भर पूर ॥
भूल हती तब दो हते, अब नहिं एक न दोय ।
अटक उठी धोखा मिटा, आप नहीं गयो खोय ॥

छप्पै

जहां गुरू नहिं शिष्य, जहां नहिं साहिब दासा ;
जहां गुफा नहिं योग, जहां नहिं गगन निबासा.
जहां नहीं तप दान, जहां नहिं देवल पूजा ;
जहां ब्रम्ह नहिं जीव, जहां नहिं एक न दूजा.
अरु चरणदास मिल मिट गयो, सो अचरज ऐसो सूझिया ;
कौन सुने कासों कहूं, सो आप २ नहिं दूजिया.

दोहा

अपरंपार अपार है, आदि अनादि अडोल ।
पुरुष पुरातम ब्रम्ह है, बिन काया बिन बोल ॥
निर्गुण ना सर्गुण नहीं, उपजे ना मिट जाय ।

सब कुछ है अरु कुछ नहीं, सदा ब्रम्ह थिर ताय ॥
जहां सांच तहँ झूठ है, जहां झूठ तहँ सांच ।
झूठ सांच दोनों नहीं, तहँ कछु शील न आंच ॥
बंध नहीं मुक्ता नहीं, पाप पुण्य भी नाहिं ।
उत्पति ना परलय नहीं, नहीं २ भी नाहिं ॥
इन्द्री ना निग्रह करो, मन नहिं जीतो ताहि ।
भूलो ना चेतो नहीं, मैं नहिं खोजूं वाहि ॥
योग नहीं युक्ता नहीं, नहीं ज्ञान नहिं ध्यान ।
बुधि बिचार पहुंचे नहीं, तहँ कछु लाभ न हान ॥
जैन धर्म शिव शक्ति ना, स्वर्ग नर्क नाहिं बास ।
षट दरशन चौवर्ण ना, नहीं कर्म सन्यास ॥
सिद्धि नहीं साधक नहीं, नहीं तिमर नहिं भान ।
शून्य नहीं वे सून्य ना, नहीं तत्व विज्ञान ॥
धर्म कर्म अरु मोहना, अरु नाहीं बैराग ।
ज्योंका त्यों सो भी नहीं, नहीं दुखी अनुराग ॥

## चौपाई

ब्रम्ह ज्ञान मिटै ना दोई, ब्रम्ह ज्ञान बिन मुक्ति न होई ।
दान यज्ञ तप नाना भोगा, ब्रम्ह ज्ञान बिन सबही रोगा ।
कलै कल्पना मन में दोष, ब्रम्ह ज्ञान बिन ना संतोष ।
तिमिर अविद्या सबही भागे, ब्रम्ह ज्ञान में जो तू जागे ।
मत मारग मिल भर्म बढ़ावे, पक्ष पात लै सब भर्मावे ।
गुण बिन ब्रम्ह ज्ञान नहिं पावे, गुरु बिन तत्व कौन दरशावे ।
गीता अरु वेदान्त बतावे, साम वेद भी योंही गावे ।
ब्रम्ह ज्ञान में निश्चय आवे, जीवन मुक्ता सोइ कहावे ।

## दोहा

तूं नाहीं सब राम है, बेद भेद की सीक ।

एक रमैया रम रहो, सकल अंड ब्यापीक ॥
सिंधु स्वरूपी ब्रह्म है, ज्यों पाला सब लोक।
पाला गल पानी भवे, कछू न निकसे फोक ॥
उरझे कों सुरझाइये, किये जन्म को सूत।
चरणदास निर्भय भये, आशा तज अवधूत ॥

कवित्त

स्वर्ग हू न चाहिये, जो होम यज्ञ दान करो;
इन्द्र आदि भोगन कों, चित्त सों उठायो है.
ऋद्धि हू न चाहिये, जो जगत में बड़ाई चले;
सिद्ध हू न चाहिये, सब साधन बिसरायो है.
जाति हू न चाहिये, जो कुल की मर्याद चले;
चार बरण एकै, यौ बेदों में गायो है.
कासें कहै मुक्ति और बंध, तो न सूझै कहूं;
कहै चरणदास, आप आपन लौ लायो है.

कवित्त

आदिहू आनंद अंतहू आनंद, मध्य हू आनंद ऐसेही जानो;
बंधहु आनंद मुक्ति हू आनंद, आनंद ज्ञान अज्ञान पिछानों.
लेटे हू आनंद बैठे हू आनंद, डोलत आनंद आनंद आनों;
चरणदास बिचार सवे कुछ आनंद, आनंद छांड़ के दुख्य न ठानों.
आदि हू चेतन अंतहू चेतन, मध्य हू चेतन माया न देखी;
ब्रम्ह अद्वैत अखंड निरालभ, और न दूसरा आतम एखी.
सिंधु अथाह अपार बिराजत, रूप न रंग नहीं कछू रेखी;
चरणदास नहीं सुख देव नहीं, तहां ना कोइ मारग ना कोइ भेषी.
भद्दत है नहिं भद्दत भोजन, पीवत है नहिं पीवत पानी;
डोलत है नहिं डोलत पेड़, सो बोलत है नहिं बोलत बानी.

नाना रूप व्योहार में देखत है, और निश्चय के मध्य कछू नहीं आनी
चरणदास बताय दियो शुकदेव ने, ऐसे रहे ताहि जानिये ज्ञानी.
सोवत है नहिं सोवत नींद, सो जागत है नहिं जाग दिखानी;
योग करे न करे कछू साधन, ध्यान करे न करे कछू ध्यानी.
बचन बिलास करे चरचा, करें चरचा नहिं होय बिनानी;
चरणदास बताय दिया शुकदेव ने, ऐसे रहे ताहि जानिये ज्ञानी.

मंदिर क्यों त्यागो अरु, भागे क्यों गिरिबरकों;
हरि जी कों दूर जान, कल्पे क्यों बावरे.
सब साधन बतायो, अरु चार बेद गायो;
अपन कों आप देख, अन्तर लौ लावरे.
ब्रम्ह ज्ञान हिय धरो, बोलत का खोज करो;
माया अज्ञान हरो, आपा बिसरावरे.
जैहै जब आप धाप, कहां पुण्य कहां पाप;
कहै चरणदास, तू निहचल घर आवरे.

## अथ ब्रम्ह ज्ञान के लक्षण

### अथ ज्ञान परीक्षा

निरलंभ, निहभर्म, निर्बासिक, निर्बिकार

### अथ बिचार लक्षण

निर्मोहित, निर्बंध, निस्शंक, निबीन

### अथ बिबेकी लक्षण

सावधान, सर्बंगी, सारग्राही, संतोषी ४
अयाचिक, अमानीक, अपक्षीक, अस्थिर ४
ते परम संतोषी कहिये ४ निष्प्रपंच, निहतरंग
निरलिप्त, निहकर्म, ते सहज कहिये, ४ सुहृदे, सुखदाई.
शीतलताई, सुमती, ते निरबैर जानिये ४

शीलवंत, सुबुद्धी, सत्यबादी, ध्यान, समाधी, ये, शून्य परीक्षाकहिये
जामें ये लक्षण होय, तासों ब्रम्ह ज्ञानी कहिये १
अरु जेहि में ये लक्षण न होय, ताको बाचक ज्ञानी.
विडुन्डा जानिये, लक्ष ज्ञानी न जानिये.

## दोहा

जनक गुरू शुकदेव जी, चरणदास शिव होय।
आप रामही राम हैं, गई दुई सब खोय॥
ब्रम्ह ज्ञान पोथी कही, चरणदास निर्बार।
समझै जीवन मुक्त है, लहै भेद तत सार॥

इति श्री चरणदास कृत ब्रम्ह ज्ञान अंग संपर्ण

——**——

ब्रम्ह ज्ञान सागर ग्रंथ बड़ा है ताकी कथा सूक्षम २ लिख्यते

## अथ तेज वुंद उपनिषद पांचवा लिख्यते

## दोहा

उपनिषद जो पांचवीं, वेद अथर्वण माहिं।
तेज विंद जिहि नाम है, समझ मुक्त होय जाहि॥

## अष्टपदी

तेज विंद के अर्थ, यही हिय गूंध है;
बड़े ध्यान के, तेज ही की यह बूंद है.
उसका है यह ध्यान, जु सब से ऊंच है;
सबतें परें निरूप, शुद्ध अरू सूच है.
हृदय ही के मध्य, और सूक्षम महां;
अरु केवल आनंद, कीन्ह ज्ञानी लहा.

अनंत शक्ति तिहि माहिं , निरा अस्थूल है ;
बहुत पिंड ब्रम्हंड , सबन का मूल है .
बड़ा बिना परमान , गहा नहिं जात है ;
वाकी तपस्या ध्यान , जु कठिन दिखात है.
वाका देखन दुर्लभ , सुलभ नहिं जानना ;
वह तो समद अथाह , कछू परमानना .
ज्ञानी पंडित और , सबै बुधि बानही ;
पावे आद न अंत , और मध वहां नहीं .
कै बांधे ब्रम्ह व्रत , करे कै ध्यान ही ;
वाही के होवे रूप , पावे तब जानही .

## दोहा

जीते पहिल अहार ही , दूजे औरहि क्रोध ।
वहु मनुषों को संग तज, छोड़हि प्रीति बिरोध ॥

## अष्टपदी

परबल इन्द्री जान , सबन को बश करे;
शीत उष्ण दुख सुख्य, स्तुति निंद्रा हरे .
छोड़े ही अहंकार , बासना आशही ;
अपने कारण बस्तु , रखे नहिं पासही .
पूरी राखे पैज , धारना धारिकें ;
गुरु आज्ञा गुरु सेव , करे जु बिचारकें.
सकल मनोरथ कामना , को कर छीन ही;
ऐसे जिज्ञासी को , चहिये द्वारे तीन ही .
एक जु द्वारा त्याग , दूजा जो उपावही ;
तीजा गुरु की निश्चय , ऐसा स्वभावही .
इन द्वारों में राह , जो आगे की खुले ;
लुटे थके वह नाहिं , सुखा ताही चले .

जीव आत्मा जो, हंस कहावत है यही ;
याके हैं अस्थान, जु तीनों ही सही .
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति, प्रगट ही जानिये ;
तुरिया निज स्थान, गुप्त पहचानिये .

दोहा

इन तीनों सें बड़ा है, तुरिया को नित जान ।
चरणदास पोषण जगत, वाके ना अस्थान ॥

अष्ट पदी

जैसे भूत अकाश, यो व्यापक होय रहो ;
सब इन्द्रिन के मांहिं, जु सूक्ष्म जो रहो .
वाकी सत्ता सेती, चेतन ही रही ;
बही बड़ा पद जान, बिष्णु का है सही .
वाके नेत्र हैं तीन, जु तीनों बेद ही ;
अरु वाके गुण तीन, जु किया ना खेद ही.
है सबका आधार, त्रिलोकी धार ही ;
आप रहै निरधार, जु अपरं पारही .
है निरूप अडोल, अखंड अगाध ही ;
है तो निस्संदेह, पहुंचे न उपाधि ही .
कर न सके परवेश, वरण गुण रूप ही ;
अरु सब गुण वा माहिं, जु अधिक अनूपही.
पावे केवल ज्ञान, सु आप में आपही ;
बावन अक्षरों माहिं, नाव नहिं थाप ही .
वह तो निर आनंद, काहू सों है नहीं ;
कठिन प्राप्ति होय, दुर्लभ देखे तहीं .

दोहा

वह उपजे बिनशे नहीं, अज अविनाशी सोय ।

बिन इच्छा थिर ही रहे, चरणदास नित जोय ॥

## अष्ट पदी

वह सबही बैराट, पिंड अरु जीव है;
नाना कौतुक होय, अंत वह सीव है.
ज्ञान से जुदा न जान, निरावह ज्ञान है;
वही महा आकाश, नहीं परमान है.
सब माहीं परवेश, जु आतम सत्य है;
आप में पूरन आप, परम ही तत्व है.
अज्ञानी जाने झूठ, झूठ पहुंचे नहीं;
वह तो सदा नित जान, कभी बिनशे नहीं.
बाको कहा न जाय, जाप जापक कभी;
अरु सारे हैं जाप, उसी माहीं सभी.
और जपा भी गया, जाप जापक वही;
सब कुछ उस को जान, गुप्त प्रगटे सही.
वह निर्गुण निर लिप्त, कोई गुण नाहिने;
परे सों परे ता परे, जानिले बाहिने.
बासे परे नहिं और, बिचारा जायना;
कहै चरणहिदास, कछू वा माहिना.

## दोहा

बाको जाग्रत है नहीं, बाको स्वप्न न कोय ।
सोवन स्वपना है नहीं, जाग्रत कैसे होय ॥

## अष्ट पदी

दोनों से न्यारा जान, जाग्रत अरु स्वप्न सू;
ऐसा कोई नाहिं, न जानें सत्त हूं.
सबका जानत मूल, जु ज्ञानी लों यही;
दीरघ और प्रकाश, जाने सब को यही.

जाकों लोभ न होय, अविद्या होय ना;
भै अभिमान कुकर्म, बासना कोय ना.
गर्मी जाड़ा भूख प्यास, व्यापै नहीं;
पइये क्रोध न मोह, नेक बासें कहीं.
बाहि न इच्छा होय, न पूरी चाहही;
कुल विद्या अभिमान, न उनके माहि ही.
मान नहीं अपमान, न मन में लावई;
सब सों हो निर वृत्त, ब्रम्ह को पावई.
तेज बिंद उपनिषद, सम्पूर्णही भई;
गुरु शुकदेव के दास, चरणदासहि कही.
ताहि सुन मन राख, बिचारा ही करे;
निश्चय होवे मुक्ति, जगत में ना परे.

इति श्री पांचमी उपनिषद सम्पूर्णम्

## अथ चरणदास कृत भक्ति पदार्थ में की थोरी सी कथा लिख्यते

### दोहा

प्रणऊं श्री मुनि व्यास जी, मम हृदय में आय।
भक्ति पदारथ कहत हों, तुमही करो सहाय॥
तुम दाता हम मंगता, श्री शुकदेव दयाल।
भक्ति दई व्याधा गई, मेंटे जग जंजाल॥
दूसर के बालक हते, भक्ति बिना कंगाल।
गुरु शुकदेव दया करी, हरि धन किये निहाल॥

जा धन को ठग ना लगें, धरा सके ना लूट।
चोर चुराय सके नहीं, गांठ गिरे नांहिं खूट ॥
बलिहारी गुरु आपने, तन मन सद के जाव।
जीव ब्रम्ह क्षण में कियो, पायो भूलो ठांव ॥
हरि सेवा सों लाव रस, गुरु सेवा फल चार।
तोभी नहीं बराबरी, वेदहु कियो बिचार ॥

## चौपाई

गुरु सेवा को साधू जाने, गुरु सेवा का मूढ़ पहिचाने.
गुरु सेवा सों बिघन बिनाशे, दुर्मति भागे पातक नाशे.
गुरु सेवा चौरासी छूटे, आवा गमन का डोरा टूटे.
गुरु सेवा यम दंड न लागे, ममता मरे भक्ति में जागे.
गुरु सेवा सों प्रेम प्रकाशे, उनमत होय मिटे जग आशे.
गुरु सेवा परमातम परसे, त्रिगुण तज चौथा पद परसे.
श्री शुकदेव बतायो भेवा, चरणदास कर गुरु की सेवा.

### शिष्योक्ति

गुरु सेवा जाने नहीं, पाव न पूजे धाय।
योग दान जप तप किये, सभी अफल हो आय ॥

### गुरुरुवाच

इन्द्री जीत निरबैरता, निर्मोही निरबंध।
ऐसे गुरु के शरण तें, मिटे सकल दुख दंद ॥
सत्त बादी अरु शीलवंत, शुद्ध हृदय योगीश।
निश्चल ध्यान समाधि में, सो गुरु विस्वा बीस ॥
भर्म निवारण भय हरण, दूर करन संदेह।
गुड़िआ खेले ज्ञान की, सो सतगुरु कर लेहु ॥
सतगुरु के लच्छण कहे, ताको ले पहिचान।

निरख परख कर दीजिये, तन मन धन अरु प्रान ॥
ऐसा सतगुरु कीजिये, जीवत डारे मार ।
जन्म २ की बासना, ताकों देवें जार ॥
सतगुरु के ढिग जाय कें, सन्मुख खावे चोट ।
चक मक लग पथरी झड़े, सकल जलावे खोट ॥
सतगुरु मेरा शूरमा, करे शब्द की चोट ।
मारे गोला प्रेम का, काढहि भ्रम का कोट ॥
मुख सेती बोलन थका, सुनिये थका जु कान ।
पावन सों फिरबो थका, सतगुरु मारा बान ॥
में मृगा गुरु पारधी, शब्दी लागा बान ।
चरणदास घायल गिरे, तन मन बेधे प्रान ॥
सतगुरु शब्दी तेग है, लागत दो कर देय ।
पीठ फेर कायर भगे, शूरा सन्मुख लेय ॥
ऐसा मारे खोंचकर, लगा बार गयो पार ।
जिनका आपा ना रहा, भयो रूप ततसार ॥
सतगुरु के मारे मुये, बहुरि न उपजें आय ।
चौरासी बंधन छुटें, हरि पद पहुंचे जाय ॥
सतगुरु के बचनों मुये। धन्य जिन्हों का भाग ।
त्रैगुण ते ऊपर गये, तहां दोष नहिं राग ॥
बचन लगा गुरु देव का, छूटे राज के साज ।
हीरा मोती नारि सुत, गज घोड़ा अरु बाज ॥
बचन लगा गुरु ज्ञान का, रूखे लागें भोग ।
इन्दर पदवी लों उन्हें, चरणदास सब रोग ॥
सतगुरु ढूंढ़ा पाइये, नहीं सुहेला होय ।
शिष्य भी पूरा कोइ है, सानी माटी जोय ॥
जाति बरन कुल आश्रम, मान बड़ाई खोय ।

जब सतगुरू के पग लगें, सांचा शिष्य है सोय ॥

चौपाई

गुरु के आगे नावे माथा, पाप ताप दुख मेंटो नाथा.
मैं आधीन तुम्हारो दासा, अपने चरणन में दियो बासा.
यह तन मन लै भेंट चढ़ाऊं, अपनी इच्छा कछू न रहाऊं.
जो चाहो सो तुमहीं करो, या भांडे में जो कुछ भरो.
भावे धूप छांह में डारो, भावे डोबो भावे तारो.
गुण पौरुष कछु बुद्धि न मेरी, सब बिधि शरणागत प्रभु तेरी.

दोहा

गुरु के आगे जाय कर, ऐसे बोले बोल ।
कछू कपट राखे नहीं, अर्ज करे मन खोल ॥
यह आपा तुम को दिया, जित जानों तित राख ।
चरणदास द्वारे परो, आवें झिड़ को लाख ॥

चौपाई

ऋद्धि सिद्धि फल कछू न चाहूं, जगत कामना कों नहिं लाहूं.
और कामना मैं नहिं राखो, रसना नाम तुम्हारो भाखो.
राज भोग का मोहि न सांसा, इन्दर पदवी लो नहिं आशा.
चौरासी में बहु दुख पायो, तातें शरण तिहारी आयो.
मुक्त होंन की मन में आवे, आवा गवन सों जिव डरावे.
राम भक्ति की चाह हमारे, तातें पकड़े चरण तुम्हारे.
प्रेम प्रीति में हृदयो भीजे, यही दान दाता मोहि दीजे.
अपना कीजे गहिये वांहीं, धरिये शिर पर हाथ गुसांई.
चरणदास कों लेव उबारे, में अंडा तुम सेवन हारे.

दोहा

अपना कर सेवन करे, तीन भांति गुरु देव ।

पंजा पच्छी कुंज मन, कछवा दृष्टि जु भेव ॥
जो वे विसरें इक घरी, तो गंधा हो जाय।
चरणदास यों कहत है, गुरु कों राख रिझाय ॥
पिता सों माता सौगुना, सुत कों राखे प्यार।
मन सेती सेवन करे, तन सों ताड़ अरु गार ॥
जो देवे कुछ श्राप भी, हो लागे आशीश।
सेवन कर समरथ कियो, उन पर वारो शीश ॥
माता सों हरि सौ गुणो, जिन सें सौ गुरु देव।
प्यार करें औगुन हरें, चरणदास शुकदेव ॥
काचे भाड़े से रहै, जिमि कुम्हार कों नेह।
भीतर सों रच्छा करें, बाहर चोटें देय ॥
जब सतगुरु कृपा करें, खोल दिखावें नैंन।
जग झूटा दीखन लगै, देह परे की सैन ॥

## अष्टपदी

गुरु बिन और न जान, मान मेरो कहो;
चरणदास उपदेश, बिचारत ही रहो।
बेद रूप गुरु होय, कि कथा सुनावही;
पंडित कौ धर रूप, कि अर्थ बतावही।
गुरु ही शेष महेश, तो ही चेतन करे;
गुरु ब्रम्हा गुरु विष्णु, होय खाली भरे।
कल्प वृच्छ गुरु देव, मनोरथ सब सरे;
काम धेनु गुरु होय, क्षुदा तृष्णा हरे।
गंगा सम गुरु होय, पाप सब धोवई;
शसियर सम गुरु होय, तपन सब खोवई।
सूरज सम गुरु होय, तिमिर सब लेवई;
पार ब्रम्ह गुरु होय, मुक्ति पद देवई।

गुरु ही को कर ध्यान , नाम गुरु को जपो ;
आपा दीजे भेंट , पूजन गुरु ही थपो .
समरथ श्री शुकदेव , कहा महिमा करों;
अस्तुति कही न जाय , शीश चरणन धरों .

दोहा

हरि रूठे कुछ डर नहीं , तो भी दे छुटकाय ।
गुरु को राखे शीश पर , सब बिधि करे सहाय ॥

अष्टपदी

गुरु को तज हरि सेव , कभी नहिं कीजिये ।
बे सुख को नहिं ठौर , नरक में दीजिये ॥
गुरु निंदक नहिं मुक्त , गर्भ फिर आवई ।
चौरासी लख भुगत , महा दुख पावई ॥
प्रथम करे गुरु देख , परख चरणों परे ।
उनकी धारन ध्यान , टेक उर में धरे ॥
गुरु को पूरण जान , जु ईश्वर रूप ही ।
सब कुछ गुरु को जान , यह बात अनूप ही ॥
मोको श्री शुकदेव , यही समझाइया ।
वेद पुराणन माहिं , जु योंही गाइया ।

दोहा

गुरु अस्तुति कहा कहि सकों , चरणदास कहा बुद्ध ।
भक्तों की अब कहत हों , जो वेदों में शुद्ध ॥
भक्तों की अस्तुति करें , तन मन हियो सराय ।
कलि का मैल रहे नहीं, बुधि निर्मल हो जाय ॥
साधों की सेवा करो , चरणदास चित लाय ।
जन्म मरण बंधन कटे, जगत ब्याधि छुट जाय ॥

## चौपाई

जो भक्तों की सेवा करे, यम के फंदा नाहीं परे.
जिन साधों का दर्शन देखा, ताका यम सों रहा न लेखा.
जो भक्तों को शीश नवावे, तन छूटे तब दुःख न पावे.
जोई साध संग में रले, जठर अग्नि में नाहीं जले.
जो साधों की अस्तुति भाखे, पावे भक्ति प्रेम रस चाखे.
जो भक्तों से प्रीति लगावे, वह हरि को निश्चय अपनावे.
जो भक्तों की बानी गावे, समझै अर्थ परम पद पावे.
सतसंगतिबिनगतिनहिंहोनी, क्यातपसीअरुक्याभयेमौनी.
चरणदास भक्तों के सरना, वहाईं जीवन वहाईं मरना.

अथ साधु लक्षण

## दोहा

भक्ति मान निर्मल दिशा, संतोषी निर्बास ।
मन राखे नवधा विषय, और न दूजी आश ॥

## चौपाई

दयावान दाता गुण पूरे, पैज धारना बचनों शूरे.
मुक्त कामना फल नहिं चाहे, ऋद्धि सिद्धि अरु त्यागें लाहे.
हानि लाभ जिनके नहिं टोटा, बैरी मित्र खरा नहिं खोटा.
मान अपमान कछू नहिं तिनके, दुख सुख एक बराबर जिनके.
शुभ अरु अशुभ कछू नहिं जानें, राव रंक को नहिं पहिचानें.
कंचन कांच बराबर देखें, जग ब्योहार कछू नहिं लेखें.
हार जीत नहिं बाद बिबादा, सदा पवित्र समझ आगाधा.
हर्ष शोक जिनके नहिं कबहीं, लख चौरासी प्यारे सबहीं.
हिंसा एक स्वभाव न दूजा, सब जीवन की राखें पूजा.
चरणदास शुकदेव बतावें, ऐसे लक्षण साध कहावें.

## दोहा

भक्तों की पदवी बड़ी, इन्द्र तें अधिकाय।
तीन लोक के सुख तजें, लीन्हा हरि अपनाय॥
अनन्य भक्ति निष्काम जो, करे सो चरणहिदास।
चार मुक्ति बैकुंठ लों, सब सों रहै निरास॥
प्रभु अपने मुख सों कहें, साधु हमारी देह।
उनके चरणन की मुझे, प्यारी लागै खेह॥
आठ सिद्धि लेवें नहीं, कनक कामिनी नाहिं।
मेरे संग लागे रहैं, कभी न छोड़ैं वाहिं॥
सब तज करमों को भजें, मोही सेती प्रीति।
मैं भी उनके कर विकूं, यह जो मेरी रीति॥
साध हमारी आतमा, सब में प्यारे मोहि।
नारद निश्चय कीजिये, सांच कहत हौं तोहि॥
जिनके कारण मैं रचो, अद्भुत यो संसार।
उनहीं की इच्छा धरों, हर युग में अवतार॥
प्रेमी को ऋणिया रहों, यही हमारो शूल।
चार मुक्ति दई व्याज में, दै न सकों अब मूल॥
सरबस दीन्हों भक्त को, देख हमारो नेह।
निर्गुण सों सगुण भयो, धरी पशू की देह॥
मेरे जन मो में रहें, मैं भक्तन के माहिं।
मेरे अरु मम संत में, कुछ भी अन्तर नाहिं॥
साधु सोवें तहां सो रहों, भोजन संगहिं जेंव।
जो वह गावें प्रेम सों, मैं वहां ताली देंव॥
मम भक्ता जित तित फिरें, गवने लागा जांव।
जहां तहां रचा करों, भक्त बत्सल मम नांव॥
भक्त हमारो पग धरे, तहां धरों मैं हाथ।

लहरे लागो हौं फिरों, कबहुं न छोड़ों साथ ॥
मोकों बश कीन्हों चहै, भक्तन की कर सेव।
उनमें होकर मैं मिलौं, करों बहुत ही हेव ॥
पृथ्वी पावन होत है, सबही तीरथ आदि।
चरणदास हरि यों कहैं, चरण धरे जब साधि॥
जिनकी महिमा प्रभु करें, अपने मुख सों भाखि।
तिनकी कौन बराबरी, वेद भरत हैं साखि ॥
जिनकी आशा करत हैं, स्वर्ग माहिं सब देव।
कबहूं दर्शन पाय हैं, चरण कमल की सेव ॥
अपने अपने लोक में, सबै करें उत्साह।
साधू काया छोड़ कें, गवन करें किस राह ॥
धन नगरी धन देश है, धन पुर पट्टन गांव।
जहां साधु जन उपजियो, ता के बलि बलि जांव ॥
भक्त जु आवत जगत में, परमारथ के हेत।
आप तिरें तारें परा, माड़ें भजन के खेत ॥
भव सागर सों तार कर, ले जावे बहु जीव।
साधू खेवट राम के, पार मिलावें पीव ॥
काम क्रोध मद लोभ हन, गर्व तजे जो साध ॥
राम नाम हिरदय धरें, रोंम रोंम आराध ॥
साधू महिमा को कहै, शोभा अधिक अपार।
रसना दोइ हजार सों, शेषहु जावे हार ॥
अनन्य भक्ति कर प्रेम सों, जीत लिया गोविंद।
चरणदास हो बश किये, पूरण परमानंद ॥
तप के बरष हजार ही, सत संगत घड़ि एक।
तोभी सर्वरि ना करे, किये शुकदेव बिवेक ॥

### चौपाई

सत संगत महिमा बड़ भाई, सुमती वेद पुराणन गाई.
मुनि वाशिष्ट कहो यह भेवा, साधु संग कों तरसें देवा.
साधु संग को नारद जानें, सो वह पिछलो जन्म पिछाने.
देखो संगति की अधिकाई, वालमीक अरु स्योरी गाई.
अजा मील सत संगति करिया, अगणित पाप किये सब जरिया.
सत संगति वहु पतित उधारे, अधम शरीर के मुक्ति पधारे.
दास कवीर और रैदासा, संग साध में हुआ प्रकाशा.
साधों की संगति मुकताई, चरणदास शुकदेव वताई.

### दोहा

जब जब दर्शन राम के, तब मांगो सत संग।
चाहो पदवी भक्ति की, चढ़े सो नवधा रंग ॥

### चौपाई

कुंम्हा सजना सैना नाई, वहुतक नीच भये उच पाई.
जैसे ठौर ठौर का पानी, सुर सरि मिल भयो गंगा रानी.
तैसे काठ लोह को तारे, ऐसे संगति मिल भयो पारे.
जैसे पारस लोहा लागा, सो वह कंचन भया सुभागा.
देवल तीरथ वहु मग धावें, साधु संग विन गति नहिं पावें.
ज्यों गोविंद संग गई कुवरी, सुआ संग त्यों गनका उवरी.

### दोहा

ऊंची पदवी साधु की, महिमा कही न जाय।
सुर नर मुनि जग भूपही, देखत रहे लजाय ॥
अन्होनी प्रभु कर सकें, होनी देहिं मिटाय।
चरणदास कर भक्ति ही, आपा देह मिटाय ॥

## चौपाई

हरि चितवै सो सांची बाता, औरन सों नहिं टूटे पाता।
जो कुछ चाहै सो उन करई, अब चाहै सो भी सब सरई।
अग्नि माहिं तृण घास बचावे, घट में सिगरो सिंधु समावे।
पावक राखे पानी माहीं, जल राखे जहां धरनी नाहीं।
सुई के नाके हस्ती काढ़े, मूल पात बिन लकड़ी बाढ़े।
नर की छाती दूध निकासे, उपजावे वह खेत अकासे।
सब लाइक सामर्थ गुसाईं, चरणदास शुक देव बताईं।

दोहा प्रभु चाहै सोई करे, ताको टोके कौन।
देख २ अचरज रहा, चरणदास गहि मौन॥
यह अस्तुति करतार की, जिन रचिया संसार।
अद्भुत कौतुक कर रहो, लीला अपरंपार॥

## चौपाई

उपजावे पाले बिनशावे, अगणित चंद्र सूर्य दरशावे।
कोटिक अंड पलक में करे, जब चाहै तब कुछ ना रहै।
जब फैले तब रूप अनेका, जब सिमटै तब एकै एका।
बटक बीज का खेल निहारा, एक बीज का सकल पसारा।
तामें बीज अनंतहिं देखा, गिनूं कहां लग रहा न लेखा।
ऐसे हरि आपा विस्तारा, कहत सुनत देखतहू हारा।
अपरंपार पार नहिं पाऊं, अस्तुति करता मैं सकुचाऊं।
समझ समझ मन में रह जाऊं, चरणदास हो शीस नवाऊं।
कोटिक ब्रम्हा अस्तुति करहीं, वेद कहत प्रभु परे परे ही।
कोटिक शंभू करें समाधा, जान परे नहिं रूप अगाधा।
कोटिक नारद से यश गावें, गुण अगाध कछु अंत न पावें।
तबही कोटिक ध्यान लगावें, हरि कैसो कछु रूप न पावें।
कोटिक ज्ञानी कथें जु ज्ञाना, समझ थके उनहू नहिं जाना।

कोटिक शारद करें विचारा, बुद्धि थकी जब कहा अपारा.
सुर नर मुनि वह भेद न लहिया, सोच २ बक २ थक रहिया.
निर्गुण सर्गुण कहा न जावे, चरणदास शुक देव सुनावे.

दोहा

चरणदास वा रूप के, पटतर दियो न जाहि।
राम सरीखा राम है, और बताऊं काहि॥

चौपाई

बाकी अस्तुति कहा बखानो, जैसा वह तैसा नहिं जानो.
बुधि विचार कर हारा ज्ञाना, अनभै थकी नाहिं पहिचाना.
आदि न अंत मध्य नहिं जाका, दहिना बामा पीठ न आगा.
हरा पीत श्वेत नहिं काला, नारी पुरुष न बूढ़ा बाला.
रूप न रंग महीन न मोटा, नया पुराना बड़ा न छोटा.
नाम रूप किरिया सों न्यारा, नहिं हलका नहिं कहिये भारा.
वाणी चार परे निर्वाना, काहू विधि वह जाय न जाना.
पुहुप गंध नाद ते भीना, गुरु शुकदेव सुनाय जो दीन्हा.

दोहा

कौन लखे को कह सके, अचरज अलख अभेव।
ज्ञान ध्यान पहुंचे नहीं, निर्विकार निर्लेव॥

चौपाई

सुनत अचम्भा मोकों आया, जाके वचन रूप नहिं काया.
निराकार नाहिन आकारा, नहिं अडोल नहिं डोलनहारा.
पांचहु तत्व त्रिगुण तें आगे, अद्भुत अचरज ध्यान न लागे.
नहीं प्रगट नहिं गुप्त न ठाऊं, नहिं समझाय सकूं थक जाऊं.
जैसो आगे में कह आयो, फिर समझो वैसो नहिं पायो.
जो कुछ कहिया नाहीं नाहीं, सो सब देखा वाके माहीं.

सकल सर्वदा वा पहिचानी, चरणदास शुकदेव बखानी.

दोहा

वा में गुण अनगणित हैं, अपरम्पार अगाध।
देखो प्रगटहि के भये, रूप नाम अरु नाद॥

चौपाई

वृक्ष बीज का भेद बताऊं, भिन्न भिन्न कर प्रगट दिखाऊं.
जो कोउ निरा बीज को बूझै, ताको वह निर्गुणही सूझै.
जब समझै तब सब गुण माहीं, तामें डार मूल फल छाहीं.
पूर्ण ब्रह्म ऐसे पहिचानो, निराकार निर्गुण मत जानो.
वे निर्गुण सर्गुण तें न्यारे, निर्गुण सर्गुण नाम विचारे.
अकथ कथा कछु कही न जाई, जो भाषूं सो मूरखताई.
कोई कहो सुनो मन आनो, वैसा ना निश्चय कर जानो.
बड़ बड़ ऋषि मुनि पंडित भारे, चरणदास सब खोजत हारे.

दोहा

निर्गुण वह सर्गुण वही, वह दोनों से न्यार।
जो था सो जाना नहीं, सोचा बारम्बार॥
अनँत शक्ति लीला अनँत, गुण अनन्त बहु भाव।
कौतुक रूप अनन्त है, चरणदास बलि जाव॥
राम कृष्ण पूरण कला, चौबीसों में दोय।
निरगुण सों सर्गुण वही, भक्तों कारण होय॥

राग बिलावल

अलख निरञ्जन अगम अपार ॥टेक॥
एक अनेक भेष बहु कीन्हे, सुन्दर रचना रची सवांर.
निर्गुण हरि सर्गुण है खेलो, अचरज लीला करि विस्तार.
अपनो चरित आपही देखे, ऐसो अद्भुत कौतुक धार.

हिरण्याक्षहि बाराह रूप धर, धरती लाये ताहि संहार.
यज्ञ पुरुष अरु दत्तात्रय पुनि, अरु श्री बद्री पतिहि बिचार.
सनत कुमार ऋषभदेव ध्रुव वर, पृथू मत्स कूरम उदार.
हय ग्रीवा अरु हंस रूप हो, महा बली नरसिंह बल धार.
हरी प्रगट ह्वै गजहि छुटायो, बावन कपिल सरस गुणसार.
मन्वन्तर धन्वन्तर प्रगटे, परशुराम रामचन्द्र मुरार.
पूरण कला ईश तिहुं पुर को, कृष्ण प्रगट ह्वै कन्स पछार.
वेद व्यास अरु बौद्ध कलङ्की, ये सब भे चौबिस अवतार.
प्रति युग माहीं आप प्रगट हो, दुष्ट दलन सन्तन रखवार.
चरणदास शुकदेव स्वामी की, वाकी गति को वार न पार.

दोहा

एक एक सों आगरे, महिमा कही न जाय।
अतिहि रंगीले महल में, आपहि बैठे आय॥

चौपाई

परम रँगीले महल बनाये, तामें राम आपही आये.
नाम रूप गुण न्यारहि न्यारे, गिनत शारदा गणपति हारे.
दो पाये अरु पुनि चौपाये, बहु पाये कुछ कहे न जाये.
वृक्ष रूप अरु पक्षी नाना, कोटि पतङ्गा थिर चर जाना.

दोहा

थावर जङ्गम चर अचर, बहुत छबीली भांति।
राजस तामस सात्विकी, बहु अधीन बहु क्रांति॥
सुर वानर अरु असुर यक्ष, गन्धर्वरु पुनि प्रेत।
सबही महल बराबर, सबही से अति हेत॥

चौपाई

खिरकी नैन चाव सों खोले, मुख द्वारे नाना बिधि बोले.

साक्षात सो हरि को जानो, भवन २ प्रति तेहि पहिचानो.
काया क्षेत्रहि ज्ञानी जाने, क्षेत्र आतमा रूप बखाने.
देही क्षर गीता में गायो, अक्षर जीव खोल दिखलायो.
काया मन्दिर आप रमायो, ताते राम नाम धरवायो.
देह संयोग राम कहलायो, चरणदास शुकदेव बतायो.

दोहा

सूरज चींटी आदि दै, लघु दीरघ के माहिं।
सब में याही आतमा, बाहर कोई नाहिं॥
छोटे भांड़े में करे, छोटा ही जु प्रकाश।
बड़े जु भांड़े में करे, जेता होय उकाश॥
ज्ञानवन्त को मैं दियो, दीपक को दृष्टान्त।
जो वह समझे चाव सों, मिटे तिमिर अरु भ्रान्त॥
जैसेही है पिंड में, तैसे ही ब्रह्मंड।
भीतर बाहर रम रहो, सात द्वीप नव खंड॥

चौपाई

आप लखे ते वाको पावे, जो पै सतगुरु भेद बतावे.
ज्ञान दृष्टि सेती दरशावे, आपा मिटे ब्रह्म ठहरावे.
ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय जहँ नाहीं, ध्याता ध्यान ध्येय मिट जाहीं.
जब हो एक दूसरा नाशय, बन्ध मुक्ति की रहै न संशय.
मृतक अवस्था जीवत आवे, कर्म रहित अस्थिर गति पावे.
तब कोउ मित्ररु बैरी नाहीं, पाप पुण्य की परे न छाहीं.
हर्ष शोक सम होवें दोऊ, रक्षा करो कि मारो कोऊ.
कोऊ हाथ में भोजन देजा, कोई छीन कर योंही लेजा.
दोनों एक बराबर वाके, जग व्यवहार कछू नहिं जाके.
हरि बिन अरु पहिचानन कोई, तिन के इच्छा रहें न दोई.
ज्ञान दिशा ऐसे कर गाई, चरणदास शुकदेव बताई.

दोहा

ज्ञान दिशा आवन कठिन, बिरला जाने कोय।
ज्ञान दिशा तब जानिये, जीवत मृतक जु होय॥

चौपाई

वाचक ज्ञानी बहुतक देखे, ज्ञान लक्षक लेखे लेखे.
ज्ञानी बिगड़े विषयी होई, कथै एक अरु चाले दोई.
बुरे कर्म अवगुण चितलावें, भले कर्म गुण सब बिसरावें.
विषय बासना के रंग राचे, झूठ कपट छलबल मद माते.
इन्द्री वश मन हाथ न आवे, पाप करन को नाहिं डरावे.
ज्ञान कथै अरु बाद बढ़ावे, रहन गहन का भेद न पावे.
ब्रह्म व्रत का आवन भारी, चरणदास शुकदेव बिचारी.

दोहा

उनतीसौ लक्षण लिये, भक्ति सहित हो ज्ञान।
ज्ञान दिशा जब आइ है, करे आतमा ध्यान॥

इति ज्ञान दिशा

---

अथ भक्त दिशा

दोहा

भक्त दिशा अब कहत हैं, बिसरें आपहि आप।
चरणदास यों कहत हैं, छूटें तीनहु ताप॥

अष्टपदी

नवधा भक्ति सम्हार, अंग नव जान ले;
श्रवण चितवन और, कीर्तन मान ले.

सुमिरन बन्दन ध्यान , और पूजा करो ;
प्रभु सों प्रीति लगाय , सुरति चरणन धरो.
होकर दासही भाव , साधु सङ्गति रलो;
भक्तन की कर सेव , यही मत है भलो.
आपा अर्पण देह , धीर दृढ़ता गहो ;
क्षमा शील सन्तोष , दया धारे रहो .
यह जो मैंने कहा , वेद का फूल है ;
योग ज्ञान वैराग्य , सबन का मूल है .
प्रेम भक्ति का तात , पात तीनो नशैं ;
अर्थ धर्म काम मोक्ष , सकल तामें बसें .
जो राखे मन माहिं , विवेक बिचार सों;
पावे पद निर्वाण , बचे जग भार सों .
कहैं गुरू शुकदेव , माया के भाव सों ;
चरणहिदास होय , सुनो वह चाव सों .

राग सोरठ वा गौरी वा आसावरी

साधो नवधा भक्ति करोरे ;
कलियुग में यह बड़ो पदारथ, गहि २ ताहि तरोरे .
जे २ याते भये शिरोमणि, तिन को नाम सुनाऊं ;
बढ़े कथा बिस्तार कहूं तो, या तें सूक्षम गाऊं .
जन प्रहलाद तरो सुमिरन सों, बन्दन तें अक्रूर ;
चरण कमल की सेवा सेती, लक्ष्मी रहत हजूर .
चन्दन चर्चितहू पृथु राजा, उतरो भव जल पारा ;
बलिराजा तन अर्पण कीन्हा, सदा रहैं हरि द्वारा .
परमदास हनुमन्तहु उबरो, उत्तम पदवी पाई ;
सखा स्वभाव तरो है अर्जुन, ताकी महिमा गाई .
मुक्त भयो है परीक्षित राजा, सुनो भागवत पुराना;

श्री शुकदेव मुनी से वक्ता, हुये रूप भगवाना .
ज्ञान योग वैराग सबन सों, प्रेम प्रीति है न्यारी ;
चरणदास ने गुरु कृपा सों, सांची बात विचारी .

इति नवधा भक्ति

---

## अथ प्रेम

### दोहा

नवौं अंग के साध तें, उपजे प्रेम अनूप ।
रनजीता यो जानिये, सब धर्मन का भूप ॥
प्रेम बराबर योग ना, प्रेम बराबर ज्ञान ।
प्रेम भक्ति बिन साधुआ, सब ही थोथा ध्यान ॥
प्रेम छुटावे जगत को, प्रेम मिलावे राम ।
प्रेम करे गति औरही, लै पहुंचे हरि धाम ॥

### चौपाई

दुर्लभ प्रेम हाथ नहिं आवे, प्रभू कृपा कर देय तो पावे.
प्रेम प्रीति के वश भगवाना, सकल शास्त्र में यही वखना.
किसी भक्त हिय प्रेम जु जागे, तो हरि संतत दर्शहि आगे.
प्रेमहि से जग को उपजावे, निर्गुण सर्गुण होहो आवे.
सकल शिरोमणि प्रेमहि जानो, चरणदास निश्चै मन आनो.

### दोहा

हिय के माहीं प्रेम जो, नैनों झलके आय ।
सोई छका हरि रस पगा, वा पग परसो धाय ॥
गद गद वाणी कंठ में, आंसू टपकत नैन ।

वातो विरहिनि राम की, तलफत है दिन रैन ॥
हाय हाय हरि कब मिलें, छाती फाटी जाय।
ऐसा दिन कब होयगा, दर्शन करूं अघाय ॥
बिन दर्शन कल ना परे, मनुआं धरे न धीर।
चरणदास की श्याम बिन, कौन मिटावे पीर॥
पिया बिना तो जीवना, जग में भारी जान।
पिया मिले तो जीवना, नहिं तो त्यागो प्रान ॥
पिय चाहो कै मत चहो, वह तो पिय की दास।
पिय के रँग राती रहे, जग सों रहे उदास ॥
पी पी करते दिन गया, रैन गई पिय ध्यान।
विरहिनि के सहजहि सधे, भक्ति योग अरु ज्ञान ॥
विरहिनि के इक राम बिन, और न कोई मित्त।
आठ पहर चौंसठ घड़ी, पिया मिलन का चित्त॥

इति प्रेम अंग

---

## अथ चारों युग वर्णन

### कुंडलिया

सतयुग सांचा बोलते, परम हंस को ध्यान।
सतवादी सत राखते, सत नहिं देते जान॥
सत नहिं देते जान, प्राण जौ पै तज देई।
निश्चय होती मुक्ति, दरशते राम सनेही॥
शुक देव कहें चरणदास सों, अबही सतयुग जान।
सत बोले सत सों रहो, सत की गहिये आन ॥१
त्रेता में तप साधते, आसन संयम धार।

पांचों इन्द्री रोकते, तब मन जाता हार ॥
तब मन जाता हार, खैंच अनहद में धरते।
कै अपनो ही इष्ट, ध्यान ताही को करते ॥
आप विर्सजन होय, मुक्ति निश्चय कर पाते।
चरणदास शुक देव, तपस्या चाल दिखाते ॥२
द्वापर पूजा वन्दना, प्रेम सहित जो होय।
कहा राजसी मानसी, पूजा कहिये दोय ॥
पूजा कहिये दोय, जैसी जाके मन भावे।
धरे नेम आचार, अंत नहिं चित्त डुलावे ॥
हितकर पूजा कीजिये, द्वापर का यह भेव।
चरणदास निश्चय करो, कहिया गुरु शुकदेव ॥३
कलियुग हरि गुण गाइये, गुणावाद ही सार।
भजन करो मन मगनहो, भय अरु सकुच निवार ॥
भय अरु सकुच निवार, जाति कुल गर्व मिटाओ।
हृदय शुद्ध हो जाय, ईश्वर मन में लाओ।
कथा कीर्तन सों तिरे, कलियुग ही के माहिं।
शुकदेव कही चरणदास सों, तारो गहि २ बाहिं ॥४

इति चारों युग सम्पूर्ण

---

यह तो थोड़ी २ कथा लिखी है, महाराज चरणदास जी का भक्ति उपदेश ग्रंथ तो बड़ा ग्रंथ है, ता में से सूक्ष्म २ वारता लिखी. हस्ताक्षर- पूर्णदास ; श्रोता वक्ता क्षमा करेंगे सम्बत् १९२८.

## दोहा

प्रणऊं श्री शुकदेव को, वाणी कहूं अगाध।

महिमा गाऊं नाम की, सब मिल सुनियो साध ॥
ज्यों की त्योंही कहत हों, कछू न राखूं भेद ।
निश्चय आवे नाम की, छूटे सबही खेद ॥
जनम मरण यमदंड के, गर्भ वास के त्रास ।
नाम रटे सबही छुटे, लख चौरासी गास ॥
कई बार जो यज्ञ करे, योग करे चितलाय ।
चरणदास कह नाम बिन, सभी अफल हो जाय ॥
आठ धातु में गुण नहीं, जो पारस के माहिं ।
तप तीरथ व्रत साधना, राम नाम सम नाहिं ॥
ज्यों सेमल का सेवना, त्यों लोभी का धर्म ।
अन्न बिना भुस कूटना, नाम बिना यों कर्म ॥
छोड़े सबही वासना, हो बैठे निष्काम ।
चरण कमल में चित धरे, सुमिरे रामहि राम ॥
ऐसाही जब सन्त हो, तब रीझै करतार ।
दर्शन दै अपना करे, कभी न छोड़े लार ॥
चार वेद किये व्यास ने, अर्थ बिचार बिचार ।
तामें निकसी भक्तिही, राम नाम निज सार ॥
निज कहिया शुकदेव का, सुनिया प्रेम प्रतीति ।
तिन जग में परगट कियो, जैसी चाहिय रीति ॥
ब्रह्म हत्या अरु नारि की, वालक हत्या होय ।
राम नाम जो मन वसै, सब को डारे खोय ॥
हिय आये जग दुख टरे, कंठ पहुंच अघ जाय ।
मुख तें बोले आयकर, ताकी कौन चलाय ॥
ऐसा है हरि नामही, मोहि राम की सौं ।
जाकी होवे परखही, सो समझै ह्यां लौं ॥
विन समझै पातक नशै, समझ जपे से मुक्ति ।

चरणदास यों कहत हैं, जो कोई जाने युक्ति ॥
नाम ही ले जल पीजिये, नामही लेकर खाय।
नामही लेकर बैठिये, नामही ले चल जाय ॥
जब लग जागे राम कह, तन मन सों यह चित्त ।
चरणदास यों कहत हैं, हरि बिन और न मित्त ॥
तेरा तो कोइ है नहीं, मात पिता सुत नार ।
तातें सुमिरो राम को, ऐ मन बारम्बार ॥
जा कारण भटकत फिरे, घर घर करत सलाम ।
तेरे तो वे हैं नहीं, ऐ मन सुमिरो राम ॥
जीवत स्वारथ ही लगे, मृतकहि देय जराय ।
ऐ मन सुमिरो राम को, धोखा काहि पराय ॥
हाथी घोड़े धन घना, चन्द्र मुखी बहु नार ।
नाम बिना यम लोक में, पावे दुःख अपार ॥
जब लग जीवे राम कह, रामहि सेती नेह ।
जीव मिलेगा राम में, पड़ी रहेगी देह ॥
अचरज साधन नाम का, भक्ति योग का जीव ।
जैसे दूध जमाय कर, मथकर काढ़े घीव ॥

कुंडलिया

आठ मास मुख सों जपे, सोलह मास कंठ जाप ।
बतिस मास हिरदय जपे, तनमें रहे न पाप ॥
तनमें रहे न पाप, भक्ति का उपजे पौधा ।
मन रुक जावे जहां, अपर बल कहिये योधा ॥
शुकदेव कही चरणदास सों, यही भेद तत्वसार ।
बहुरिहु आवे नाभि में, ताका कहूं बिचार ॥

दोहा

पांच बरस जप नाभिसों, रग रग बोले राम।
देह जीव निज भक्त हो, पहुंचे हरि के धाम॥
त्रिकुटी में जपराम को, तहां उजाला होय।
श्वाश माहिं के जपे तें, दुबिधा रहे न कोय॥
गगन मंडल में जाप कर, जित है दशवां द्वार।
चरणदास यो कहत है, पहुंचे हरि दरबार॥
नाशा अग्रे जाप कर, देखे नूर अगाध।
बहुतक अचरज अरु खुले, चरणदास कह साध॥
नाम उठाकर नाभि सों, गगन माहिं ले जाय।
तहां होय परकाश ही, शुकदेव दियो बताय॥
मनही मनही जप करे, दर्पण उज्वल होय।
दर्शन होवे राम का, तिमिर जाय सब खोय॥
कूक २ कर नाम जप, छुटे सात अरु पांच।
जासों मन ठहरा रहे, चरणदास कह सांच॥
सुरति माहिं जो जप करे, तन सों न्यारा जौन।
मिले सच्चिदानन्द में, गहे रहे जो मौन॥
सकल शिरोमणि नाम है, सब धर्मन के माहिं।
अनन्य भक्ति वह जानिये, सुमिरन भूले नाहिं॥
आन धर्म माने नहीं, आन देव नहिं ध्यान।
ऐसी भक्ति अनन्य को, कोई पावे जान॥
पतिब्रता वह जानिये, आज्ञा करे न भंग।
पिय अपने के रंग रतै, और नशै बेढंग॥
अपने पिय को सेइये, आन पुरुष तज देह।
पर घर नेह निवारिये, रहिये अपने गेह॥
आज्ञाकारी पीव की, रहे पिया के संग।

तन मन सों सेवा करे, और न दूजो रंग ॥
रंग होय तो पीव को, आन पुरुष विष रूप ।
छांह बुरी पर धर्म की, अपनी भल है धूप ॥
अपने घर का दुख भला, पर घर का सुख छार ।
ऐसे जाने कुल बधू, सो सतवन्ती नार ॥
पति की ओर निहारिये, औरन सों कह काम ।
सब देवन को छोड़ के, हिये जपे हरि नाम ॥
खसम तिहारा राम है, इत उत भक मत मार ।
चरणदास यों कहत है, यही धारणा धार ॥
यह शिर नवै तो राम को, नाहीं गिरियो टूट ।
आन देव नहिं परसिये, यह तन जावे छूट ॥
पतीब्रता को ब्रत गहो, व्यभिचारहि तन टार ।
पति पावे सब दुखन से, पावे सुखहि अपार ॥
जब तू जाने पीव ही, वहि अपना कर लेह ।
परम धाम में राख के, बांहि पकड़ सुख देह ॥
यही सिखाये देत हौं, धारो हिय के माहिं ।
ऐसा पौधा बोइये, जाकी बैठो छाहिं ॥
सतवादी सत सों रहे, सतही मुख सों बोल ।
एक ओर हरिनाम रख, एक ओर जग तोल ॥
सभी निचोरे कहत हूं, भक्ति करो निष्काम ।
कोटि तपस्या यही है, मुख सों कहिये राम ॥
राम नाम मुख सों कहो, राम नाम सुन कान ।
रोम रोम हरि को रटो, ऐसी गहिये बान ॥
विद्या माहीं वाद है, तप के माहीं ऋद्धि ।
राम नाम में मुक्ति है, योग माहिं यह सिद्धि ॥
तातें त्यागो बासना, राखो रामहि नाम ।

कोटि बन्ध छुट जायँगे , पहुंचो हरि के धाम ॥
राम नाम में ये सबै, ऋद्धि सिद्धि अरु मोक्ष ।
ऐसा इष्ट सम्हारिये , चरणदास कहै सोक्ष ॥
जासु किया सबही बना, सात द्वीप नव खंड ।
चरणदास यों कहत हैं, तीन लोक ब्रह्मण्ड ॥
तो कारण सब कुछ किया , नाना बिधि सुख दीन ।
तैं वाको जाने नहीं , नाम न कबहूं लीन ॥
अब की अवसर फिर बनो, पाई मानुष देह ।
चरणदास यों कहत हैं , राम नाम ही लेहु ॥

कवित्त

नाम के प्रताप शिवरी सुरन तें सरस करी ;
नाम के प्रताप अधम लोक को पठायो है .
नाम के प्रताप अजामील को बिमान आयो ;
नाम के प्रताप गज ग्राह से छुटायो है .
नाम के प्रताप सब दीनन को दुःख हरो ;
नाम को प्रताप शुकदेव जी दृढ़ायो है .
सोई नाम बास अब आश लगो चरणदास ;
सोई नाम चार वेद विमल बिमल गायो है .

दोहा

नाम अंग महिमा अधिक, मोपै कही न जाय ।
पांच प्रेत अब कहत हूं , तिन कों सुन चितलाय ॥
योग तपस्या भक्ति को , ज्ञान बिगाड़न पांच ।
जीवत दुख दे जगत को , मुये नरक दे आंच ॥
काम क्रोध मद लोभ से , और पांचवां गर्ब ।
राज करे वसुधा विषय, इन वश कीन्हो सर्ब ॥

अथ काम अंग

काम बली वर्णन करूं, जिन जीते बलवन्त.
जाका बख्शी ना रहै, जिन जीते गुणवन्त;

राग सोरठ

साधो पर तिरिया सों डरिये ॥टेक॥
जाके दरश परस के कीन्हे, जीवत नरक में परिये.
गोतम घरनी सुन्दर सुन के, इन्द्रासन तज आयो.
सो गति भई जगत सब जानी, भलो कलङ्क लगायो.
शृंगी ऋषि वन में तप कीन्हो, सुरपति देख डरायो.
रम्भा भेज हरो सत ताको, सबहीं तेज सिरायो
दैत्य देवता नर जो हुये, पुनि नारी देख लुभायो.
ताको फल ऐसोही पायो, अजहूं कुयश सुनायो.
चरणदास शुकदेव गुरु ने, दे उपदेश बचायो.
यती सती कोइ हाथ न आये, कामी पकड़ नचायो.

सोरठ

अरे नर पर नारी मत तकरे.
जिन २ औरत को डाइन की बहुतन को गई भखरे.
दूध आक को पात कटैआ, झाल अग्नि की जानो.
सिंह सुछारे विष कारे को, ऐसे तोहि पहिचानो.
खानि नर्क की अति दुखदायी, चौरासी भरमावे.
जन्म जन्म को दाग लगावे, हरि गुरु तुरत छुड़ावे.
जग में फिट २ महिमा खोवे, राखे तन मन मैला.
चरणदास शुकदेव बतावे, सुमिरो राम सुहेला.

दोहा

नर नारी सब चेतियो, दीन्हों प्रगट दिखाय।

पर तिरिया पर पुरुष ही, भोग नर्क को जाय ॥
पर नारी कै आपनी, दोनों बुरी बलाय ।
घर वाहर की आग ज्यों, देवे हाथ जलाय ॥
चटक मटक सब छोड़ दे, देही रूप विगार ।
देख न कोई रीझ है, ना होवे लगवार ॥
यही ढाल है जगत की, लगे शस्त्र नहिं काम ।
आठ अंग हैं काम के, तिन सों रह निष्काम ॥
काम काम में आय कर, फिर आवत है नैन ।
बहुर हिये में आय के, लगे बहुत दुख दैन ॥

चौपाई

वाही काम बुरा रे भाई, सब देवन जिन ने बौराई.
वह पंचन में नाक कटावे, वाही जूती मार दिवावे.
मुंह काला कर गधे चढ़ावे, लोग अनेक तमाशे आवे.
झिड़का डोलत है ज्यों कुत्ता, सब लोगन के मन सों उत्ता.
नीके कोइ मुख से नहिं बोले, शरमिन्दा सोइ जग में डोले.
वह जीवत है नर्क मँझारी, सुन २ चेतो सब नर नारी.
काम अंग तज दीजे, सत संगतिही कर लीजे.
ऐसा कहें चरण ही दासा, हरि भक्ती में कीजे वासा.

दोहा

तन मन जारे काम ही, चित कर डामा डोल ।
धर्म शर्म सब छोड़कर, रहे आप हिय खोल ॥

चौपाई

वह दया छमा को मारे, यत सत को पकड़ पिछारे.
शुचि नेम को दूर कढ़ावे, मुख ऊपर धूल उड़ावे.
जग भीतर महिमा खोवे, पापों की माला पोवे.
वह धीरज नाहीं राखे, वह मुख सों झूठी भाखे.

वह चाल चले विपरीता, कर विषय भोग की चीता.
काम बली जहँ आवे, अरु बहुतक अवगुण लावे.
यह मैन खोट का पूरा, कोइ जीते गुरु मुख शूरा.
साधु भक्त वह गुनिया, जिन काम दुष्ट को हनिया.
बेत कहे शुक देवा, सब चरणदास सुन लेवा.

दोहा

सुन के जो चित में धरे, फेर चले वा चाल।
खांड़ा पकड़े शील का, काम हने ततकाल॥

अथ क्रोध अंग

क्रोध महा चंडाल है, जानत हैं सब कोय.
ताके अँग वर्णन करूं, सुनियो सुरति समोय;

चौपाई

क्रोध भूत के चरित सुनाऊं, भिन्न भिन्न प्रगटहि दिखलाऊं.
क्रोध भूत जब जापर आवे, तन मन की सब सुध विसरावे.
नयना लाल बदन सब कारो, रोम रोम व्यापे हत्यारो.
अति चंडाल नीच अति घोरी, अति विपरीत बुद्धि कर ओरी.
अपना हाथ आप को मारे, अपने कपड़े आपहि फारे.
मुहड़े झाग मरोरे हाथा, कहै बहुती फूहड़ बाता.
हांके बहुत आप को गाली, जेवन आवे पटके थाली.
कबहूं शस्तर मारन लागे, कबहूं कूये पड़न भागे.
भली कहे तेहि भोग सुनावे, बुरे भले पै ईंट चलावे.
सबल देख शीला हो जावे, निबल देख बहु द्वन्द्व मचावे.
या का यत्न करो मन भावे, चरणदास शुक देव बतावे.

दोहा

जिहि घट आवे धूप सों, करे बहुतही ख्वार ।
पति खोवे सुधि को हने, काह पुरुष क्या नार ॥

चौपाई

वह विध को भिष्टल कर डारे, वह मारहि मार पुकारे ।
वह सब तन हिंसा छावे, कहिं दया रहन नहिं पावे ।
वह गुरु से डोले ऐंड़ा, साधों से बोले वेंड़ा ।
वह हरि सों नेह छुटावे, वह नर्क माहिं ले जावे ।
वहि आतम घाती जानो, वह महा मूढ़ पहिचानो ।
सोटों की मार दिलावे, वह कबहुंक शीश कटावे ।
वहि नीच कमीना कहिये, ऐसे सों डरता रहिये ।
वहि निकट न आवन दीजे, अरु क्षमा अंक भर लीजे ।
जब क्षमा आय किय थाना, तब सबही क्रोध हिराना ।
कह गुरु शुकदेव खिलारी, सुन चरणदास उपकारी ।

अथ मोह का अंग

दोहा

क्रोध अंग वर्णन किया, कहो मोह का अंग ।
जाहि लगे दुख दे घना, कबहु न छोड़े संग ॥
माया मोह बिछाइया, जाल सम्हारि सम्हारि ।
आय आय तामें फंसें, बहुत पुरुष अरु नारि ॥
फसें आयकर चाव सों, लेन गया नहीं कोय ।
चरणदास यों कहत हैं, पछताये का होय ॥
छूट सके नहिं जाल सों, मिरगा ज्यों अकुलाय ।
कूद कूद निकसो चहै, त्यों त्यों उरझत जाय ॥
मोह शहद सम जानिये, मक्खी सम जिय जान ।
लालच लागे जिते फंसे, शीश धुने अज्ञान ॥

## चौपाई

यह माया सब को मोहे, वश होय न ऐसो कोहै।
यह बहुत शोहनी लागे, सब ही नर नारी पागे।
अरु काम क्रोध मद लोभा, पुनि मान बड़ाई शोभा।
अरु पांचों इन्द्री जानो, सब माया रूपी मानो।
अरु पांच तत्व गुण तीनो, सो माया ही को चीन्हो।
वह मकर और छल जाने, अरु पहिर २ बहु बाने।
यों गुरु शुकदेव जनावे, सब माया खेल दिखावे।

## दोहा

जेते सुख संसार के, सब ही माया जार।
तामें दो कणिका धरे, एक द्रव्य अरु नार॥
लालच लागे चाव सों, गिरें आय कर लोय।
फँसें आप से आपही, गहि नहिं लाया कोय॥
पांचों इन्द्री सों लखे, सो माया आकार।
वाही सेती सब भयो, जहँ लग है साकार॥

## चौपाई

अरु माया रूप अनन्ता, कोई जाने साधू सन्ता।
कहा सुना अरु देखा, सब माया रूप विशेखा।
आठ सिद्धि नव माया, जहँ योगी तपी भुलाया।
अरु माया फन्दे माहीं, सब आय जीव फँस जाहीं।
वे नर्क माहिं दुख पावें, यम छप्पन त्राश दिखावें।
फिर भुगतें लख चौरासी, वे गर्भ योनि के वासी।
वे पशु देही धर धावें, नहिं मुक्ति ठिकाना पावें।
कहै चरणदास नर चेतो, तज माया ही सों हेतो।

### दोहा

जगत वासना के तजे, माया कौन बसाय।
कर्म छुटे मिट जीवता, मुक्ति रूप हो जाय॥
फसे न इन्द्री स्वाद में, चरण कमल में ध्यान।
पर आशा कोई ना रहे, लगे न माया बान॥
सब से ऊंचो ज्ञान है, ता से ऊंचो ध्यान।
ध्यान मिलावे पीव को, पावे पद निर्बान॥
ध्याता ध्येय कैसे मिले, होय न बिच में ध्यान।
तीनों एकहि हुये बिन, लहे न पद निर्बान॥
इन्द्रिन के बश मन रहे, मन के बश रह बुद्धि।
कहो ध्यान कैसे लगे, ऐसी जहां बिरुद्धि॥
जित जित इन्द्री जात हैं, तित तित मन ले जात।
बुद्धि भी संगहि जात है, यह निश्चय कर बात॥
जित इन्द्री मनहू गया, रही कहां सो बुद्धि।
चरणदास यों कहत है, कर देखो तुम शुद्धि॥
इन्द्री मन के बश करे, मन कर बुधि के संग।
बुधि राखे हरि पद जहां, लागे ध्यान अभंग॥
इन्द्री मन मिल होत है, विषय वासना चाह।
उपजे जैसे काम ही, नारी मिल अरु नाह॥
न्यारे तत्वन के रहे, होत न कछू उपाध।
जुदे राख मन इन्द्रियन, गुरु गम साधन साध॥
इन्द्रिन सों मन कर जुदा, सुरति निरति सों शोध।
विषय वासना उगे नाहिं, चरणदास कह बोध॥
इन्द्री रोके तें रुकें, और यत्न नाहिं कोय।
मन चञ्चल रिझवा रहे, रसिक सवादी सोय॥
चलो करे थिर ना रहे, कोटि यत्न कर राख।

यह तबही बश होयगा, इन्द्रिन के रस नास ॥
न्यारे न्यारे चहत हैं, अपने अपने स्वाद ।
इन पांचों में प्रीति है, कछू न वाद बिवाद ॥
दुर्जन के फूटे बिना, तेरी होय न जीत ।
चरणहिदास बिचार कै, ऐसी गहियो रीत ॥
जुदी जुदी पांचों कहूं, एक एक का भेद ।
जो कोई इन को बश करे, सबही छूटे खेद ॥

अथ नेत्र विषय

## चौपाई

यह इन्द्री आंख बिचारो, सो देत महा दुख भारो .
वह राग दोष उपजावे, अरु हर्ष शोक ले आवे .
सो रूप माहिं फँस जावे, तन मन में व्याधि उठावे .
वह देय और के हाथा, कर डारे बहुत अनाथा .
वे फन्दे माहीं डारे, ले काम अग्नि में जारे .
यह डोले दौरी दौरी, कर चित बुधि की गति औरी .
यह दुष्ट सदा की बैरी, जो सुरति बिगाड़े तेरी .
यह पानिय सभी घटावे, यमपुर के त्रास दिखावे .
कोइ साधु शूरमा मोड़े, जग सेती नाता तोड़े .
यह कहे गुरू शुकदेवा, ये आंख महा दुख देवा .

## दोहा

दीपक त्रिया निहार के, गिरे पतंग जिमि जाय ।
कछू हाथ आवे नहीं, उलटो आप जलाय ॥
ऐसी इन्द्री आंख की, सो अपनी नहिं होय ।
गुरु शुकदेव बतावही, चरणदास सुन लोय ॥
दर्शन कीजे साधु का, कै गुरु का कर लोय ।

जहां तहां ब्रह्म देखिये, दुबिधा दुर्मति खोय ॥
शत्रु मित्र कर एकसा, एकहि रूप कुरूप ।
ऐसी होवे दृष्टि ही, तब ठहरे मन भूप ॥

कान विषय

### चौपाई

सुन दूसरि इन्द्री काना, सो गुरु प्रताप सों जाना.
जब सुन काम रस रीता, तब भूले पढ़ सुन गीता.
मन उपजे काम तरंगा, तब होत ध्यान में भंगा.
फिर लोभ बचन सुन औरे, तब तृष्णा चहुं दिशि दौरे.
मन ठग चोरी कर लाऊं, कहीं गड़ा दबाही पाऊं.
फिर सुने बड़ाई कुल की, तब पुलकि हँसत है मुलकी.
जब अपनी सुने बड़ाई, तब अधिक होत अकड़ाई.
फिर करन बड़ाई लागे, सोता ज्यों कूकर जागे.
जब उपजे बहु अभिमाना, तब नेक न होवे नान्हा.
पर निन्दा बहुत सुहावे, नाहिं और बड़ाई भावे.
सुन उपजे तामस अंगा, तब करे बहुत ही दंगा.
कभी सुने मोह की बैना, लगे हर्ष शोक दुख दैना.
जो हिरण कान बश हूवा, तो तीर लाग कर मूवा.
शुकदेव कहें यह जानो, सब कान बिकारहि मानो.

### दोहा

मन दे सुनिये हरि कथा, हरि यश सुनिये कान ।
ताहि बिचार जु कीजिये, होय भक्ति का ज्ञान ॥
सुन सुन उपजे सुबुधि ही, लागे हरि का रंग ।
सुन सुन उपजे कुबुधि ही, खोटी उठत तरंग ॥
ऐसी इन्द्री कान की, जाके युगुल स्वभाव ।

कथा कीर्तन सुनहु नित , कर कर कोटि उपाव ॥
बचन सुना गुरु साधु के , मन को लायो मोर ।
विषय वासना सों निकस , आवे हरि की ओर ॥
इन्द्री सब मैंने कहीं , दोनों अंग दिखाय ।
जिह्वा इन्द्री कहत हों , चरणदास चित लाय ॥

जिह्वा विषय

कुटिल जु इन्द्री जीभ की , षट रस चाहे स्वाद ।
या बश हो अवगुण करे , जन्म जाय बरबाद ॥

चौपाई

यह बहुत चटोरी कहिये , याही तें डरते रहिये .
यह चोरी भी करवावे , पुनि बन्दी में डलवावे .
यह अमल खान सिखलावे , अरु गाली मार दिलावे .
अरु अतिशय झूठ बोलावे , हो मीत नर्क ले जावे .
यहि कारण खेलें जूआ , दुनिया में फिट फिट हूआ .

दोहा

जिह्वा के जीते बिना , गये ज़न्म सब हार ।
चरणदास यों कहत हैं , भये जगत में छार ॥
बन्सी डाली ताल में , मछली लागी आय ।
जिह्वा कारण जी दियो , तड़प २ मर जाय ॥
तजा न जिह्वा स्वाद को , वा सँग दीन्हा प्राण ।
जो कोई ऐसा जगत में , सो अज्ञानी जान ।
या सों ले हरि नाम ही , गुणावाद ही भाख ॥
जो बोले तो सांच ही , नाहीं मुख में राख ।
मीठा वचन उचारिये , ममता सब से बोल ॥
हिरदय माहिं विचार के , मुख बाहर तब खोल ।

बिना स्वादही खाइये, राम भजन के हेत ॥
चरणदास जन शूरमा, ऐसे जीते खेत ।
रसना जीते भक्त जो, सो योगी सो साध ॥
अगम पन्थ वह पग धरे, पहुंचे देश अगाध ।

## अथ त्वचा विषय

त्वचा कि इन्द्री काम की, नित उठ खेले दाव ।
पशु पत्ती अरु सुर असुर, फँसे आयकर चाव ॥

### चौपाई

यही त्वचा को मल २ मांजे, काजल सुरमा बहु विधि आंजे.
अरु सपरस की विधि ठानें, सब याही सों सुख मानें.
अब फँसे आयकर दोई, तब निकसन कैसे होई.
अरु एक एक ने बांधा, यह समझै नाहीं आंधा.

### दोहा

त्वचा स्वाद वश सब भये, फँसे जगत में जाहिं ।
जो कोउ निकसन को चहे, सोऊ निकसे नाहिं ॥
धोखे की हथिनी लखी, आयो गज ललचाय ।
खन्दक माहीं रुक गयो, शीश धुने पछिताय ॥
कछू हाथ आयो नहीं, परो फन्द में जाय ।
मैन महावत वश परो, शिर में अंकुश खाय ॥
ऐसे ही यो नर फँसो, देख कामिनी रूप ।
जन्म गवायो दुख भरो, परो अविद्या कूप ॥
करी नहीं हरि भक्ति को, गुरु सेवा तज दीन ।
सुनी न हरि की गुण कथा, सत संगति नहिं कीन ॥
फिर ऐसा कब होयगा, पावे मानुष देह ।
अब तो चौरासी विषे, जाय कियो उन गेह ॥

## चौपाई

शीत उष्ण का दुख जिन मानो, कोमल कठिन एक कर जानो।
तपसों काया उमर गँवावो, अष्ट सुगन्ध निकट नहिं जावो।
आन त्वचा सपरस नहिं करई, काम अग्नि हिय में नहिं जरई।
काया तावन करनी ठानो, यही तपस्या मन में आनो।
त्वचा सु इन्द्री जीतो ऐसी, मैं यह भेद बताऊं जैसी।

## दोहा

त्वचा जु इन्द्री बश किये, छूटे काम कलेश।
तत सत शील सन्तोष सों, लगे न माया लेश॥
त्वचा अंग पूरा कियो, कहूं नाशिका अंग।
शिक्षा गुरु शुकदेव की, कहूं तासु परसंग॥

### नाशा विषय

वास आश गुंजत फिरो, बैठो कमल मँझार।
सूर छिपे तें मुंद गयो, अब शिर दे दे मार॥
भली वास सें नहिं हरष, दुर्गन्धहि न रिसाय।
ऐसे जीते नाशिका, मन भौंरा ठहराय॥
समझन को दुक एक है, भूलन को दुक लाख।
गुण अवगुण इन्द्री कहे, सो तू मन में राख॥
जो इन्द्रिन के वश हुआ, बांधा नर्कहि जाय।
चौरासी भरमत फिरे, गर्भ योनि दुख पाय॥
भक्ति माहिं चित ना लगे, सबही बिगड़े काम।
जो इन्द्रिन के बश भयो, ताको मिले न राम॥
चरणदास यों कहत हैं, इन्द्री जीतन ठान।
जग भूले हरि को मिले, पावे पद निर्बान॥

## चौपाई

इन्द्री जीते सो ब्रह्म ज्ञानी, सिद्ध सोई जिहि मिटै ग्लानी
सो ध्यानी सो हरिका दासा, अमर लोक में पावे वासा
इन्द्री जीते सोई सिद्ध, अष्ट कला अरु पावे ऋद्ध
इन्द्री जीते सो सतवन्ता, इन्द्री जीते गुणी महन्ता
इन्द्री जीते सो संन्यासी, इन्द्री जीते सोई उदासी
इन्द्री जीत मिले भगवन्ता, इन्द्री जीते जीवन मुक्ता
सुन चरणदास कह गुरु शुकदेवा, इन्द्री जीते सो गुरु देवा

## दोहा

मन इन्द्रिन के वश भयो, होय रहो बे ढंग।
आप बिसारो जग रलो, हुयो जुनाना रंग॥

## मन विषय

आवे तरंग जु क्रोध की, होत जु वाके रूप।
काम लहर कबहूं उठे, ताके होत स्वरूप॥
लोभ कामना जब उठे, तबै लोभ रँग होय।
मोह कल्पना के उठे, मोह वर्ण हो सोय॥
मन ही खेले खेल सब, मनहि करे अभिमान।
मनही यह जग हो रहो, अब सन मन को ज्ञान॥

## चौपाई

कबहूं यह मन होवे ग्रेही, पुनि कबहूं हो जात विदेही।
कबहूं यह मन होवे रागी, कबहूं यह मन होवे सोगी॥
कबहूं यह मन होवे नारी, कबहूं यह मन राखे ख्वारी।
कबहूं यह मन दौड़ा डोले, कबहूं यह मन टेढ़ा बोले॥
कबहूं यह मन कुल का ऊंचा, कबहूं यह मन नकटा बूचा।
कबहूं यह मन द्वन्द मचावे, कबहूं छमा शील धर आवे॥
कबहूं यह मन होवे दाता, कबहूं करे सूम सी बाता।

चरणदास कह मन को जानो, ऐसी बिधि मन को पहिचानो.

दोहा

बहु रूपी बहु रंगिया, बहुत रंग बहु चाव ।
बहुत भांति संसार में, कर कर घने उपाव ॥

चौपाई

यह मन राजा होवे भोगी, यह मन त्यागी होवे योगी.
यह मन होय विवेकी ज्ञानी, यह मनतपियाजपियाध्यानी.
यह मन होवे देवी देवा, या मन का कोइ लहे न भेवा.
यह मन प्रेमी नेमी जन ही, चरणदास कह सब कुछ मन ही.

दोहा

या मन के जाने बिना, होय न कबहूं साध ।
जगत वासना त्रिन छुटे, लहे न भेद अगाध ॥
तैं मन को जाना नहीं, कर कर याकी सार ।
चौरासी छूटा नहीं, उपजा बारम्बार ॥

चौपाई

मन को सत संगति ले जायो, कानों हरि यश कथा सुनायो.
भांति भांति के रँग ललचायो, तो हरि के रँग क्यों न रंगायो.
तो या को ज्ञानी ही कीजे, जगत ओर को जान न दीजे.
कै दीजे हरि की ही ध्यानू, राम भक्ति में याको सानू.
कै कीजे यहि योगी पूरा, याहि सुनायो अनहद तूरा.
या मन को कीजे बैरागी, या को कीजे सर्वस त्यागी.
जग रँग उतर ब्रह्म रँग लागे, तातें कर्म धर्म भय भागे.
चरणदास शुकदेव बतावे, मन फेरन की राह दिखावे.

दोहा

मन ने आप गँवाइया, ज्ञान बुझाया दीव ।

कर्म लगा भरमत फिरा, मिला न अपना पीव ॥
पांचै इन्द्री स्वाद में, भया निपट आधीन।
राज्य बड़ाई सब नशी, हुआ मूढ़ मति हीन ॥
मन निश्चल आवे नहीं, निकस २ भय जाय।
चरणदास यों कहत हैं, काहू की न बसाय ॥
पच हारे ज्ञानी तपी, रहे बहुत शिर मार।
चित्त प्रेत सों डर लगे, लै डोबै मँझ धार ॥
यह मन भूत समान है, दौरत दांत पसार।
बांस गाड़ उतरे चढ़े, सब बल जावे हार ॥
जो आतम में मन धरे, होय जहां लव लीन।
ठहर रहे फिर ना चले, सकल बिकल है छीण ॥
भाजे जान न दीजिये, घेर घेर कर लाव।
या मन को परचाय के, ध्यानहिं माहिं लगाव ॥
और कहूं बिधि दूसरी, सुनिये चित्त लगाय।
राम नाम मनसों जपो, चंचलता थक जाय ॥
पवन रुके जब मन थके, और दृष्टि ठहराय।
ऐसी साधन साधिये, गुरु गम भेद मिलाय ॥
इन्द्री रोके मन रुके, और उतम बिधि येहि।
चरणदास यों कहत हैं, यह साधन कर लेहि ॥
इन्द्रिन को मन बश करे, मन को बश कर पौन।
अनहद बश करे वायु को, अनहद को ले तौन ॥
याको नाव समाधिही, मन तामें ठहराय।
जन्म जन्म की वासना, ताको दग्ध कराय ॥
इन्द्री पलटे मन विषय, मन पलटे बुधि माहिं।
बुधि पलटे हरि ध्यान में, फेर होय लै जाहिं ॥
दग्ध बासना होय जब, आवा गमन नशाय।

कहें गुरू शुकदेव जी, मुक्ति रूप हो जाय॥
मन के सबरे भेद ही, ताको दियो जताव।
चरणदास अब कहत हों, झूंठ सांच को न्याव।

अथ झूठे का वर्णन

दोहा

जो कोउ बोले झूठ ही, ताको लागे पाप।
जन्म जन्म छूटे नहीं, दुखतें तीनों ताप॥

चौपाई

झूठा बोल महा अपराधी, धर्म छूट उठ लागहि ब्याधी.
झूठा सौ सौ सौगन्द खाय, झूठा लेवे कर्म लगाय.
झूठ पराया बुरा जु करई, झूठा जग में गिर कर रहई.
झूठे की परतीत न होई, झूठा बोल न बोलो कोई.
झूठा हरि की भक्ति न पावे, झूठा घोर कुंड में जावे.
झूठे को लागे यम मार, झूठा चौरासी में ख्वार.
झूठ बचन का भारी दोषा, झूठे का होवे नहिं मोषा.
झूठे को नहिं गुरू न रामा, झूठे को नाहीं विश्रामा.
चरणदास शुकदेव बतावें, झूठे सभी नर्क में जावें.

दोहा

झूठे के मुंह दीजिये, नौसादर को वाय।
डरा करे सकुचा रहे, वह शर्मिन्दा आय॥

सांच वचन

दोहा

सांच बिना साधू नहीं, कबहुं न मिल हैं राम।
सांच बिना गति ना लहे, पावे ना निज धाम॥

सत २ मुख सों बोलिये, सतही चलिये चाल।
सतही मन में राखिये, सतही रहिये नाल ॥
सांचे को ग्रह नहिं लगे, सांचे को नहिं दाग।
सांचे श्राप न लागही, सब दुख जावे भाग ॥
बड़ी तपस्या सांच है, बड़ा ब्रत्त है सांच।
जासों पातक सब जलें, बचे गर्भ की आंच ॥
जाका बचन न मड़त है, सांचे सब व्यवहार।
चरणदास त्रैलोक में, कभी न आवे हार ॥
सांचे की पदवी बड़ी, साधू दुष्टन माहिं।
दोनों अस्तुतिही करें, निन्दक कोई नाहिं ॥
चरणदास की सीख सुन, यही राख मन माहिं।
सत्य बचन मुख जो कहैं, भवसागर तर जाहिं ॥

## चौपाई

जो सांचा हो सुमरन करई, आप तरे औरन ले तरई.
सत वादी की पति है सांची, ताको लगे न दिव की आंची.
सांचा चोर चुराया घोड़ा, परमेश्वर ताका रग मोड़ा.
और चोर चोरी सों गहा, सांच प्रताप अचम्भा महा.
लाख बात का एकहि जोरा, सांच पुरुष सबही शिर मोरा.

## दोहा

कथा सुनी व्रत हू किये, तीरथ किये अघाय।
गुरु मुख हूजेही बिना, जप तप निष्फल जाय ॥

### गुरुमुख लक्षण

## चौपाई

अब गुरुमुख क लणक्त गाऊं, जुदे जुदे कर सब समझाऊं.
इन को समझ धरे हिय कोई, पूरा गुरुमुख कहिये सोई.

प्रथम गुरू से झूठ न बोले, खोटी खरी करे सब खोले.
दूजे गुरु को पै न लगावे, निश्चय गुरु के चरण मनावे.
तीजे आज्ञाकारी जानो, इन लक्षण गुरुमुख पहिचानो.
जो कोइ गुरु का लेवे नाम, ताको निहुरे करो प्रणाम.
जो कहुं देखे गुरु को श्वाना, ताको जाने गुरू समाना.
चरणदास शुकदेव बखाने, गुरु भाई को गुरु सम जाने.

## दोहा

गुरु भाई को पूजिये, धरिये चरणन शीश।
चरणोदक पुनि लीजिये, गुरु मति विस्वा वीश॥

## चौपाई

जो कहुं बस्त्र गुरू का पावे, हिये लाय दृग चूम छुवावे.
गुरू देश को मानुष आवे, करे परिक्रमा बलि २ जावे.
कहे दया कर दर्शन दीने, मेरे पाप भये सब क्षीणे.
जो कबहूं गुरु द्वारे जैये, देखत पौरि बहुत हरषैये.
द्वाई से दंडवत जु कीजे, करके दर्शन सर्वस दीजे.
फिर ठाढ़ा रहे जोरे हाथा, बैठे जब आज्ञा दें नाथा.
जो बोले सो मन में धरिये, अपने अवगुण सबही हरिये.
चरणदास शुकदेव बतावे, ऐसा गुरुमुख राम रिझावे.

निन्दा फल

## दोहा

साधुन की निन्दा बुरी, मत कीजे कोइ भूल।
सब जग में दुख पाय कर, रहे नरक में भूल॥

## चौपाई

साधु का निन्दक तन मन दुखी, साधु का निन्दक नाहीं सुखी.
निन्दक साधु दरिद्री होई, निन्दक डाले सर्वस खोई.

साधु का निन्दक नर्क मँझारी, निश्चय खावे यम की मारी.
साधु का निन्दक पूरा पापी, साधु का निन्दक डूबे आपी.
मूरख होय सो निन्दा करे, साधु सन्त का अवगुण धरे.
साधु का निन्दक श्वान समान, साधु का निन्दक शूकर जान.
साधु राम की कहिये देह, निन्दक के मुख माहीं खेह.
चरणदास निन्दा तज दीजे, भक्तों की अस्तुतिही कीजे.

दोहा

साधुन की अस्तुति किये, हरि की अस्तुति होय।
भक्तन की निन्दा किये, प्रभु की निन्दा सोय॥

अथ मोह छुड़ावन

कुंडलिया

भक्ति दृढ़ावन को कहे, नाना भांति प्रसंग।
शुकदेव कृपा अब कहत हों, मोह छुटावन अंग॥
मोह छुटावन अंग, कोई हिय माहीं धारे।
कुटुम जाल सों छूट, लगे हरि चरणों लारे॥
चरणदास यों कहत हैं, उपजे मन बैराग।
जगत नींदही सों खुले, चौथे पद में जाग॥

दोहा

गुरु भजा सब छोड़िये, भोग सार के द्वन्द।
साधों की संगति करो, तजो जाति कुल बन्ध॥
बन्धु नारि सुत कुटुम सब, जग की फांसी जान।
तोहिं छुटावें राम सों, इन का कहा न मान॥
कड़ा खैंच तहँ राख है, जहां मोह का जाल।
जीवत दुख बहुत भांति के, मुये नर्क ततकाल॥
या प्राणी को ठग लगे, सकल कुटुम परिवार।

तिन में दो बलवन्त हैं, एक द्रव्य अरु नार ॥
नारि किये दुख बहुत हैं, बन्धन बँधे अनेक ।
जो सुख चाहे जीव का, स्त्री को मत पेख ॥
द्रव्य माँहिं दुख तीन है, यह तू निश्चय जान ।
आवत दुख राखत दुखी, जात प्राण की हानि ॥
ताते इन की प्रीति मन, उठे तभी निरवार ।
ये दुर्जन दुख रूप है, ऐसो करो विचार ॥
जो कोई इन में पगे, तिन सों छूटें राम ।
चरणदास यों कहत हैं, क्यों पावे हरि धाम ॥
हेर फेर धन को करत, बीत पहर इक रात ।
तीन पहर निशि के रहे, सोवे नारी साथ ॥
नारी के फैलाव को, दीसे ओर न छोर ।
द्रव्य माँहिं तृष्णा रहे, चाहे लाख करोर ॥
द्रव्य जोड़ मर जाय जब, हो बैठे जहँ नाग ।
नारी में जो चित रहे, ह्वै है कूकर काग ॥
ऐसेही भर्मत फिरे, लख चौरासी देह ।
कनक कामिनी को तजे, जब लग नाहीं नेह ॥
मूरख त्याग न कर सके, ज्ञानवन्त तज देह ।
चौंकायल ज्यों मृग रहे, कहूं न साजे गेह ॥
जो कोइ छोड़े कुटुम को, ऐसी कर पहिचान ।
जैसे छूटो बन्धि सों, यमराजहु से जान ॥
जीवत में यम कुटुम है, घेर घेर दुख देय ।
ऐसी मानुष देह को, लूटे ही नित लेय ॥
कै ठग सब को जानिये, कै धाड़ी कै चोर ।
रणजीत कहै तू देख ले, लूटत है निशि भोर ॥
बाहर कल कल करत है, भीतर लावे लाव ।

जाने ना वहई रहे, कहे चरणहीदास ॥

पिता मोह

चौपाई

पिता कहे तुम पुत्र हमारे, बहुत भरोसो मोहि तुम्हारे।
अब तुम ऐसी विद्या पढ़ो, अपने कुल में ऊंचे चढ़ो।
सत संगति में कभी न जैये, अपने घर में चित्त लगैये।
हम तो हैं दुनिया के कूते, जाति वर्ण में होहिं सपूते।
कृत्य करो पालो सुत वाम, कथा कीर्तन सों क्या काम।
अब तुम ठौर हमारी दीजे, हम ने किया सो तुमहूं कीजे।

दोहा

पिता बुद्धि ऐसी दई, रहिये कुटुम मँझार।
जो कुछ है सो जगत में, धन सम्पति अरु नार॥
हरि की राह भुलाय के, दीन्हा कुटुम चिताय।
तातें दुख जग में घने, चौरासी भरमाय॥

माता मोह

चौपाई

अब सुन माता हू की बातें, अपनो जान सिखावहुं तातें।
द्रव्य काज बहु उद्यम कीजे, ला माता की गोदी दीजे।
करे कमाई सोइ सपूता, नाहीं तो वह पूत कपूता।
नारी को भूषण पहिरायो, सुत पुत्री के व्याह रचायो।
पूजो पित्ररु देवी देवा, सकल कुटुम की कीजे सेवा।
अपने कुल को न्योत जिमायो, तातें बहुत बड़ाई पायो।
बहु बिधि स्वारथ ही सिखलावे, परमारथ की राह भुलावे।

### दोहा

माता हू नहिं प्यार कर , बहुत दिया शिर भार ।
याही नीके धारियो , महल द्रव्य सुत नार ॥

नारी प्रीति

### चौपाई

अब नारी की गति सुन लीजे , तामें चित्त कबहुं नहिं दीजे .
छल बल कर बश अपने राखे , मधुर बचन रस सने जु भाषे .
कहै कि शिर के छत्र हमारे , हम तो लागे शरण तुम्हारे .
तुम तो बहुतहि लागहु प्यारे , मोकों तज मत हूजो न्यारे .
ऐसी कह कह बांधा चाहे , आठों अंग काम के बाहे .
वस्त्राभूषण देह सिंगारे , नाना बिधि कर रूप सँवारे .
करे कटाक्ष बहुत ही मारे , बश करने को टोना डारे .
काजर भर आंखिन सों जोहै , अंग विषय रस करके मोहै .
ह्यां सों निकसन कैसे पावे , चरणदास शुकदेव बतावे .

### दोहा

नारी केरे जाल में , आय फँसे जो कोय ।
तड़प २ हाई रहे , निकस सके नहिं सोय ॥

### चौपाई

सुत पुत्री बनिता सों जानो , समधाने वासों पहिचानो .
और बँधे बहुतहि बँधवार , ब्राह्मण नाई बहु परिवार .
सेढ़ मसानी देवी भूता , ग्रह नक्षत्रहु लगे अछूता .
चौथ अढाई लागे सोना , स्त्री कारण साजें भोना .
और अनेक बखेड़ा जानो , नारी सेती ही पहिचानो .
माही अपरबल दुख तेहि माहीं , मरने पर चौरासी जाहीं .
तातें हूजे वेगि उदासा , समझ तजो त्रिया की आशा .

पुत्र पुत्री मोह

## दोहा

सुत की बोली तोतली, करे चोचले चाव।
मन मोहे बांधे घलो, छूटे को न उपाव ॥
हँस गोदी में आय के, बहुत बढ़ावे नेह।
तामें बहुत विकार हैं, अन्तकाल दुख देह ॥
मोह लगा मर जाय जब, तन मन लागी आग।
चरणदास यों कहत हैं, सुख चाहे तो त्याग ॥
जिहि कारण चिन्ता लगे, जब लग घट में प्राण।
हरि गुरु हिय नहिं आवई, यह जो पूरी हान ॥
तन छूटे सुत में रहे, ये नर तेरी आश।
जन्म ज़ु शूकर को लहे, मुये नर्क ही वास ॥

कुटुम्ब मोह

## चौपाई

कुटुम बन्ध ऐसे कर जानो, फांसी गर तिन को पहिचानो.
तो कों डारे नर्क मँझारा, तातें होहु सबन तें न्यारा.
बहुतक दुर्जन हैं घट माहीं, तू उन को जानत है नाहीं.
हैं बैरी जानत है मिन्ता, स्वप्न में इन की नहिं चिन्ता.
कामरु क्रोध लोभ अरु मोहा, सबही रासें तो सौं द्रोहा.
जिन से गर्व मत्सरता भारी, जगत बड़ाई तिन की नारी.
आपा लिये सदा ही रहई, टेढ़े बचन झूठ बहु कहई.
इनके संग में घिन है दुष्टी, तेरे तन में रहे अदृष्टी.
नित ही करे अकारज तेरो, चरणदास कह यह बिधि घेरो.

## दोहा

बहु बैरी तन में बसें, तू नहिं जीतत कोय।

निशि दिन घेरेही रहें, छुटकारा नहिं होय ॥

चौपाई

जो कहुं निकस बाहरहि आवे, अरु बिरक्त का रूप बनावे ।
कुटुम छोड़ उपजे बैरागा, जगत रहा चरणन सों लागा ।
कछू बासना मन में धँसई, तब ही लोक बड़ाई हँसई ।
पुष्ट भयो आपा अभिमाना, सहजहि आयो मोह दिवाना ।
सबही संगी लिये बुलाई, या विरक्त को घेरो आई ।
ता को बांध मुरंडा कीन्हा, फेर कुटुम के माहीं दीन्हा ।
कुटुम मित्र काढ़ा कर बांधा, बड़ी आंख का ऐसा आंधा ।
चरणदास कह घर में आया, घट के दुर्जन वही बँधाया ।

दोहा

कुनबा में से निकस कर, फिर कुनबा में जाय ।
निश्चय नर्की होयगा, दुनिया में दुख पाय ॥

चौपाई

एक तपी बन में जा राहा, शीत उष्ण पावस शिर साहा ।
सूखे पातों किया अहारा, छूटे सब ही जग ब्यवहारा ।
रहे ध्यान में निशिदिन लागा, हरि के चरण कमल में पागा ।
महिमा सुन राजा तहँ आयो, परिक्रमा कर शीश नवायो ।
हाथ जोड़ ठाढ़ा ह्वै रहेऊ, तपसी मुख नहिं बैठन कहेऊ ।
ठाढ़े भये बार बहु भइ जब, राजा ने अस बात कही तब ।
यह तपसी है बहु अभिमानी, मम आवन महिमा नहिं जानी ।
पातुर पठय याहि अजमाऊं, झूठ सांच का भेद लहाऊं ।
कह गणिका प्रभु आयसु दीजे, देख तमाशा वाकर लीजे ।
बांदी गई भेद सब लाई, पातुर को सब बात सुनाई ।

दोहा

झाड़े जा मुख धोय कर, फिर तलाव में न्हाय ।
चरणदास फल पात जो, गिरे परे ही खाय ॥
गणिका ने कर जोरकर, बहु बिधि बिनय सुनाय ।
एक ग्रास ले लीजिये, इन्द्री जित ऋषिराय ॥
तप तपसी के जितन कों, कियो टेक कर वाद ।
शनै शनै कर लायही, या जिह्वा के स्वाद ॥
नाना बिधि के स्वाद कों, ले गई वाही पास ।
कहती यही प्रसाद है, लीजे कोई इक ग्रास ॥
रसन स्वाद सों वश कियो, मन में जीतन वाद ।
आप कभूं बांदी कभूं, पहुंचायो परसाद ॥
घर में ला बहु सुख दियो, दिना आठही राख ।
तपसी हू वा बश भयो, दश इन्द्रिन रस चाख ॥
जो इन्द्रिन बश होत है, यही हाल हो जाय ।
पछतावा मन में रहे, करे हाय दुख हाय ॥

चौपाई

पांचों चोर महा दुख दाई, सो या जग में देह फँसाई .
तन मन को बहु व्याधि लगावे, कायिक वाचिक पाप चढ़ावे .
कर्म लगा बहुतहि भरमावे, यम के छप्पन त्राश दिखावे .
फिर चौरासी माहिं फिरावे, जठर अग्नि में ताहि तपावे .
जन्म मरण भारी दुख देवे, देह मनुष का सर्वस्व लेवे .
तीन लोक में डोले हाला, स्वर्ग मृत्यु अरु बहुरि पताला .
कैसे मुक्ति धाम को पावे, जो इन्द्रिन के बश हो जावे .
छूटे जब गुरु कृपा करहीं, चरणदास शिर पर कर धरहीं .

दोहा

स्वारथ ही के सब सगे, कुटुम मित्र कुल गोत ।

परमारथ समझावई, जो दयाल गुरु होत ॥
परमारथ में दुख मिटे, कलह कल्पना जाय ।
स्वारथ माहीं सुख नहीं, तामें चित्त न लाय ॥
स्वारथ में चिन्ता घनी, जो यह करहो ग्राह ।
बिना आग की चिता में, जीव मरिहो दाह ॥
चिन्ता घट में नागिनी, ताके मुख हैं दोय ।
निशिदिन खाये जात है, जान सके नहिं कोय ॥
जा घट चिन्ता नागिनी, ता मुख जप नहिं होय ।
जो टुक आवे याद भी, वही जाय सब खोय ॥
चिन्ता ही सों लगत है, चरणदास उर आग ।
तहां ध्यान हरि चरण को, कैसे ही अब लाग ॥
जगत बासना के विषें, घर चिन्ता को जान ।
जग की आशा छोड़ कर, हरि सुमिरनही ठान ॥
आशा नदी ही में चले, सदा मनोरथ नीर ।
परमारथ उपजे वही, मन नहिं पकड़े धीर ॥
धीर बिना नहिं ध्यान है, निश्चल जप नहिं होय ।
जो चाहे हरि भक्त को, जगत बासना खोय ॥
जब लग जग में प्रीति है, तब लग दुःख अपार ।
भव भारी चिन्ता घनी, भवन पिछानो द्वार ॥
जग सों छुट बाहर पड़े, उसी समय सुख चैन ।
उपजे आनँद परमही, तहं कुछ लेन न देन ॥
रहै एक हरि भक्ति ही, व्याधि सबै छुट जाहिं ।
जबै राम अपनो करे, बेगहि पकड़ बाहिं ॥

**चौपाई**

या सों सुन मन मेरे मिन्ता, जग छोड़न की राखो चिन्ता ।
ऐसा अवसर फिर नहिं पाओ, काहे मानुष देह गंवाओ ।

संगी तेरा ना धन धामा, तूं क्यों पचता मूढ़ निकामा.
पिछली गई तासु को रोवे, आगे रही यही मत खोवे.
इक इक घड़ी अमोल जानकर, चेत चेत मत हो अयान वर.
अपने घर का करो सम्हाला, ललकारत आवत है काला.
यातें कीजे यही बिचारा, डार सिदौसी जग जंजारा.
शुकदेव कही हो चरणहि दासा, हरि के चरण कमल कर वासा.

दोहा

या में ढील न कीजिये, यह बिचार मन आन।
चरणदास यों कहत हैं, यह गोये मैदान॥
आयुर्दा यह जात है, ज्यों तरुवर की छाहिं।
चेत शिताबी भक्ति में, तजो जगत की बाहिं॥
तुझे न पकड़ो जगत ने, तैंने पकड़ो आय।
ज्यों नलिनी को सूवड़ा, धोखे पकड़ो जाय॥

चौपाई

जैसे बानर आपहि फंसिया, समझवान मन माहीं हंसिया.
मूठ चनों की जो वह तजता, तो काहे को फंसा जु रहता.
ज्यों कांटे सों मछरी लागी, आपे आई चली अभागी.
सरवर में तरूवर की छाहीं, अजया देख गिरी वा माहीं.
जैसे पच्छी जाल मंझारा, आपहि आय फंसा तब मारा.
खन्दक में हाथी आ परिया, लैन गया कोई आपहि गिरिया.
बाजत बीण मृगा चल आया, पकड़ कौन चंचल को लाया.
योंही तुम अपनी गति जानो, आपहि बंधे यही पहिचानो.
ऐसे जगने तोहि न पकड़ा, चरणदास कह नाहीं जकड़ा.

दोहा

छोड़ जगत की बासना, यह जू छुटन उपाव।
ये मन ऐसी धारिये, अबहीं नीको दाव॥

अब के चूके चूकिहो, फिर पछतावा होय।
जो तुम जगत न छोड़ हो, जनम जायगो खोय॥
जग माहीं न्यारे रहो, लगे रहो हरि ध्यान।
पृथ्वी पर देही रहौ, परमेश्वर पर प्राण॥
ज्यों पतिनी बाहर बसे, सुरति पिया के माहिं।
ऐसे जन जग में रहे, हरि को भूले नाहिं॥
ज्यों कृपिणी बहु दाम को, गाड़ जमीं के बीच।
सदा वाहि तकतो रहे, सुरति वाहि के बीच॥
तन छूटे हो सर्प ही, जा बैठे वहि ठौर।
जहां आशा तहं बास है, कहूं न भर्मै और॥
चित्त रहे गोविंद विषय, जग में सहज स्वभाव।
तन छूटे हरि को मिले, चरण कमल लिपटाय॥
जग त्यागो बैराग ले, निश्चय मन को लाव।
आठ पहर साठौ घड़ी, सुमिरन सुरति लगाव॥
सब सों रह निर्बैरता, गहो दीनता ध्यान।
अन्त मुक्ति पद पाइहो, जग में होय न हान॥
चरणदास यों कहत हैं, बड़ी दीनता जान।
औरन की तो क्या चले, लगे न माया बान॥
दया नवनता दीनता, छमा शील सन्तोष।
इन को ले सुमिरन करे, निश्चय पावे मोष॥
ये सब लच्छण राम में, प्रगट दीसहीं मोहि।
जो ये आवें तुझ विषे, प्यार करें हरि तोहि॥
हरि सों प्रीति लगाय के, सब सों लेहु उठाय।
रहे सदा यक राम ही, और सकल मिटजाय॥
मिटते सों मत प्रीति कर, रहते सों कर नेह।
झूठे को तज दीजिये, सांचे में कर ग्रेह॥

सांचा हरि का नाम है, झूठा यह सन्सार।
शुकदेव कहैं चरणदास ये, सुमिरन करो बिचार॥
दश इन्द्रिन को खेंच के, अभय अमर फल चाख।
सहजहि सुमिरन होत है, तामें मन को राख॥
मान सरोवर देह में, मुक्ताहल जो श्वास।
चुगिये हंस स्वरूप हो, खुले कर्म की गांस॥
अजपा को यह अर्थ है, बिना जपे ही होत।
कछुवा की ज्यों सिमिट कर, तहां लगावो गोत॥
आवत ही को देखिये, जाते को जु निहार।
ऐसे सुरति लगाइये, चरणदास हिय धार॥
सकार तन सींचिये, हकारे सुख होय।
ऐसे सुमिरन सत्य को, जाने बिरला कोय॥
नाभी से तो उठत है, फिर ता माहिं समाय।
या को भेद अपार है, सतगुरु देहि बताय॥
नाभि नाशिका माहि कर, घाल हिंडोला झूल।
उपजे अति आनन्द ही, रहे न दुख का मूल॥
ब्रह्म सिन्धु की लहरि है, ता में नान्ह समोय।
कलिमल सब छुट जायँगे, पातक रहे न कोय॥
अष्ट शत तीरथ तो विषे, बाहर क्यों भटकाय।
चरणदास यों कहत हैं, उलटा ही घर आय॥
स्वांसा सम्हल बिचार कर, तहां करो विश्राम।
तातें हरि ही हरि कहो, आवत कहिये श्याम॥
स्वांसा लेवे नाम बिन, सो जीवन धिक्कार।
स्वांस २ में राम जप, यही धारना धार॥
उलट पलट जप राम ही, टेढ़ा सीधा होय।
याका फल नहिं जायगा, बहुत हिलावे कोय॥

खाते पीते नाम ले, बैठे चलते सोहि ।
सदा पवित्तर नाम है, करे उजाला तोहि ॥
नीचन को ऊंचा करे, ऊंचन को कर देव ।
देवन को हरि ही करे, रहे न दूजा भेव ॥
भरमत भरमत आइया, पाई मानुष देह ।
ऐसो अवसर फिर कहां, नाम शिताबी लेहु ॥
के घर में के बाहरे, जो चित आवे नांव ।
दोनों होय बराबरी, के जंगल के गांव ॥
करे तपस्या नाम बिन, योग यज्ञ अरु दान ।
चरणदास यों कहत हैं, सबही थोथे जान ॥
अधिका ऊंचा नाम है, सब करनी का जीव ।
अष्ट दश अरु चार का, मथकर काढ़ा घीव ॥
चारों युग में देख ले, जिन जपिया तिन नांव ।
टेक पकड़ आगे धँसे, पड़ा न पीछे पांव ॥
जैसी गति उन की भई, गावत साधु पुराण ।
वैसी तेरी होयगी, यह निश्चय कर जान ॥
दुख धन्धे को छोड़ कर, कलह कल्पना त्याग ।
शुकदेव कहैं चरणदास सों, राम भजन में लाग ॥
हरि के गुण माला करो, रसना ऊपर लाव ।
किया किया को देखकर, ताहि सिहाते जाव ॥
देख देख देखत रहो, अस्तुति मुख सों भाष ।
बाकी चतुराई सभी, लेकर मन में राख ॥
वैसा तो रँगरेज ना, वैसा छीपा नाहिं ।
वैसा कारीगर नहीं, या दुनिया के माहिं ॥
अजब अजब अचरज किये, अद्भुत अधिक अपार ।
जल थल पवन अकाश में, देखो दृष्टि उघार ॥

सृष्टि बाग माली रचो, भांति भांति गुल्जार।
रीझ २ शिर दीजिये, ये हो निरख बहार॥
कबहूं जग परगट करे, कबहूं करे अलोप।
नाना बिधि बाजी करे, आप रहत है गोप॥
बाजीगर बाजी रची, सब गति पूरण साज।
किये तमाशे बहुत ही, तोहि दिखावन काज॥
देखे होय प्रसन्न ही, तू वा को गुण मान।
चरणदास जो बुद्धि है, अधिक सुघरता जान॥
बहुत प्यार तो पै करे, तू नहिं जानत सार।
वाहि भुलाये ही फिरे, नेक न करे सम्हार॥
राम विसारो आदि सों, लियो द्रव्य अरु नार।
याही तें भरमत फिरे, तन धर बारम्बार॥
गई गई को जान दे, अब रख मूढ़ अजान।
निष्केवल हरि को रटो, सीख गुरू की मान॥
सोवन में नहिं खोइये, जन्म पदारथ पाय।
चरणदास हो जागिये, आलस सकल गमाय॥
सोवन में ही हानि है, जागन में बहु लाभ।
बुद्धि ऊजली होत है, मुख पर चढ़े जु आभ॥
दिन में हरि सुमिरन करो, रैन जाग कर ध्यान।
भूख राख भोजन करो, तज सोवन की बान॥
चार पहर नहिं जग सके, अर्ध रात्रि सों जाग।
ध्यान करो जपही करो, भजन करन को लाग॥
जो नहिं श्रद्धा दो प्रहर, पिछले पहरहि चेत।
उठ बैठो रटना रटो, प्रभु सों लायो हेत॥
जागे पिछले पहर ना, ताके मुंह में धूर।
सुमिरो ना करतार को, सबै गमाओ मूर॥

जागे ना पिछले पहर, करे न आतम ध्यान।
ते नर नर्कहि जांयगे, बहुत सहै यम शान॥
जागे ना पिछले पहर, करे न गुरु मत जाप।
पह फाटे सोवत रहे, ताकों लागे पाप॥
पिछले पहरहि जाग कर, भजन करे चितलाय।
चरणदास वा जीव की, निश्चय गति हो जाय॥
पिछले पहरहि जाग के, भरि भरि अमृत पीव।
विषय जगत को ना रहे, अमर होय कर जीव॥
जन्म छूट मरना छुटे, आवा गम छुट जाय।
एक पहर की रात सों, बैठा हो गुण गाय॥
पहिले पहरहि सब जगें, दूजो भोगी मान।
तीजे पहरहि चोर ही, चौथे योगी जान॥
मर्यादा की या कही, नहीं विरक्त प्रमाण।
आठ पहर चौंसठ घड़ी, जागन से ही ध्यान॥
जो कोइ बिरही राम का, तिन को कैसे नींद।
शस्त्र जु लागा नेह का, गया हिये को बींद॥
तिन सों जग सहजहि छुटा, कहा रंक कह भूप।
चले गये घर छोड़के, धर विरक्त का रूप॥
जिन को मन बैराग्य में, रहें जहां चित होय।
घर बाहर दोउ एकसा, डारी दुबिधा धोय॥
सोवे है सन्सार तें, जागे हरि की ओर।
तिन को इक रस ही सदा, नहीं सांझ नहिं भोर॥
उन को नींद न आवई, राम मिलन की चित्त।
सोवें ना सुख से जपें, तजें कि हरि सो मित्त॥
कै सोवें हरि सों मिलें, जिन के ऊंचे भाग।
कै सोवें हरि त्याग के, रहे जगत सों लाग॥

सोवन जागन भेद की, कोइ इक जाने बात।
साधू जन जागत तहां, जहां सबन की रात॥
जो जागे हरि भक्ति में, सोई उतरे पार।
जो जागे सन्सार में, भव सागर में ख्वार॥
कै जागा हुक्का भरा, कै जागा वश काम।
कै जागा जग टहल में, लाग रहा धन धाम॥
ऐसे जन्म गँवा दिया, महा मूढ़ अज्ञान।
चौरासी में फिर चले, मन का कहा जु मान॥
सतगुरु शरणहि आय के, कहा न माने एक।
वे नर बहु दुख पाय हैं, तिन को सुख नहिं नेक॥
संत शरणहि ना लगे, कियो न हरि का खोज।
सो खर कूकर शूकरा, औ जंगल का रोझ॥
पेट भरे भर सोइया, ते नर पशू समान।
पर नारी कै आपनी, तिन के नाहीं ज्ञान॥
जैसा तैसा खायकर, पेट भरे भर सेह।
पड़कर सोवें भोरलों, सो शूकर की देह॥
हरि चर्चा बिन जो बके, सो कूकर की भूस।
रणजीत कहैं वह सांझलों, खाय धूसही धूस॥
जो पावे सोई चरे, करे नहीं पहिचान।
पीठ लदे हरि ना जपे, ताको खरही जान॥
रोझ जान वा देह को, जा को नहीं विचार।
फिरे बिना मर्यादही, बहुतहि करे अहार॥
कीन्हे अति आहार के, मैली रहे जु बुद्धि।
हरि के निर्मल नाम की, कैसे आवे शुद्धि॥
सूक्ष्म भोजन खाइये, रहिये ना पड़ सोय।
ऐसी मानुष देह को, भक्ति बिना मत खोय॥

जनम चलोही जात है, ज्यों कूए में लाव ।
दौरत मृग की छांह को, नेक नहीं ठहराव ॥
समझ शिताबी भक्ति ले, नेक न ढील लगाव ।
आपा हरि को दे चुको, या का यही उपाव ॥
जग का कहा न मानिये, सतगुरु सों ले बुद्धि ।
ता को हिय में राखिये, करो शिताबी शुद्धि ॥
गुरु सेती सतगुरु बड़े, परमेश्वर के रूप ।
मुक्ति छांह पहुंचाय दे, जगत छुटावे धूप ॥

### कुंडलिया

पहिला गुरु दाई कहूं, दूजे माई जान ।
तीजा गुरू खिलावड़ी, चौथा बापहि मान ॥
चौथा बापहि मान, पांच परदादा मानो ।
कन फूंका गुरु छठा, तासु पूजा दे ठानो ॥
सतवां सतगुरु जानिये, जगसों करे उदास ।
मुक्ति धाम सोई देत है, कहे चरणही दास ॥

### दोहा

गुरु मिलते ऐसी कहे, कछू लाभ मोहि देहु ।
सतगुरु मिल ऐसी कहे, नाम धनी का लेहु ॥
कनफूंका गुरु जगत का, राम मिलावन और ।
सो सतगुरु को जानिये, मुक्ति दिखावन ठौर ॥
गलियारे गुरु फिरत हैं, घर घर कंठी देत ।
और काज उन को नहीं, द्रव्य कमावन हेत ॥
सत गुरु डंका देत है, भक्ति राम की लेहु ।
पहिले हम को भेंट में, शीश आपनो देहु ॥
सो सतगुरु शुकदेव हैं, सील हिये में राख ।
तिन के शरणहिं आव मन, चरणदास कह भाष ॥

यह सबरो उपदेश ही , मैं अपने कहँ कीन ।
मम मन को आपा घना , कहीं होय आधीन ॥
सतगुरु सों मांगो यही , मोहिं गरीबी देहु ।
दूर बड़प्पन कीजिये , छोटाही कर लेहु ॥
जनक परम गुरुदेव जी , सुन सतगुरु शुकदेव ।
यही अर्ज मैं करत हों , मोहिं साधु कर लेव ॥
चारों युग के भक्त जन , तुम हो सुख के धाम ।
चरणन दासा होय के , तुमहीं करत प्रणाम ॥
आदि पुरुष किरपा करो , सब अवगुण छुट जाहिं ।
साधु होन लक्षण मिलें , चरण कमल की छांहिं ॥
तुम्हरी शक्ति अपार है , लीला को नहिं अन्त ।
चरणदास यों कहत हैं , ऐसे तुम भगवन्त ॥

छप्पय

रच्यो आप मय जगत , रूप नारायण कीनो ;
दूजे लक्ष्मी भई , बहुर पानी रँग भीनो .
नाभि कमल फिर भयो , जहां ब्रह्मा जी उपजे ;
विधि की त्रिकुटी माहिं, तहां शंकर जी निपजे .
चार वेद अरु विष्णु है , सकल जगत क्षण में कियो;
निराकार आकार सोई , चरणदास मन में दियो .

कवित्त

वही तो अडिग राम , चौथे पद वास जाको ;
वही तो अडिग राम , मथुरा में आयो है .
वही तो अडिग राम , योगी जाको ध्यान धरें ;
वही तो अडिग राम , सीता पति पायो है .
वही तो अडिग राम , सभी ठांव रम रहो ;
वही तो अडिग राम , सन्तन सहायो है .

वही तो अडिग राम, चरणदास चेरो जाको;
वही तो अडिग राम, काया खोज पायो है,

कवित्त

माया भ्रम फन्द देख, साधुन को संग पेख;
राम जी को पहिर भेष, कंचन तन तावरे.
मन को पहिचान ज्ञान, एका एकी सबै जान;
नाद के गहे ते तू, अनहद बजाव रे.
उलट पलट काया बीच, चारों कर दूर नीच;
ऐसी भेर पै समीर, गगन को चढ़ाव रे.
भनत यों चरणदास, गगन मध्य करो वास;
जहां नहिं शीत उष्ण, निर्भय पद ध्याव रे.

दोहा

दुर्योधन रावण गये, अरु यादव परिवार।
चरणदास थिर कौन है, होय मिटे सन्सार॥

कवित्त

भोर सो विहानो जात ढरेगी दुपहरी सी;
समझ के विचार देख चली आवे रात है.
भंवत है सचान काल तेरे पर तक रहो;
क्षण पल की खबर नाहिं करे आय घात है.
दारा सुत सम्पति सब स्वप्न कासा सुख भयो;
जानोगे तभी जब छूट जाय गात है.
कहत यों चरणदास अब तजो क्यों न विषय वास;
पानी में नाव तैसे, आव चली जात है.

कवित्त

कुमारग सों भाज, और लाज खोटे कर्मन सों;

चौरासी के त्राशन सों, मूढ़ क्यों न तज रे.
साधुन के संग बैठ, धर्म हू नाव लेट;
गुरू हू को ज्ञान राख, प्रेम भक्ति भज रे.
छूटे जब नारी, यम देवे दुख भारी;
डारे नर्क हू मँझारी, आवा गमन क्यों न तज रे.
कहैं चरणदास, अब तजे क्यों न विषय बास;
राम के सँवारे, तू राम राम भज रे.

### कवित्त

भूल रहो जग में जड़ता बश, दारा सुती सुत प्रीति बढ़ावे.
इन सों मन बांट रहो ग्रह बीच, सो अन्त समय कोइ पास न जावे.
आन गहे यम याम तेरो, सबही मिल प्रीतम राम बतावे.
चरणदास कहै चेतो नर मूरख, राम बिना कोइ काम न आवे.

### कवित्त

ध्यावे भ्रम देवन को, भीतन के लेवन को;
कोई सँग साथी नाहीं, भीर परे तेरा है.
परसता है चंड की भूत, और शीतला को;
भजे क्यों न राम नाम, कटे यम बेरा है.
भैरों अरु वाराही पाखंड, पूजा सभी करे;
लगी है भीर, किन्हू नैनन न हेरा है.
चरणदास कूर, सब सन्तन को चेरो कहै;
ऐसो जग अन्धा जान, कर्मों ने घेरा है.

### दोहा

यंत्ररु टोना शिर हिला, किमिया अरु पुनि झूठ।
चरणदास सब भग लहैं, यह जग लीन्हा लूट॥

### कवित्त

भूतन को सेवे सो भूतन में जाय मिले ;
जादू को सेवे सो चमार ताकी माई सों .
देवता को सेवे सो देव लोक वास लहे ;
औषधि को सेवे तो मिला पराव राई सों .
किमिया को सेवे तो खराब होय दुनिया में ;
ऐसे धन खोवे जो सुनावे नाहिं भाई सों .
कहे चरणदास हम इतनों को मानें नाहिं ;
देव सभी छोड़ दिये मन लागो कन्हाई सों .

### कुंडलिया

पारा मारा ना मरे , गन्धक होय न तेल ।
केते पच २ मर गये , शिर में मिट्टी मेल ॥
शिर में मिट्टी मेल , भटक कर जनम सिरायो ।
जड़ी बुटी को फिरें , कहीं कुछ हाथ न आयो ॥
क्यों रे हरि को ना भजे , काहे को जन्म गँवायो ।
चरणदास किमिया है झूठी , मो कों गुरु शुकदेव सुनायो ॥

### अरिल

सात पांच की सेव तजो लग एक सों ;
साधुन की कर सेव मुड़ो मत भेष सों .
भेषी माहिं अलख यही तू जानियो ;
चरणदास की सीख निश्चय कर मानियो .

### दोहा

आप भजन को करे नहिं , औरन मने करन्त ।
चरणदास ते दुष्ट नर , भरमत नर्क परन्त ॥
औरन को उपदेश कर , भजन करे निष्काम ।

चरणदास वे साधु नर, पहुंचें हरि के धाम ॥
शून्य शहर हम बसत हैं, अनहद है कुल देव।
अजपा गोत्र बिचार ले, चरणदास यह भेव ॥
भक्ति पदारथ उदय सों, होय सभी कल्याण।
पढ़ सुने सेवन करे, पावे पद निर्वाण ॥
भक्ति पदारथ मैं कहूं, कछु यक भेद बखान।
जो कोइ समझे प्रीति सों, छूटे यम दुख शान ॥
पाठ करे मन में धरे, बहुरहु करे बिचार।
कहैं गुरू शुकदेव जी, उतरे भव जल पार ॥
जय जय श्री शुकदेव जी, तुम हीं करूं प्रणाम।
तुम प्रसाद पोथी कही, भये जु पूरण काम ॥
हिरदय में शीतल हुये, तपन गई सब दूर।
या वाणी के कहे तें, कायर मन भयो शूर ॥
चन्दन चरुचे पुष्प धर, बहुर करे परनाम।
कथा बांच सब ही सुने, कहा पुरुष का बाम॥
कहे सुने जो प्रेम सों, वाको राखे याद।
चरणदास यों कहत हैं, बनि हो पूरे साधु ॥

इति श्री चरणदास कृत भक्ति पदार्थ
की सूक्षम कथा सम्पूर्णम्

# अथ गुरु शिष्य संवाद धर्म जहाज में सूक्षम कथा लिख्यते

चरणदास उवाच

### दोहा

चरणदास यों कहत हैं, सुनो गुरू शुकदेव ।
जिमि करहो निष्कर्म ही, ता को कहिये भेव ॥

गुरो वाच

### चौपाई

कहँ शुकदेव सन्देह मिटाऊं, ज्यों की त्यों पूरी समझाऊं.
खोटी करनी नरकै जावे, पाप क्षीण मृत्यु लोकै आवे.
भले कर्म जा स्वर्ग मँझारा, पुण्य क्षीण मृत्यु लोकहि डारा.
ऐसे लोक लोक फिर आवे, कर्म न छूटे दुख सुख पावे.
जासों कर्म छुटहि सो कहूं, तो पै दया करत ही रहूं.
खोटे कर्म सु सकल निवारे, शुभ करनी को नीके धारे.
जाके फल को मन नाहिं लावे, हो निष्कर्म परम पद पावे.
फल त्यागे सोई चरणन दासा, चरण कमल की राखे आशा.

### दोहा

सो पावे निर्वाण पद, आवा गमन मिटाय ।
जनम मरण होवे नहीं, फिर २ काल न खाय ॥

शिष्य वचन

जो जो कही गुरु देव जी, सूझी मोहिं प्रत्यक्ष ।
चरणदास को दीजिये, साधु होन की सिक्ष ॥

### गुरु वचन

वही साध भी जानिये, निरवारे सब कर्म ।
तन मन बच साधे रहे, पाले अपना धर्म ॥
पहिले साधे वचन को, दूजे साधे देह ।
तीजे मन को साधिये, गुरु सों राखे नेह ॥
जिन ही के उपदेश को, राखे अपने चित्त ।
ताको मान सदा करे, भूले ना नित वृत्त॥

### शिष्यो वाच

जो जो कहि सो जानिया, ये हो श्री शुकदेव ।
साधन तन मन बचन को, सबही कहिये भेव ॥

### गुरुरु वाच

अब शिष तो सों कहत हूं, नीके सुनिये कान ।
ज्यों ज्यों कर्म बचें दसों, ताकी कर पहिचान ॥

### चौपाई

प्रथम बचन के चार सुनाऊं, तेरे चित में नीके लाऊं .
एक यही जो झूठ न बोले, सांच कहे जब हिरदय तोले .
झूठ कहन का पातक भारी, जो जप करे सो देय उजारी .
झूठ का जप लागे नाहीं, सिद्ध होय नाहिं निष्फल जाहीं.
अरु झूठ की नाहिं प्रतीती, झूठे की खोटी सब रीती .
दूजे की निन्दा नाहिं करिये, पर के अवगुण चित्त न धरिये .
निन्दा का भारी है पापा, याहू सों निष्फल हो जापा .
तीजे कडुआ बचन न भाखे, सब जीवन सों हित ही राखे .
खोटा बचन महा दुख दाई, जो साधे सो अति बलदाई .
खोटा बचन तपस्या खोवे, नर्क माहिं ले जाय समोवे .

मीठे बचन बोल सुख दीजे, उन के मन का शोक हरीजे.
कह शुकदेव चौथहू सुनिये, चरणदास ले मन में गुनिये.

दोहा

चौथे मौन गहे रहे, लच्छण अधिक अमोल।
कर्म लगे जग बात सों, हरि चर्चा में खोल॥

चौपाई

तन सों तीन कर्म ही लागे, सो मैं कहूं तुम्हारे आगे.
चोरी जारी अरु हिन्सा है, इन पापन सों भारी भय है.
कर्म छुटे ताकी बिधि गाऊं, भिन्न २ तो कों समझाऊं.
तन सों चोरी कबहुं न कीजे, काहू की नहिं वस्तु हरीजे.
चोरी त्यागी सो सतवादी, ता पर रीझैं राम अनादी.
जारी के कर्मन असभानो, पर तिरिया को माता जानो.
तीजे हिन्सा त्यागहि कीजे, दया राख जीवन सुख दीजे.
दया बराबर तप नहिं कोई, आतम पूजा तासों होई.
कर्म छुटन की भारी गैला, ज्यों सावन उजला पट मैला.
शुकदेव कहैं तन के गुण कहे, तीन कर्म अब मन के रहे.

दोहा

कहूं जु मन के तीन अब, झीनी जिन की बात।
गुरू दिखाये देखिये, औ बिधि नहीं दिखात॥
खोटी चितवन बैर ही, अरु तीजा अभिमान।
इन सों कर्म लगें घने, मेटें सन्त सुजान॥

चौपाई

खोटी चितवन खोल दिखाऊं, जासों कहिये सो समझाऊं.
कबहूं चितवे पर नारी कों, कबहूं चितवे फुलवारी कों.
मनही मन में भोगे भोगा, हाथ न आवे उपजे सोगा.

कबहूं चितवे वाको मारूं, कबहूं चितवे फांसी डारूं.
कबहूं चितवे द्रव्य चुराऊं, वाको धन अपने घर लाऊं.
कबहूं चितव ठगाई करो, माल पराया छल कर हरो.
भांति भांति चितवन उपजावे, बुरे मनोरथ कर्म लगावे.
तातें याका करे उपाऊ, होय जु साधू कर्म छुटाऊ.
जो चितवे तो हरि गुरु चरणा, ब्रह्म बिचार सदा ही करना.
खोटी चितवन चितवे नाहीं, सदा रहे थिरता के माहीं.
कह शुकदेव हृदय में रहई, इत उत को चित नाहीं बहई.

## दोहा

दूजा कर्म जु बैर है, महा पाप की पोट।
सदा हिया जलता रहे, करे खोट ही खोट॥

## चौपाई

बैर भाव में अवगुण भारी, तन छूटे जा नर्क मँझारी.
बैरी आदर है मन माहीं, हरि सों हेत लगन दे नाहीं.
ताते बैर भाव नहिं कीजे, याका कर्म लगन नहिं दीजे.
अरु तीजा जानो अभिमानो, गुरु कृपा तें ताको जानो.
हूं हूं हूं हूं करता रहे, नीची होय तो अन्तर दहे.
कबहूं फूले मन के माहीं, मो समान कोउ ऊंचा नाहीं.
मैं ही यो करियो करि करिया, मम बिन कार्य कछू नहिं सरिया.
आपन को चतुरा बड़ जाने, और सबन को मूरख ठाने.
अभिमानी ऐसा मन लावे, हरि के गुण किरपा विसरावे.
गर्व भरा खोटा व्रत धारे, अपने मन में कभूं न हारे.
शुकदेव कहैं वहि पापी जानो, नर्क जायगा निश्चय आनो.
रणजीतसुनोअभिमाननकीजे, कर्म बचाय परम सुख लीजे.

## दोहा

कृतघ्नी बे मुख भये, गुरु सों विद्या पाय।

उन को जाने तनक ही, आपन को अधिकाय ॥

चौपाई

जैसे इक दृष्टान्त सुनाऊं, कथा पुरानी कह समझाऊं.
महा पुरुष इक स्वामी पूरा, ज्ञान ध्यान में था भर पूरा.
उनका शिष्य आन इक भया, वहि उपदेश भली बिधि दिया.
प्रीति करी अरु सब कुछ भाषा, कर कर प्यार निकट जो राखा.
फिर रामत की आज्ञा लीन्ही, उनहूं किरपा करि २ दीन्ही.
पहुंचायो पुनि नगर स्थाना, तहँ के वासिन सिद्धहि माना.
ठहराया अरु पूजा कीन्ही, बहुत नरों ने कंठी लीन्ही.
बहुतक प्राणी आवें जावें, सन्ध्या भोर शीश बहु नावें.
महिमा देख फूल मन माहीं, कहैं कि हम सम गुरु भी नाहीं.

दोहा

गादी पर बैठा रहे, तकिया बड़ा लगाय।
बहुत रहें आज्ञा विषे, शिर पर चंवर दुराय ॥

चौपाई

थोड़े ही से बहु इतराना, गुरु की कृपा प्यार नहिं जाना.
बारम्बार शोच मन सोई, हमरे गुरु का ऐसे होई.
उन को तो नर कोइ २ जाने, हम को सगरा देश बखाने.
मेरे मन में ऐसी आवे, उन का शिष अब कौन कहावे.
तबहि अचानक गुरु तहँ आया, बैठही शिष शीश नवाया.

दोहा

जैसे आते वैष्णव, करता था दंडौत।
तैसे ही गुरु सों किया, आदर किया न नौत ॥

चौपाई

देख गुरू मन हांसी ठानी, वाको जाना बहु अभिमानी.

मुख सों कहकर बहु झिड़कारा , मेरा सब उपदेश विसारा .
शिष ने कहा और क्या कीया , यही किया आज्ञा तुम दीया .
शिष शाखा कर संग बढ़ाई , देख ईर्षा तुम को आई .
फिर गुरु भाष्यो तू अज्ञानी , सत संगति कहि तू नाहिं जानी .
मैं जु कहीं संग भक्त का कीजे , सत पुरुषन के चरण गहीजे .
तेरी तो मति औरहि भाई , महा अविद्या में मति छाई .

दोहा

कछू तपस्या ना करी , ना कुछ कीना योग ।
ना तौ लगी समाधि ही , लै बैठा तू भोग ॥
इन बातन सों क्या सरे , बहुत भया विख्यात ।
तुम से अधिके मूढ़ नर , जग के घने दिखात ॥
हुकुम बड़ा माया बड़ी , नामी बड़े जु भूप ।
नर नारी बहु टहल में , सुन्दर अधिक अनूप ॥
सन्तन की गति और है , हरि गुरु सों सनमुख्य ।
मुक्ति होय छूटे सबै , जनम मरण के दुःख्य ॥
जगत बड़ाई में फँसे , पड़ी अविद्या छाहिं ।
नर्क भुगत यम दंड ही , फिर चौरासी माहिं ॥
वांही नभ की ओर सों , वाणी भई जु आय ।
गुरु से किया अभिमान तू , चौरासी को जाय ॥
तहँ तें गुरु रमते हुये , दे शिष को फटकार ।
कहा कि तेरे तन विषे , होवे बड़ा बिकार ॥
कुष्ट भयो अर्द्धांग को , रहा न काहू योग ।
आठ पहर वाको भयो , निरा सोग ही सोग ॥
तन तज कर नर्कहि गयो , फिर चौरासी माहिं ।
जो गुरु सो कर्महि नहीं , ताकी गति हो नाहिं ॥
कहैं गुरु शुकदेव जी , चरणदास परवीन ।

मन सों तज अभिमान ही, शिष गुरु सों रह दीन ॥
मान न काहू सों करे, सबही तें आधीन ।
समरथ हरि की भक्ति में, जगत काज सों हीन ॥
दश कर्मों को जानिये, महा पाप की खानि ।
तन मन बचन सम्हारिये, यह जू अधिक सयानि ॥

॥ इति धर्म जहाज कथा सम्पूर्णम् ॥

---
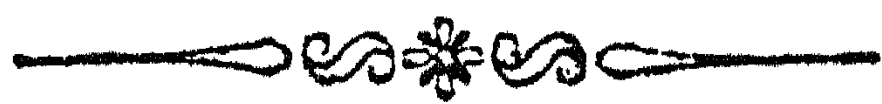
## अथ अमरलोक अखंड धाम कथा लिख्यते

### दोहा

प्रणऊं श्री शुकदेव को, सो हैं गुरू दयाल ।
काम क्रोध मद लोभ से, काढ़ें मेरे साल ॥
बाणी विमल प्रकाश दी, बुद्धि विमल की तात ।
मोहि मूर्ख अज्ञान को, नहिं आवत है बात ॥
अमर लोक वर्णन करूं, वे ही करें सहाय ।
दृष्टि हृदय मो खोल कर, सबही देहिं दिखाय ॥
भेद लिया गुरु सों जु मैं, अद्भुत रच्यो गिरन्थ ।
साखी वेद पुराण में, जानें सुनियो सन्त ॥

### चौपाई

भेद अगोचर कोइ २ जानो, गुरू दिखावे तो पहिचानो ।
पता कहे कछु वेद पुराणा, ज्यों का त्यों उनहूं ने बखाना ।
कुछ २ मत मारग ही भाषे, भूले फेर समझ नहिं साखे ।
हरी कृपा प्रगटहि मैं गाया, किया उजागर खोल सुनाया ।

### दोहा

महा कठिन दुर्लभ हुता, अमर लोक का भेद।
ता को मैं बीजक किया, भाषा भेद अभेद॥

### चौपाई

माया जीव दोऊ तें न्यारा, सो निज कहिये पीव हमारा.
क्षर अक्षर निःअक्षर तीनो, गीता पढ़ सुन इन को चीन्हो.
गीता अक्षर जीव बतावे, क्षर माया सोइ दृष्टि दिखावे.
निःअक्षर है पुरुष अपारा, ज्ञानी पण्डित लेहु बिचारा.
जीवातम परमातम दोऊ, परमातम जानत है कोऊ.
आतम तें परमातम चीन्हो, गीता मध्य कृष्ण कह दीन्हो.
माया उपजे विनशे अतिही, चेतन ब्रह्म अमर है नितही.
पारब्रह्म पुरुषोत्तम जानो, चरणदास कैसो मन मानो.

### दोहा

अमर लोक बिच पुरुष है, ब्रह्म जु सब के माहिं।
माया दरशे है सबै, ब्रह्म दीखता नाहिं॥

### चौपाई

अब सुन अमर लोक की बानी, त्रैगुण रहित परम सुख दानी.
तेज पुंज के ऊपर राजे, है बैराट सु बाहर गाजे.
ताको ज्योति कहत नर लोई, तेज पुंज कहियत है सोई.
सूरज मंडल ताहि बतावे, योगी योग युक्ति सों पावे.
सूरज मंडल जैहै चीरा, वा लोकै कोइ जैहै बीरा.
कोटि भानु को सों उजियारो, तेज पुंज को रूप बिचारो.
तीन लोक सों बाहर होई, सात भवन सों बाहर सोई.
ताके ऊपर अखिलहि लोका, पाप पुण्य दुख सुख नहिं शोका.
काल न ज्वाल अवधि नहिं होई, रणजीतदास तहँ सुरति समोई.

महा अगोचर गुप्त सों गुप्ता, जहां बिराजत है भगवन्ता.
अमर लोक निज लोक कहावे, चौथा पद निर्वाण बतावे.
अगम पुरी बेगम पुर ठाऊं, कहा बुद्धि सो सब गति गाऊं.
कछु इक वर्ण बताऊं वाको, ब्रह्मा सुत सतयुग में भाषो.
पुष्प द्वीप है श्वेत अकारा, सब ब्रह्मांडन सों है न्यारा.
जो कोई पुनि बहुर न आवे, आवा गमन सकल बिसरावे.
जो कोइ गयो बहुर नहिं आयो, देही दिव्य रूप अति पायो.
सोलह वर्ष उमर नित रहई, अजर अमर नित आनँद लहई.
बूढ़ा बाला होय न तरुना, षोड़श भानु रूप जहँ धरना.
तत्व स्वरूपी काया पावे, भवसागर में बहुर न आवे.
पांच तत्व बिन है थिर पायो, ना वह बन्यो न कृत्य बनायो.
ओर छोर कछु दीसत नाहीं, कब सों है अरु कब सों नाहीं.
है अडोल मर्याद न ताकी, वे परिमाण वेद अस भाषी.
वेद पुराण पार नहिं पावे, जो कुछ धर कर ध्यान बतावे.
अनन्त भानु को सो उजियारो, पिंड ब्रह्मांड दोनों से न्यारो.
लोक मध्य अविचल निज धामा, श्वेत रूप आगम पुर नामा.
अगम पुरी निरधारा सूची, हंस लहे जिन की मति ऊंची.
बेहद लोक बनो अति भारी, भानु असंख्य केरि उजियारी.

दोहा

हद्द कहूं तो है नहीं, बेहद कहो तो नाहिं।
ध्यान स्वरूपी कहत हों, बैन सैन के माहिं॥

चौपाई

अति उज्जल रवि दृष्टि न ठहरे, मणि हीरा लागे जहँ गहिरे.
कई रंग का हीरा भाषे, कलश कंगूरा अस्थिर राखे.
ता भीतर बहु दूर अशोका, अक्षय वृक्ष फल लगे निरोगा.
कल्प वृक्ष बहु रंग बिरंगा, फल अरु पात फूल इक संगा.

कोमल दल शोभा अति भारी , अजर पुरुष दर्शन अधिकारी ।
चेतन रूप गहिर अति छाईं , साध रहित तिन की परछाईं ।
षोड़श भानु सम देह स्वरूपा , हरि रस मद माते निधि रूपा ।
उन वृक्षन के निच २ मन्दिर , अनगिन महल महा मठ सुन्दर ।
महल २ पर ध्वजा पताका , पुरुषोत्तम सो नाम लिखावा ।
ध्वजा पताका लहरत ऐसे , चमक बिज्जली बहुलक जैसे ।
रत्न जड़ित तिन के अंगनाहीं , बैठत उठत चलत हरषाहीं ।
काम क्रोध नहिं लोभ अधीरा , निर्मल दशा शील गुण धीरा ।
जहां न आलस नींद जम्हाई , भूख प्यास मल तहँ नाहिं भाई ।
मैल पसीना आंसू नाहीं , दिव्य देह धर रहे गुसाहीं ।
एक रूप एकै गति पाई , अजर अमर सब को सुख दाई ।
संशय शोक रोग नहिं दहई , मगन रूप मन आनँद लहई ।
भूषण दिव्य वस्त्र अरु अंगा , श्याम गात सुन्दर छबि संगा ।
जुलफें लटक रहीं कजरारी , कुंडल छबि सोहत अधिकारी ।
नाशा मोती शुभग सुढारा , सुन्दर तिलक लगत अति प्यारा ।
दृग दीरघ अरु कछु अरुणाई , माथे मुकुट जटित ललिताई ।
घर २ दिवि आसन सिंहासन , और महा सुख है हरि दासन ।

## दोहा

आस पास हरि जन रहें , मध्य ईश दरबार ।
रसिक केलि बहु कुंज हैं, ललित द्वार हैं चार ॥

## चौपाई

अपर भानु कोसन उजियारो , वा मन्दिर को रूप बिचारो ।
चन्द्र सूर वा ठौर न चीन्हो , दृष्टान्तहि को पटतर दीन्हो ।
आदि अनादि पुरातम धामा , जैसे आदि पुरुष घनश्यामा ।
श्वेतहि रूप स्वरूप सुगन्धा , सहज महक जहं उठत सुगन्धा ।
चार द्वार बहु बाजन बाजें , अनहद शब्द महा ध्वनि गाजें ।

दिव्य रूप जो लगे किवारा, तिन के आगे बाग सुढारा.
हरा बाग अद्भुत है भाई, दूजे द्वार माहिं अरुणाई.
तीजे द्वार बाग पियराई, चौथे ऊदा है थिर थाई.
उन बागन के आसा पासा, बहुत भवन जहं साधु निवासा.
मढ़ी मंडफी बहुत सुढारी, श्वेत वर्ण सुन्दर अधिकारी.
साधु सन्त जहं हरि जन पूरे, दास भावना भाव न शूरे.
षोड़श भानु की सुन्दरताई, जगत जीत पहुंचे जो जाई.
सखा भाव पहुंचत बहि ठाई, सखी भाव भीतर को जाई.
धरे स्वरूप अनूपम भारी, सदा सुहागिनि हरि पिय प्यारी.
परम पुरुष पुरुषोत्तम पावे, निकट रहे नित केलि बढ़ावे.
चारों मुक्ति जहां कर जोरे, भाव बताय तान बहु तोरे.
रतन जड़ित जहं भूमि सुहाई, कोटि भानु छबि रहत लजाई.
ऋतु वसन्त पीली छबि सोहे, बन घन कुंज लता मन मोहे.

## दोहा

पुष्प जु फूले नित रहें, मौरें ना कुम्हिलायँ।
कई वर्ण के रंग सों, अति सुगन्ध हरषायँ॥

## चौपाई

जहं पर कर्मा सखी सहेली, बारह भानु रूप अलबेली.
दिव्य दमक जहं हीरा लागे, सात रंग के झिल मिल ताके.
ऊदा लाल श्वेत अरु पीरा, हरित श्याम लहरी अति धीरा.
तापर चौंसठ खम्भा दमकें, मणिहूं कोटि भानु छबि झमकें.
खम्भन लगे लाल अरु मुक्ता, पन्ना लगे वेलि की युक्ता.
हीरा मोती चेतन होई, जाने साधू विरला कोई.
लगे चंदेवा झालर मोती, मानहुं उडुगण झिलमिल ज्योती.
तापर रंग महल की शोभा, चेतन आनंद सुख की गोभा.
अजब कंगूरा सुभग सुढारे, चौंसठ कलश लगे अति प्यारे.

## दोहा

मणि हीरा माणिक लगे, रंग महल के माहिं।
बिन पहुंचे निज धाम के, क्यों हूं दीसत नाहिं॥
आस पास बहु कुंज है, बीच लाल को धाम।
चरणदास को दीजिये, सखियन में बिश्राम॥

## चौपाई

तीन खम्भ में खम्भा वीशा, चौदह खम्भा तिन में ईशा.
परम बिछौना है थिर थाये, मानहु सूरज लच्छ बिछाये.
तापर सिंहासन बड़ भागी, श्वेत रूप चेतन अनुरागी.
सिंहासन पर कछू बिछायो, सो नाता की कहत लजायो.
धरो गेंदवा तकिया नीके, छत्तर सोहै ऊपर पिय के.
पिय की शोभा कहा बखानूं, आदि अन्त ताको नहिं जानूं.
अमर पुरुष पुरुषोत्तम स्वामी, सब जीवन के अन्तरयामी.
पार ब्रह्म अविचल अविनाशी, बायें अंग रूप की राशी.
गोरी राधा कृष्ण श्याम घन, सिंहासन पै ललित मुदित मन.
आसन जहां अखिल जगदीशा, मुकुट चन्द्र का सोहै शीशा.
मकराकृत कुंडल छबि ऐसी, जग में कहा बखानूं जैसी.
जुलफें श्याम भुवंगम कारी, कजरारी अरु घूंघर बारी.
सहज सुगन्ध रही महं काई, लांबी चिकनी अरु बलखाई.
बांकी भौंह कुटिल अनियारी, तिरछी पलकें लागें प्यारी.
रस के माते घूम घुमारे, ललचौहैं दृग हैं कजरारे.
बांके दीरघ अरु ललचौहें, चितवत सखियन में मन मोहें.
सुबुक बुलाक नाम में सोहै, ध्यान करत मेरो मन मोहै.
बिजलीसी मुसकान पियाकी, मन खेंचन अरु भाल हिया की.
बदन श्याम घन काह बखानूं, कोटि भानु छबि सुख परबारूं.
दिव नीमा अंग माही सोहै, सूरज कोटि कला मन मोहै.

कंठी कंठ धुक धुकी झमके, ता बिच कौस्तुभ मणि अति दमके.
मोतिन की माला बनमाला, हुलसें देख धाम की वाला.
देव वद्धि गल जिन्द जड़ाऊ, नव रतन के बाजू बाहू.
पहुंची कड़ा कहा छबि गाऊं, जहंगीरी पहुंचीहि सुनाऊं.
रत्न चौक में लाल विराजे, शोभा गावत मम मन लाजे.
रत्न चौक है पीठ हथेली, लगी जंजीर मुंदरियन भेली.
चौकी सुघर हिये में राजे, कटि किंकिणि घूंघर ध्वनि बाजे.
युगुल चरण पैंजनि झुनकारें, दो टोरे तिन में ठनकारें.
कोटि चन्द दश नख परवारूं, तलुवन चिन्ह इकीस निहारूं.
बायें अंग राधिका प्यारी, कोटि चन्द छबि मुख परवारी.
युगुल सखी लिय चमर ढुलावें, हिय में हर्ष महा सचुपावें.
खम्भ खम्भ ढिग सखी सहेली, चौदह खड़ी ईश अलबेली.
और सखी बहुतक वा ठाऊं, शोभा जिनकी कहत लजाऊं.
नित्य किशोरी गोरी सारी, पांचों तत्व त्रिगुण तें न्यारी.
दिव्य वस्त्र दिव भूषण जाना, अधिक रूप छवि बारह भाना.
कजयारी कच लटके बेनी, अंजन नैन सैन पिय देनी.
चूड़ामणि गहना छवि नीको, शीशफूल अरु वेणी टीको.
करणफूल सँग विन्दी लागी, झुमके थिरकें महा सुभागी.
अंजन आंजे नैन ढरारे, तीखे अनियारे पिय प्यारे.
घूघर वारी अलकें लटकें, वेसर नाशा छवि लिय मटकें.
चंपाकली नवलड़ी माला, चन्दरहार सु पहिरे बाला.
कठला जैसे गले जनेऊ, अरु हिय चौकी महा अभेऊ.
सखीं सिंगार हार सब साधें, बाजूबंद बाहन में बांधें.
सदा सुहागिनि पहिरे चूड़ी, सुबुक पछली बगली रूड़ी.
कँगनी अरु पहिरे जंहगीरी, रत्न चौक छवि लगी जंजीरी.
छाप छला अरु पहिरे मुंदरी, नुहसत पहिरे सुन्दर अंगुरी.

पांवन में पगनूपुर बाजें, नखशिखसों आभूषण साजें.
और सखी बिखरी बन माहीं, सो काहू बिधि गनी न जाहीं.

दोहा

सुन्दर छबि पियरे बसन, झुंड सखिन को जान।
कोऊ पुंज ऊदे बसन, सुघर सवारी आन॥
लाल बसन बहुतक सखी, श्वेत वसन बहु नार।
नील बसन वहु भामिनी, सब को रूप अपार॥
हरे बसन नारी घनी, घनी गुलाबी भेष।
बहुत झुंड कइ रंग सों, ज्ञेय सकै नहिं शेष॥

चौपाई

निज बन चौंसठ खम्भे माहीं, होत अखंड रास वह ठहीं.
झुंड सबै जो बन बन आवें, हुलस २ लालन ढिग धावें.
रासि केलि खेल बहु रंगा, सदा बिहार करे पिय संगा.
कबहूं घुमर घुमर घुमरावे, नैन सैन दे भाव बतावे.
कबहूं थेई थेई थेई करे, कबहूं अँगुरी नाशा धरे.
कबहूं कर उठाय गति चाले, सांग उपांग बतावत हाले.
कबहूं ठुमक ठुमक पग धावे, घुंघरू की गति अधिक बजावे.
हो अनुराग रागिनी गावे, वाजे अद्भुत अधिक वजावे.

दोहा

काह बुद्धि जो कह सकूं, रहस केलि को साज।
अद्भुत लीला हो रही, वरणत आवे लाज॥
अखंड धाम लीला अमर, नित वृन्दावन रास।
नित बिहार जहँ होत है, चरणदास को बास॥
गौरी सुत नहिं गा सके, नहीं शारदा बाम।
चरणदास कह बुद्धि है, वर्णि सके निज धाम॥

बड़ी दया मो पै करी , कृष्ण कुंवर सुन लाल ।
वाणी आप बनाय के , कीन्हों मोहि निहाल ॥
मम हिय मन्दिर आय के , तुम ने कीन्ह प्रकाश ।
जो कुछ कहो सो तुम कहो , मेरे मुख सों भाष ॥
आदि पुरुष परमातमा , तुम्हें नवाऊं माथ ।
चरणन पास निवास दे , कीजे मोहि सनाथ ॥
तुम्हरी भक्ति न छोड़ि हौं, तन मन शिर हू जाव।
तुम साहिब मैं दास हूं , भलो बनो है दाव ॥
शुक्राचार्य गुरु की कृपा , मूरख भयो प्रवीण ।
मम मस्तक पर कर धरो , जान निपट आधीन ॥
कोटि नाम को फल लहे , तिरवेणी असनान ।
सो भागी वह लोक का, होय सु मूरख ज्ञान ॥
पढ़े सुने जो प्रीति सों , पावे भक्ति हुलास ।
नित उठकर तू पाठ यह, चरणदास कह भाष ॥
प्रेम बढ़े अघ सब हरे , कलह कल्पना जाय ।
पाठ करे या लोक को , ध्यान करत दरशाय ॥

इति श्री अमरलोक निज धाम, निज स्थान,

पुरुषोत्तम पुरुष बिराजमान प्राप्ते नरो

दुर्लभो , श्री शुकदेव जी के

चरणदास कृत लीला

❀ सम्पूर्णम् ❀

# अथ चरणदास कृत शब्द लिख्यते

## गुरु स्तुति

### दोहा

ब्रह्म रूप आनन्द घन, निर्विकार निर्लेव।
मंगल करण दयाल जी, तारण गुरु शुकदेव॥

### श्री कृष्ण स्तुति

दश चीन्हे दहिने चरण, बांयें हैं दश एक।
जिन के निश्चल ध्यान से, कटें जु विघ्न अनेक॥
शुक्राचार्य आज्ञा दई, चरणदास उच्चार।
सो अब वर्णन करत हूं, चरणदास विस्तार॥

### राग कल्यान

चरण चिन्ह चित लाव, फिर तेरा जन्म न होगा।
पद्म झलक छबि निरख नैन भर, अंकुश मन अटकाव.
अम्बर छत्र कुलिश जब राजत, ध्वजा धेनु पद भाव.
शंख चक्र अरु कलश सुधा हद, तासों चित उरझाव.
स्वस्तक जम्बू फल की शोभा, तासों सुरति लगाव.
अर्ध चन्द्र षटकोण मीन बुंद, ऊर्ध रेख लख चाव.
अष्ट कोण तिरकोण विराजे, धनुष वर्ण उर धाव.
कोटि काम नख ऊपर धारूं, नूपुर सुंदर पांव.
श्री शुकदेव चिन्ह पद वरणे, सो तू हिय में लाव.
चरणदास हित राख भोर निशि, बार बार बलि जाव.

### आरती राग भैरव

मंगल आरति या विधि कीजे, हर्ष पाय आनँद रस पीजे.

मंगल प्रथम गुरू को जाना, तिनसों पायो पद निर्वाणा.
ज्ञान भानु प्रगट्यो कियो भोर, मिट गई रैन तिमिर घनघोर.
द्वितिये मंगल श्री गोपाल, भक्ति वसल बहु पतित उधार.
राम कृष्ण पूरण अवतार, दुष्ट दलन सन्तन रखवार.
त्रितिये मंगल प्रभु के साथ, मान सरोवर मता अगाध.
तिनकी संगति उठ गयो सन्सा, काग पलट गति हो गयो हन्सा.
चौथे मंगल श्री भागवत, घट उजियार करन को जोत.
पाप ताप दुख मेटन हारी, जिहि नौका चढ़ उतरहु पारी.
पांचों मंगल श्री शुकदेव, तन मन सों कर उन की सेव.
चरणहिदास चरण चित लायो, मंगलचार भये यश गायो.

## आरती

गगन मंडल म आरति कीजे, उत्तम सौंज सकल सज लीजे.
सुष्मन अमृत कलश धरावे, मनसा मालिनि फूल चढ़ावे.
घीव अखंडा सोऽहं बाती, त्रिकुटी ज्योति जले दिन राती.
पवन साधना थार करीजे, तामें चौमुख मन धर दीजे.
रवि शशि हाथ गहो तिहि माहीं, क्षण दहिने क्षण बांयें लाई.
सहस कमल सिंहासन राजे, अनहद झालर नितही बाजे.
यह बिधि आरती सांची सेवा, परम पुरुष देवन को देवा.
चरणदास शुकदेव बतावे, ऐसी आरती पार लगावे.

सतगुरु देव का अंग

## राग धनाश्री

अब मैं सतगुरु शरणहि आयो,
बिन रसना बिन अक्षर वाणी, ऐसहि जाप सुनायो.
काम क्रोध मद पाप जराये, तीनों ताप नशायो.
नागिनि पांच मुई सँग ममता, दृष्टि सों काल डरायो.

किरिया कर्म अचार भुलाना, ना तीरथ मग धायो.
समझो सहज बचन सुन गुरु के, भ्रम को बोझ भगायो.
ज्यों २ जपूं गर्क भयो त्यों २ , वह मोहिं २ समायो.
जग झूठे झूठो तन मेरो , यो आपनही पायो .
याको जपे जनम सो जीते , सोऽहं शुद्ध बतायो .
चरणदास शुकदेव दया सों , सागर लहर समायो.

भक्ति का अंग

## राग काफी

रामा २ जी सुन लीजे बिनती मेरी, मैं शरण गहों हूं तेरी.
तैं बहुतक पतित उधारे , भव जल सों पार उतारे .
हौं सब को नाम न जानूं , अब कोइ २ भक्ति बखानूं.
अम्बरीष सुदामा नामा , सो पहुंचायो निज धामा.
ध्रू पांच वर्ष को बाला , तैं दर्श दियो गोपाला .
प्रहलाद टेक तुम राखी , यह जानत है सब साखी.
शिवरी के फल तुम खाये , तिरलोचन घर आये .
पंडवन की करी सहाई , द्रोपदा की लाज बढ़ाई .
गणिकाहू पार लगाई , कर्मा की खिचड़ी खाई .
मीरा तुम्हरे रंग भीनी , नरसी की हुंडी लीन्ही .
धना को खेत जमायो , ते साग बिदुर घर खायो .
कबीर की बारिध लाये , सब काज किये मन भाये.
सदना से सेना नाई , तैं बहुत किये मुक्ताई .
ग्राह सों गज जाय छुड़ायो , तैं मोकों क्यों बिसरायो.
सनकादिक ब्रह्मा ध्यावें, तेरा शेष आदि यश गावें.
तेरा वेद पार नहिं पाया , जिन नेति २ बतलाया .
मोहि काम क्रोध ने घेरा , ममता की उर उरझेरा.

मोह लोभ के फन्दे परिया, तेरा नाम बिसर दुख भरिया.
अब तुमही करो नबेरा, मोहि जान चरण का चेरा.
मैं पापी महा सन्तापी, अपराधी बहुत कलापी.
तुम छोड़ काहि पै जाऊं, यह दुख कौने समझाऊं.
शुकदेव गुरु मैं पाया, जिन तेरा नाम बताया.
चरणदास आपनो कीजे, मोहि भक्ति दान बर दीजे.

## राग धनाश्री

हरि जी संकट वेग निवारो.
जनको भीर पड़ी है भारी, चक्र सुदर्शन धारो.
कंस निकन्दन रावण गंजन, हरणाकुश मारो.
दुष्ट दलन अरु भक्त उधारन, जन प्रहलाद उवारो.
पांचों पांडव राख लिये हैं, कौरव दल संहारो.
जिन २ दोष किये सन्तन सों, सोई २ उन हन डारो.
निर्भय भक्ति करें जन तेरे, ऐसो समय बिचारो.
चरणदास के घट में बैरी, तिनको क्यों न विदारो.

## राग बिभास

राखो जी लाज गरीब निवाज.
तुम बिन हमरे कौन सँवारे, सबही बिगरे काज.
भक्ति वत्सल हरि नाम कहायो, पतित उधारन हार.
करो मनोरथ जनके पूरण, शीतल दृष्टि निहार.
तुम जहाज मैं काग तिहारो, तुम तज अन्त न जाऊं.
जो तुम हरि जी मार निकासो, और ठौर नहिं पाऊं.
चरणदास प्रभु शरण तिहारी, जानत सब संन्सार.
मेरी हँसी सो हंसी तिहारी, तुमहू देख विचार

## रामकली

चार वर्ण सों हरिजन ऊंचे.

भये पवित्तर हरि के सुमिरे, तनके उज्जल मन सूचे.
जो न पतीजे साख बताऊं, शिवरी के जूठे फल खाये.
बहुत ऋषीश्वर ह्वांई रहते, तिन घर रामचन्द्र नहिं आये.
भीलनी पांव दियो शिल तामें, शुद्ध भयो जल सब कोइ जाने.
मन्द हुतो सों निर्मल कीनो, अभिमानी नर भये खिसाने.
ब्राह्मण क्षत्री भूप हुते बहु, बाजो संख स्वपच जब आयो.
बाल्मीक यज्ञ पूरण कीन्हो, जय जय कार भयो यश गायो.
जाति वर्ण कुल सोई नीको, जाके होवे भक्ति प्रकाशा.
गुरु शुकदेव कहत हैं ताकों, हरि जन सेव चरणही दासा.

## राग सोरठ

भक्त जन सो हरि के मन भावे.
निष्कामी अरु प्रेम हिये में, अनन्य भक्ति चितलावे.
प्रभु चरण कमल के ऊपर, भँवरा भयो लिटावे.
सिद्धि न चाहे ऋद्धि न मांगे, दर्शन को ललचावे.
मुक्ति आदि दे चाह न कोई, आशा सकल गमावे.
रोमहिं रोम पुलक सब देही, गोविंद के गुण गावे.
गद गद वाणी कंठ उसांसें, नैनन नीर ढुरावे.
परमेश्वर मिलने की लहरें, इक आवे इक जावे.
कहैं शुकदेव चरणही दासा, हरिहू कंठ लगावे.

## राग बिलावल

हमरे चरण कमल को ध्यान.
मूर्ख जगत में भ्रमता डोले, चाहत जल अस्नान.
सब तीरथ वाही सों प्रगटे, गंगा आदिक जान.
जिन सेवा सब पातक नाशें, नित होवे कल्यान.
संकृत ग्रेही वाना धारी, हैं सबही अज्ञान.
हरि सा हीरा छोड़ दियो है, पूजे कांच पषाण.

हरि चरणन की महिमा जानें, हैं वे सन्त सुजान.
भोंदू नर माया के चेरे, इन को क्या पहिचान.
चरणदास शुकदेव गुरु ने, दीन्हों अंजन ज्ञान.
सांचो प्रीतम सूझ परो है, बिसर गयो सब आन.

राग सोरठ

हरि पावन की गति न्यारी है.
कष्ट तपस्या पढ़न लिखन सों, ढूंढ़े मूढ़ अनाड़ी है.
अष्ट शत तीरथ भरमत डोले, देह गई सब हारी है.
निर्जल बरत किये बहु भांती, आश फांस की धारी है.
तप करने को बन जा बैठे, कीन्ही त्वचा उघारी है.
पवन अहारी तनही गारो, दरशे नाहिं मुरारी है.
विद्या पढ़ पढ़ पंडित होगये, अर्थ करे बहु भारी है.
अभिमानी हो जन्म गँवाया, भया न प्रेम खिलारी है.
सांच भक्ति विन हरि नहिं रीझे, बहुत गये सिरमारी है.
चरणदास शुकदेव श्याम पर, तन मन सों बलिहारी है.

राग बिलावल

जग में दो तारन को नीका.
एक नाम तो ध्यान गुरु कीजे, दूजे नाम धनीका.
कोटि भांति कर निश्चय कीना, संशय रहा न कोई.
शास्त्ररु वेद पुराण टटोले, तिन में निकसा सोई.
इनहीं के पीछे सब जानो, योग यज्ञ तप दाना.
नव विधि नवधानेम प्रेम सब, भक्ति भाव अरु ज्ञाना.
और सबै मत ऐसे जानो, अन्न बिना भुस जैसे.
कूटत कूटत बहुतहि कूटा, भूष गई नहिं तैसे.
थोथा धर्म वही पहिचाने, तामें ये दोनों नाहीं.
चरण दास शुकदेव कहत हैं, समझ देख मन माहीं.

## राग बिलावल

नमो नमो श्री राम जी, देवन के देवा;
शिव नारद सनकादि लों, कोऊ लहे न भेवा.
ऐ जी निर्गुण ते सर्गुण भये, कौतुक विस्तारे;
साधुन की रक्षा करी, दानव दल मारे.
दशरथ सुत भूले कहैं, कोई जानत नाहीं;
इक शत अंड दिखाइया, अपने मुख माहीं.
गौरा ने परचौ लियो, सीता भेष बनायो;
देख रूप अनन्तही, तब मन बौरायो.
आदि निरंजन एक तू, दूजा नहिं कोई;
शुकदेव कही चरणदास सों, नित सुमिरो सोई.

## हेली

जो होवे हरिदास हेली, येते कुल तारे वही;
फल न मुक्ति चाहे नहीं री, येरा हेली भक्ति करे निर्वास.
बीस चार कुल दादा केरी अरी हेली, वास नाना के जान;
सोलह कुल ससुरार के, द्वादश सुता बखान.
वह नीके ग्यारह तिर्री अरी हेली, दश भुवा के पार;
मौसी के कुल आठही, बेद कहत हैं चार.
अष्टादश योंही कहैरी अरी हेली, कहैं साध अरु सन्त,
चरणदास शुकदेव भी, कहै कमला को कन्त.

अथ सुमरिन अंग

## राग काफी

कहां कहां तोहि पुकारूं, करतार हमारे;
नाम अनन्त अन्त नहिं जाको, वहु गुण रूप तिहारे.
अजर अमर अविगत अविनाशी, अलख निरञ्जन स्वामी;

पुरुष पुरातम पुरुषोत्तम , प्रभु पूरण अंतरयामी .
कृष्ण कन्हैया बिष्णु नरायण , जोती रूप बिधाता ;
अपरम्पार मुकुन्द मुरारी , दीन बन्धु ब्रज नाथा .
यादव पति जगदीश चतुर्भुज , निर्भय सर्व प्रकाशी ;
पारब्रह्म प्राणन को दाता , सब ठां घट घट वासी .
निर्विकार परमेश्वर गिरिधर , माधव गोविंद प्यारा ;
कमल नयन केशव मधु सूदन , सब में सब से न्यारा .
हृषी केश मुरली धर मोहन , ॐ अखिल अयोनी ;
भगवत वासुदेव भगवाना , ज्ञानी ध्यानी मौनी .
दीनानाथ गुपाल हरी हर, गरुड़ध्वज घन श्यामा ;
भक्ति वसल अरु देवकी नन्दन , करता सब विधि कामा .
आदि प्रधान माधुरी मूरत , धरणी धर बलबीरा ;
नन्द नन्दन अरु यशुदा नन्दन , सुन्दर श्याम शरीरा .
परसुराम नरसिंह विश्वम्भर , अचल अखंड अरूपी ;
ईश अगोचर और जगत गुरु , परमानन्द बहुरूपी .
करुणा मय कल्याण अनन्ता , दया सिन्धु बनवारी ;
धारण शंख चक्र रुक्मिणि पति , आनन्द कन्द विहारी .
परम दयालु मनोहर नरहरि , कृपा सिन्धु फल दाता ;
कन्स निकन्दन रावण गंजन , जगपति लक्ष्मी नाथा.
जगन्नाथ अरु बद्री नाथा, निर्गुण सर्गुण धारी ;
दामोदर रघुपति सीतावर , रामा कुंज विहारी .
दुष्टदलन सन्तन के रक्षक , सकल सृष्टि को साईं ;
दुःख हरण के कौतुक अगणित , शेष पार नहिं पाई .
सौ अरु आठ नाम की माला , जो नर मुख उच्चारे ;
अपने कुल की सारी पीढ़ी , यक अरु सौ को तारे .
गुरु शुकदेव मंत्र निज दीन्हो , राम नाम तत्व सारा ;

चरणदास निश्चय से जपके . होवत भव जल पारा .

## राग बिलावल

अब तू सुमिरन कर मन मेरे ;
अगले पिछले अब के कीन्हे , पाप कटें सब तेरे .
यम को दंड दहन पावक की , चौरासी दुख पेरे ;
भर्म कर्म सबही कट जैहैं , जगत व्याधि उरझेरे .
ये है शक्ति मुक्ति गति आनँद , अमरहि लोक वसेरे ;
जन्मे मरे न योनी आवे , या जग केरे न फेरे .
सुमिरन साधन माहिं शिरोमणि , जो सुमिरण कर जाने ;
काम क्रोध मद पाप जरावे , हरी और नहिं माने .
गुरु शुकदेव दिया है सुमिरन , बिन जिह्वा कर लीजे ;
चरणदास कहैं घेर घेर कर , अर्ध ऊर्ध मन दीजे .

## राग केदारा

अरे मन करो ऐसा जाप .
कटें संकट कोटि तेरे , मिटें सगरे पाप .
चेत चेतन खोज करले , देख आपा आप .
काग सों जब हंस होवे , नाम के परताप .
ध्यान आतम सुरति राखो , छुटे तिरगुण ताप .
सुरति माला सुमिर हिरदै , छोड़ सकल संताप .
परा भक्ति अगाध अद्भुत , बिमल अरु निष्काम .
चरणदास शुकदेव कहिया , बसे निज पुर धाम .

## राग बिलावल

ऐसा सुमिरन कीजे , सुन हो मन मेरे.
रसना राम उचारिये , कर माला फेरे.
निन्दा अकस न राखिये , काहू दुःख न दीजे .
सन्तों से सन्मुख रहो , गुरु सेवा कीजे .

भूखे भोजन दीजिये, प्यासे नीर पियाओ.
दीन गरीब को दान दीजिये, शंक न मन में लियाओ.
सत संगित में मिल रहो, गुरु मंत्र सों रहिये.
आन धर्म नहिं चालिये, यम दंड न सहिये.
तामस को विष ज्यों तजो, शुकदेव बतावे.
चरणदास हरि हरि जपे, मुक्त हो जावे.

## राग बिलावल

थोथे सुमिरे कहा सरे.
मनके रोग शोग नाहिं खोये, हिन्सा डूब अकस जरे.
नारी सुत सों नेह कियो है, नेक न हरि को प्रेम अरे.
कुल नाते परिवार सँवारे, साधुन को नहिं लहरकरें.
माला तिलक सुधार सँवारे, राखत छल बल मकर घने.
अन्तर और निरन्तर औरै, सिंह गऊ मुख रहत बने.
ऐसी भक्ति मुक्ति नहिं पावे, कर्म लगें अरु नर्क परे.
यम के दहन पावक की, जन्म मरण औ नाहीं टरे.
लक्षण प्रेम सहित जप कीजे, भीतर बाहर उघर नचे.
चरणदास शुकदेव कहत हैं, हरि रीझे जग व्याधि वचे.

## राग बिलावल

माला फेरी कहा भयो.
अन्तर का मनका नहिं फेरा, पाप करत सब जन्म गयो.
पर निंदा पर नारि न भूले, खोट कपट की और नया.
काम क्रोध मद लोभ न खोय, ह्वै रहो मूरख मोह मयो.
दुनिया सांच समझ घर कीन्हों, धन जोरन का परन लयो.
दया धर्म दोउ मारग छोड़, मँगतन को नहिं दान दयो.
गुरु सों झूठ भगत साधुन सों, हरि को नाहीं नेह जयो.
चरणदास शुकदेव कहत हैं, कैसे कहिये मुक्ति हयो.

## भक्त अंगमें राग नट वा सारंग बिलावल

हमारे राम भक्ति धन भारी,
राजा ना डांडे चोर नहिं चोरे, लूट सके नहिं धारी;
प्रभु पैसे अरु राम रुपैये, मुहर महब्बत हरि की.
हीरा ज्ञान युक्ति के मोती, कहा कमी ह्यां ज़र की;
सोना शील भंडार भरो है, रूपा रूप अपारा.
ऐसी दौलत सतगुरु दीन्ही, जाका सकल पसारा;
बांटो बहुत घटे नहिं कबहूं, दिन दिन ड्योढ़ी ड्योढ़ी.
चोखा माल द्रव्य अति नीका, बट्टा लगे न कौड़ी;
शाह गुरू शुकदेव विराजें, चरणदास बन जोटा.
मिल मिल रंक भूप हो बैठे, कबहुं न आवे टोटा;

## तथा

जो नर हरि धन सों चितलावे,
जैसे तैसे टोटा नाहीं, लाभ सवायो पावे.
मनकर कोठी नाम खाज़ाना, भक्ति दुकान लगावे;
पूरा सतगुरु साक्षी करके, संगति बनिज चलावे.
हुंडी ध्यान प्रेम ले पहुंचे, प्रेम नगर के माहीं.
सीधा साहूकारा सांचा, हेर फेर कुछ नाहीं;
जित सौदागर सबही सुखिया, गुरु शुकदेव वसाये.
जन रणजीत विलम रहे हांईं, जूना पंथी आये;

## राग देवगन्धार

मनुआं राम को व्योपारी
अबकी खेप भक्ति की लादी, बनिज कियो तैं भारी.
पांचों चोर सदा मग रोकै, इनसों कर छुटकारी;
सतगुरु नायक के संग मिल चल, लूटे सके नहिं धारी.
दो ठग मारग माहिं मिलत हैं, एक कनक अरु नारी;

सावधान हो पेंच न खैयो, रहियो आप संभारी.
हरि के नगर में जा पहुंचोगे, पैहो लाभ अपारी;
चरणदास तो कों समझावे, ये मन बारम्बारी.

अथ सन्त शूरमा का अंग

## दोहा

सन्त समान न शूरमा, कह रणजीत विचार।
टेक गहे सन्मुख चले, बांध प्रेम हथियार॥

## राग सोरठ

ना कोई संत समानहिं शूरा.
मोह सहित सब सेना मारी, ऐसा सावन्त पूरा;
क्षमा की ढाल गही कर अपने, बांधे सत तलवारी.
कर्म भर्म के दल को पेले, पिल पिल बारंबारी;
सुरति को तीर हृदय को तर्कस, ध्यान कमान बनावे.
प्रेम हाथ सों खैंचन लागे, चोट निशानहि लावे;
बुद्धि विवेक कटारी बांधे, वचन विलास की बरछी.
सतपुरुषों के हियरे बेधे, कह कह बतियें तिरछी;
चित में चाव चौगुना उनके, सुन सुन अनहद तूरा.
अगम पंथ सों पग न डिगावे, होय जाय चक चूरा;
मन हुलास आशा धर पिय की, शून्य खेत में धावे.
चरणदास शुकदेव कहत हैं, अमरलोक पद पावे;

## सोरठ वा आशावरी

साधू पै जग है सोइ शूरा.
ताके मुख पर नूर रहे, बाजे मारू तूरा.
कलंगी अरु गज गाह बनावे, इन का परन दुहेला;
सावंत भेष बनाय चलत है, यह नहिं सहज सुहेला.

या बाने का नेम यही है, पग धर फिर न उठावे;
जो कुछ होय सो आगे आगे, आगेही को धावे.
रण में पैठ झड़ा झड़ खेले, सन्मुख शस्तर खावे;
खेत न छोड़े ह्वाई जूझे, तबही शोभा पावे.
गुरु शुकदेव दिया है हेला, ऐसा होय सो आवे;
चरणदास बाना सन्तनका, तोलै शीश चढ़ावे.

## राग सोरठ

साधो जो पकड़ी सो पकड़ी.
अब तो टेक गही सुमरनकी, ज्यों हारिल को लकड़ी;
ज्यों शूरा ने शस्तर लीन्हों ज्यों बनिया ने तखड़ी.
ज्यों सतवन्ती लियो सिधारो, तार गह्यो ज्यों मकड़ी;
नारी ज्यों कामी कों प्यारी, कृपणहि प्यारी दमड़ी.
ऐसे हमको राम हैं प्यारे, ज्यों बालक को ममड़ी;
ज्यों दीपक को तेल है प्यारो, ज्यों पावक को समरी.
ज्यों मछरी को दीपक प्यारो, बिछुरे दीखे यमरी;
साधुनके संग हरि गुण गाऊं, तातें जीवन हमरी.
चरणदास शुकदेव दृढ़ाओ, और छुटी सब गमरी;

## सोरठ

जब गुरु शब्द नगारे बाजे;
पांच पचीसो बड़े मवासी, सुनके डंका भाजे.
दृढ़ दस्तक ले ज्ञान जसावल, जाय नगर के माहीं;
हरि के दाम भजन के मांगे, चित्त चौधरी ताहीं.
कानूंगोय लोभ के खोटे, छल बल पाही झूठे;
काम कृषाण अरु मोह मुकद्दम, सबै बांधकर लूटे.
तृष्णा आमल मद को माता, पकड़ गांव सों काढ़े;
मन राजा को निश्चल झंडा, प्रेम प्रीति सों गाड़े.

सुबुधि दिवान शील को बोहित, यत को हाकिम भारी;
धर्म कर्म सन्तोष सिपाही, जा के आज्ञाकारी.
सांचा कारिन्दा पटवारी, धीरज नेम विचारे;
दया क्षमा अरु बड़ी दीनता, पूरी जमा सम्हारे.
मगन होय चौकस कस करके, सुमति जेवरी मापै;
दर्शन द्रव्य ध्यान को पूरण, बाटा पावे आपै.
श्री शुकदेव अमल कर गाढ़ो, सूबादेश बसावे;
चरणदास हूं जिन को नायब, तत परवाना पावे.

राग कल्यान

वह राजा सो यह विधि जाने, काया नगर जीत वह ठाने.
काम क्रोध दोऊ बल पूरे, मोह लोभ अति सावंत शूरे.
बल अपनो अभिमान दिखावे, इन कों मार राह गढ़ धावे.
पांचों थाने देह उठाई, तब गढ़ में कूदे मन राई.
ज्ञान खड्ग द्वन्द मचावे, कपट कुटैला रहन न पावे.
चुन चुन दुर्जन सब हन डारे, रहते सहते सकल विडारे.
मनसो होय ब्रह्म गति सोई, लक्षण जीव रहे नहिं कोई.
अचल सिंहासन जब तू पावे, मुक्ति खवासी चौंर ढुरावे.
आठौं सिद्धि जहां कर जोरे, सोंहिता के मुख नहिं मोड़े.
निश्चल राज अमलकर पूरा, बाजे नौबत अनहद तूरा.
तीन तीस अरु कोठि अठासी, वे सब तेरी करें खवासी.
गुरु शुकदेव भेद दियो नीको, चरणदास मस्तक दियो टीको.
रणजीता यह रहनी पावे, थोथी कथनी कर्म बहावे.

अथ योग अंग

धनाश्री

जो जन अनहद ध्यान धरे.

पांचों निर्बल चंचल थाके, जीव ही जीव मरे.
शोधे मूल बन्द दे राखे, आशन सिद्ध करे.
त्रिकुटी लाय सुरति ठहरावे, कुम्भक पवन भरे.
घन गर्जें अरु बिजली चमके, कौतुक गगन घरे.
बहुत भांति जहं बाजन बाजें, सुन सुन संघ अरे.
सहज सहज सों होय प्रकाशा, व्याधा सकल हरे.
जग की आश वास सब छूटे, ममता मोह जरे
शून्य शिखर पर आपा बिसरे, काल सों नाहिं डरे.
चरणदास शुकदेव कहत हैं, सब गुण ज्ञान गरे.

तथा

तब तैं अनहद घोर सुनी.
इन्द्री थकित गलित हूयो, आशा सकल भुनी.
घूमत नयन शिथिल भई काया, अमल जु सुरति सनी.
रोम २ आनंद उपज कर, आलस सहज बनी.
मतवारे ज्यों शब्द समायो, अन्तर भीज कनी.
भर्म कर्म के बन्धन छूटे, दुबिधा विपति हनी.
आपा बिसर जगत को बिसरो, कित रहीं पांच जनी.
लोक भोग सुध रही न कोई, भूले ज्ञान गुनी.
हो तहँ लीन चरणही दासा, कहैं शुकदेव मुनी.
ऐसो ध्यान भाग सों पैये, चढ़ रह शिखर अनी.

राग बिलावल

घट में खेल ले मन खेला;
सकल पदारथ घर ही माहीं, हरि सों होय जु मेला.
घट में देवल घट में जाती, घट में तीरथ सारे;
बेगहि आव उलट घट माहीं, बीते पर भी न्हारे.
घट में मान सरोवर शुभ है, मोती और मराला;

घट में ऊंचा ध्यान शब्द का, सोऽहं सोऽहं माला.
घट में बिन सूरज उजियारा, रात दिना नाहिं सूझै;
अमृत का नित भोग लगत है, बिरला जन कोइ बूझै.
घट में पापी घट में धर्मी, घट में तपसी योगी;
गुण अवगुण सब घट के माहीं, घटहि चिकित्सक रोगी.
राम भक्ति घट में उपजे, घट में प्रेम प्रकाशा;
शुकदेव कहैं चौथा पद घट में, पहुंचे चरणहि दासा.

## राग विभास

घट में तीरथ क्यों नहिं न्हायो;
इत उत डोलो पथिक बने हो, भर्म २ क्यों जन्म गँवायो.
गोमती कर्म सुकारथ कीजे, अधरम मैल छुटायो;
शीत सरोवर हित कर न्हायो, काम अग्नि की तपन बुझायो.
रेवा सोई क्षमा को जानो, तामें गोता लीजे;
तन में क्रोध रहन नहिं पावे, ऐसी पूजा चित दे कीजे.
सत यमुना सन्तोष सरस्वती, गंगा धीरज धारो;
झूठ कपट निर्लोभ होय कर, सबही बोझा शिर सों डारो.
दया तीर्थ कर्मनाशा कहिये, परसे बदला जावे;
चरणदास शुकदेव कहत हैं, चौरासी में फिर नहिं आवे.

## विभास

घट में तीरथ जो तुम न्हाओ;
तिन के न्हान अमर पद पहुंचे, आदि पुरुष निश्चय कर पाओ.
काशी सो तत करनी कीजे, कलिमल सकल नशाओ.
रहनि गहनि पुष्कर की जानो, तामें मज्जन क्यों न कराओ.
ध्यान द्वारिका दृढ़ कर परसो, हित की छाप लगाओ.
इन्द्री जित्र सोइ बद्रीनाथा, यह गति सत करि चित में लाओ.
योग युक्ति सों चुबकी लेकर, काग पलट हंसा हो जाओ.

तन मथुरा अरु मन वृन्दावन, तामें रहस रचाओ।
हृदय कमल खिले परकाशा, दर्शन पाय अधिक हुलसाओ।
गुरु चरणन में सब ही तीरथ, सिमिट सिमिट तहँ आओ।
चरणदास शुकदेव कहत हैं, अपना मस्तक भेंट चढ़ाओ।

## जयजयवन्ती

ऐसी जो युक्ति जाने, सोई योगी न्यारा भाई
आसन जो सिद्ध करे, त्रिकुटी में ध्यान धरे;
बिना तेल दिवा बारे, जोति हू उजारा।
संयम संभार साध, मूल द्वारबन्ध बांध;
शंखिनी उलट साध, काम देव जारा।
प्राण वायु हिये माहिं, खेंच के अपान लाई;
दोउ नीके मिल जाई, ऐसा खेल धारा।
कुम्भक अथक राखे, अनहद की ओर ताकै;
सुष्मन पैठ नाके, आगे जो बिचारा।
खोल के कपाट शिरा, कोऊ चढ़े शूर बीरा;
काम धेनु जावे तीरा, अमी को उबारा;
उन मुनी जाय लागे, निज घर माहिं जागे;
जनम मरण भागे, छूटे जग भारा।
गुरु शुकदेव कहैं, करनी या विधि लहैं;
चरणदास हो रहैं, आप को संवारा

## राग सारंग

पीवे कोइ यह प्याला मतवाला
सुर नर मुनि वा मद को तरसें, गुरु बिन लहने वाला।
शूद्र के घर भाटी औटैं, ब्रह्मा अग्नि जलाई;
शिव शोधैं अरु विष्णु चुवावें, पीवें साधु अघाई।
सीता प्याला भर भर देवे, हनूमान हंकारें।

व्यास शेष नारद सनकादिक, किरिया नाहिं विचारें.
नवधा नेमरु संयम पूजा, विसरी सब का कहिये.
घूमत रहे महा मद छाके, स्वर्ग मुक्ति न चहिये.
शुकदेव सुधारस अमृत, नित प्रति अचवन कीन्हा.
चरणदास पै कृपा करके, निज प्रसाद कर दीन्हा.

सारंग

साधो यह प्याला मतवार है.
अचवेगा कोई योगी युक्ता, चित आस्थिर मन मार है.
चन्द्र सूर्य दोउ सम कर राखे, ब्रह्म ज्वाल अन्तर बैरे.
मुद्रा लगे खेचरी जबहीं, बंकनाल अमृत झरे.
भँवर गुफा में भाटी औटे, भबक भबक सुष्मन चुवे.
सगुरा पीपी रहित भये हैं, बिन पिये उपजे मुवे.
शिव सनकादिक नारद शारद, और पिया नव नाथ हैं.
सिद्ध मुनि योगीश्वर आदिक, पीकर भये सनाथ हैं.
रामानन्द कबीर नामदेव, अमर हुआ जिन जिन पिया.
गुरु शुकदेव करी जब किरपा, चरणदास को सोई दिया.

बिलावल

करनी की गति और है, कथनी की औरै.
बिन करनी कथनी कथैं, बकवादी बौरे.
करनी बिन कथनी ऐसी, ज्यों शशि बिन रजनी.
बिना शस्त्र ज्यों शूरमा, भूषण बिन सजनी.
ज्यों पंडित कथ कथ भले, वैराग सुनावे.
आप कुटुम के फन्द पड़े, नाहीं सुरझावे.
बांझ झुलावे पालना, बालक नहीं माहीं.
वस्त्र विहीना जानिये, जहँ करनी नाहीं.
बहु दम्भी करनी बिना, कथ कथ मुये.

सन्तो कथि करनी कर, हरि सम हुये.
कहें गुरु शुकदेव जी, चरणदास विचारो ;
करनी रहनी दृढ़ रहो, थोथी कथनी डारो.

अथ बैराग का अंग

## राग मंगल

चला चली जग ठाट अचल हरि नाम है ;
माल मुल्क चल जाय, जाय रजधाम है.
तेल फुलेल लगाय, बहुत सुन्दर गये ;
नाना करते भोग, सो भी नर ना रहे.
तेज तमक उपजाय, जोबन घना ;
सकल बराती जाय, जाय दुलहिन बना.
रोगी रोग अरु वैद्य, जाय औषध भले ;
ज्योतिष पुस्तक टूट, विनश रज हो मिले.
ज्ञानी पंडित पीर, अधिक वे वश गले ;
गोस कुतब अब्दाल, पैगम्बर सब चले.
यक के पीछे एक, बहीर लागी चली ;
नरपति सुरपति जाहिं, अन्त वाही गली.
ऋषि मुनि देवता सिद्धि, योगेश्वर जायंगे ;
जिन वश कीन्ही मौत, सो भी न रहायंगे.
पांच तत्व गुण तीन, नहीं ठहरायंगे ;
स्वर्ग नर्क पाताल, सभी रल जायंगे.
धरती अम्बर जाय, जाय शशि भानु हैं;
चरणदास शुकदेव, दया लिये जान हैं.

## मंगल

रहे राम का नाम, जपे सो भी रहे ;
वेद पुराणन माहिं, साख योंही कहे.

जन्म मरण नहिं होय, न योनी आवई;
सत्य सिंहासन बैठ, अमरपुर जावई.
यम जालिम के दंड, भर्म छुट जायंगे;
लख चौरासी बन्ध, सभी कट जायगे.
नव ग्रह लगे न देह, गेह आनँद रहे;
डाकिनि सर्पन सिंह, भूत नाहीं दहे.
सत संगति गुरु सेव, आय घट में वसे;
कलह कल्पना जाय, द्वन्द्व संकट नशे.
तिलक दिये जु ललाट, जु कंठी सोहनी;
नौ वीस लक्षण धार, सहज जीते मनी.
ऊंची पदवी होय, जगत सब पग लगें;
दुष्ट जरें मन माहिं, दूरही से तकें.
पाप भजे मुख देख, दरश कोई करे;
भक्ति परापति ताहि, सुचरणों आपरे.
कहैं गुरु शुकदेव, चरणही दास सों;
सभी मंत्र शिर मौर, सुमिर हरि नाम को

## राग ललित

यह सब जानो झूठा ठाट, चेत सवेरे चालो वाट.
जग सराय में कहा भुलानो, भटियारी के मोह लुभानो;
तुझ को तो बहु कोसन जानो, कर हिसाव बनिये की हाट. १
कुटुम मित्र कोइ हितू न तेरा, अपने स्वारथही को घेरा;
ह्यां नहिं तेरा निश्चल डेरा, उठिये हूजे बेग उचाट. २
चलने की तदबीर न कीन्ही, खोटी राह थाह नहिं चीन्ही;
मजलों की खर्ची नहिं लीन्हीं, गाफिल सोवत अजहूं खाट. ३
मगमाहीं ठग बाग लगाये, बहुत मुसाफिर जित परचाये;
अरु उनको विष लाडू ख्वाये, मार लिये स्वादन के घाट. ४

सावधान कोई हाथ न आये, बचकर चले सुनिर्भय धाये;
उनके छलके पेंच न खाये, नेक न लागी तिनकी आंट. ५
मन चंचल का घोड़ा कीजे, ध्यान लगाम ताहि मुख दीजे;
हो असवार वाहि गह लीजे, भवसागर का चौंड़ा पाट. ६
चरणदास शुकदेव चितावे, अपना जान तोहि समझावे;
तेरे भले की बात बतावे, अन्तर कीट दूर हो जावे. ७

## मालश्री

वा दिनकी सुधराख, सोई दिन आवे हैं.
जब यमदूत बुलावन आवे, चल चल चल चल बोलें भारी;
एक घड़ी कोई राख न सकेगो, प्यारेहू तें प्यारी.
बिछुरे मात पिता सुत बन्धू, बिछुरे कामिनि कंत;
जो बिछुरे सो बहुर न मिल हैं, जो युग जावें अनन्त.
राम संगाती नेक न बिछुरे, मित्र और कोउ नाहीं;
अपनी काया सोई न अपनी, समझ देख मन माहीं.
चरणदास शुकदेव चितावें, छांड़ो जग उरझेरा;
अमर नगर पहिचानसि दोषी, जितकर निश्चल डेरा.

## राग बरुवा

तनका तनक भरोसा नाहीं, काहे करत गुमाना रे.
ठोकर लगे नेक कहुं चलते, करहैं प्राण पयानारे.
ऐंड़ अकड़ सब छांड़ बावरे, तेज तमक इतरानारे.
रंचक जीवन जगत अचम्भा, क्षण माहीं मर जानारे.
मैं मैं मैं मैं क्यों करता है, माया देख भुलानारे.
बहु परिवार देखकर भूला, मूरख मुग्ध अयानारे.
टेढ़ो चले मरोरत मूछें, विषय वास लिपटानारे.
आपन को ऊंचो कर जाने, माती मद अभिमानारे.
ठाढ़े घात करो शिरपै यम, ताने तीर कमानारे.

पलक पैंड़ पर तकके मारे, काल अचानक वाणारे.
स्वांस निकस फट आंख जाहि जब, काया जरे निदानारे.
तोकों बांध नर्क लेजैहैं, करहैं अगणित पानारे.
अजहूं चेत सीखले गुरु की, करले ठौर ठिकानारे.
अमर नगर पहिचानसि दोषी, तब नाहिं आवन जानारे.
हरि की भक्ति साधु की संगति, यह मत वेद पुराणारे.
चरणदास शुकदेव कहत हैं, परम पुरातम ज्ञानारे.

राग सोरठ

दमका नहीं भरोसारे, करले चलने का सामान;
तन पिंजरे से निकल जायगो, पल में पत्ती प्राण.
चलते फिरते सोवत जागत, करत खान अरु पान;
त्तण त्तण त्तण त्तण आयु घटत है, होत देहकी हान.
माल मुल्क अरु सुख सम्पति में, क्यों होता गलतान;
देखत देखत बिनश जायगा, मत कर मान गुमान.
कोई रहन न पावे जगमें, यह तू निश्चय जान;
अजहूं समझ छांड़ कुटिलाई, मूरख नर अज्ञान.
टेर चितावे ज्ञान बतावे, गीता वेद पुराण;
चरणदास शुकदेव कहत हैं, राम नाम उर आन.

झंझोटी

समझे नहीं माया का मतवार.
भूल रहो धन धाम कुटुम में, हरि गुरु दिया विसार.
पाप दुकान लीप अवगुण सों, पूंजी रची विकार.
काम के दाम क्रोध थैली धर, बैठा हाट पसार.
छल कांटे बिच कपट रुपैया, निरख तोल निरधार.
कर्म ढेर कौड़िन को करके, गिन गिन करत सुधार.
क्या लाया क्या लै निकसेगा, अपने जीव विचार.

कोइ दम अचरज देख तमाशा, क्षण यक राम सम्हार.
नर देही है लाल अमोलक, ताकी लख ले सार.
अन्त समय ज्यों हारो ज्वारी, दोउ कर चाले झार.
यह जग स्वपना जान बावरे, आखिर यम सों रार.
भुगते कष्ट महा दुख पावे, सो जीवन धिक्कार.
आवत काल अचानक तो पै, कह शुकदेव पुकार.
चरणदास अब नाम सुमिर ले, नातर होइ है ख्वार.

## राग केदार

रे नर क्यों गमावे जनम.
आब तेरी जाय बीती, नाहीं जाने मरम.
जनम पा हरि भजन करले, देह को यह धरम.
लोक अरु परलोक सुधरें, रहे तेरी शरम.
भक्ति सम कुछ नाहिं दीखे, योग यज्ञ तप करम.
आन धर्म बिचार त्यागो, मेट थोथा भरम.
चरणदास सत संग मिलके, आव हरि के शरण.
राम सुखदाई सुमिरले, वही तारण तरण.

## सोरठ

अरे नर अफल जन्म मत खोरे.
ज्यों तेली का बैल फिरत है, निशिदिन कोल्हू दौरे.
भक्ति बिहीने खर हो आये, ढोवत बोझा रोड़े.
भर्म भर्म के मनुष्य भयो है, ऊंचे आय चढ़ोरे.
लख चौरासी योनि मुक्ति कै, फिर ता में न परोरे.
अब के चूके बहु पछितै हो, मान बचन तू मोरे.
चरणदास शुकदेव कहत हैं, हरि पद सुरति धरोरे.

## सारंग वा नट वा धनाश्री

नट ज्यों नाच गये कितने;

दाता शूर सती सिध साधक, राव रंक जितने.
रावण कुम्भकरण से योधा, बहुतक कौन गिने;
बहुतक इक छत राज करत थे, पूजत लोक जिने.
बहुते भोगी नाना बिधि सों, करते भोग विलास;
बहुतक तपसी बन के बासी, तन प उपजी श्वास.
बहुतक ऋषि मुनि दुर्वासा से, देते आड़िग सराप;
बहुतक ज्ञानी हरि हो बैठे, कहते आपा ई आप.
हमहूं यह जग नाचन आये, यह नहिं अपना देश;
चरणदास शुकदेव दया सों, फिर नहिं काछुं भेष.

## काफी

कोइ दिन जीवे जो कर गुजरान.
कहर गरूरी छोड़ दिवाने, तजो अकस की बान.
चुगली चवाई अरु पर निन्दा, झूठ कपट अरु कान.
इन को डार गहो यत सत को, सोई अधिक सयान.
हरि २ सुमिरे छण नहिं बिसरे, गुरु सेवा मन ठान.
साधुन की संगति कर निशिदिन, आवे नेक न हान.
मुड़ो कुमारग चलो सुमारग, पावे निज पुर वास.
गुरु शुकदेव चितावे तोकों, समझ चरणही दास.

## कान्हरा

हरि बिन कौन तुम्हारो मीता.
कुटुम संगाती स्वारथ लागे, तेरी काहू को न चीता.
तैं प्रभु ओर से मुख मोड़ा, झूठे लोगन सों हित कीता.
अरु तैं अपनी आंखिन देखा, कई बार दुख सुख हो बीता.
सम्पति में सबही घिर आवें, बिपति पड़े अधिकहि दुख दीता.
मूठी बांध जनम नर लायो, हाथ पसार चलेगो रीता.
घर २ स्वांग फिरत तिन काजहि, कपि ज्यों नाचत ताता थीता.

मुयेन संगी होहिं तुम्हारे, बांध जलावें देह फजीता.
गुरु सेवा सत संग न कीन्हीं, कनक कामिनी सों करमीता.
चरणदास शुकदेव कहत हैं, मरत मरत हरिनाम न लीता.

### विहागरा

अरे मन हरि का हेत न जाना;
उपजाया सुमिरन के काजे, तैं कुछ औरहि ठाना.
गर्भ माहिं जिन रचा कीन्हीं, हां खाने को दीन्हा;
जठरानल सों राख लियो है, अंग संपरन कीन्हा.
बाहर लाय बहुत सुध लीन्ही, दशन बिना पय प्यायो;
दांत भये भोजन बहु भांती, हित सों तोहि खवायो.
और दिये सुख नाना विधि के, समझ देख मन माहीं;
भूलो फिरत महा गर्वायो, तैं कुछ जानत नाहीं.
तैं काजे प्रभु सब कुछ कीन्हा, तू कीना जप काजा;
जग व्यवहार पगोही बोले, तोहि न आवे लाजा.
अजहूं चेत उलट हरि सोंही, जन्म सुफल कर भाई;
चरणदास शुकदेव कहैं यों, सुमिरन है सुखदाई.

### सोरठ

मो कों भय अति वाही दिन को.
जब यह पत्ती माया लोभी, त्यागे पिंजरा तन को.
सुत दारा के मोह फंसो है, लोभ लगो है धन को.
काम क्रोध को कंपा खायो, भयो आधीन सबन को.
पांच पहर धन्धे में खोये, नाम न लेत भजन को.
तीन पहर नारी संग मातो, मानत सुख इन्द्रिन को.
आपन को ऊंचो कर जाने, कर अभिमान बड़न को.
सत संगति के निकट न आवे, जो है ठाट तरन को.
यम किंकर जब आन गहैंगे, तब नहिं धीर धरन को.

गुरु शुकदेव सहाय करेंगे, आसरो दास चरण को.

## परज

जिन्हें हरि भक्ति पियारी हो.
माता पिता सहजही छूटें, छूटें सुत अरु नारी हो.
लोक भोग फीके लगें, सम अस्तुति गारी हो.
हानि लाभ नहिं चाहिये, सब आशा हारी हो.
जग सों मुख मोड़े रहे, करे ध्यान मुरारी हो.
जित मनुआं लागो रहे, भई घट उजियारी हो.
गुरु शुकदेव बताइया, प्रेमी गति भारी हो,
चरणदास चारों वेद सों, औरै कछु न्यारी हो.

## हेला

झूठी जगत की प्रीति है, नहीं छांड़ो हरि सों प्रीति हेला.
रंग कुसुम संसार कोरे, अरे हेला प्रभु को रंग मंजीठ.
धन योवन थिर ना रहै रे, अरे हेला मतकर गर्व गुमान.
क्षण क्षण में अवसर जात है, हरिसों कर पहिचान.
अन्त समय पछितायगोरे, अरे हेला जब यम घेरें आय.
जिनके संगत मिल रहो, कोई न छुटावें जाय.
बीत गई सोई जानदे अरे हेला, अजहूं समझ गँवार.
शरण गहो सतसंग को, गुरु के बचन सम्हार.
श्री शुकदेव बताइया अरे हेला, राम नाम ततसार;
चरणदास यों कहत हैं, ले ले उतरो पार.

## हेली

और न मीता कोय, हेली समझ सम्हारो रामजी;
जीवत की रक्षा कररी अरी हेली मुये मुक्ति करे तोहिं.
अरु सब स्वार्थ के सगेरी अरी हेली, अन्त न कोई साथ;
सुख में सबही रल मिले, दुख में सुनें न बात.

छलकर मन की बूझलेरी, अरी हेली पाछे डारे घात;
तिन को तू अपना कहे, सो धोखा हो जात.
भेद न अपनो दीजियेरी अरी हेली, कोऊ कैसो होय;
हिरदय की हिरदय रहै, हरि ही जाने सोय.
कै गुरु अपनो जानियेरी अरी हेली, कै सत संगति वास;
गुरु शुकदेव चितावई, देख चरणही दास.

### अथ ज्ञान का अंग

### राग कड़वा

साधो गुरु दया आप को यो विचारा.
झूठ अरु सांच को समझ कर मूल सों;
माया अरु ब्रह्म को किया न्यारा.
पांच अरु तीन गुनि देह को ठाट है;
तासु को लगत है सब विकारा.
ब्रम्ह अडोल अम्मोल अत्तोल है;
और निर्लिप्त हरि निर्विकारा.
जाके रूप नहीं रेख अरु नाम सूरत नहीं;
सोई निज तत्व है निराकारा.
सुरति अरु निरति जहां थक रहैं;
तहां बिन भानु अति है उजारा.
बिना गुरुमुखी कोई पहुंच हां न सके;
कनक अरु कामिनी घेर मारा.
चखे सोई सन्त निर्वाण हो;
शूरमा ज्ञान अरु ध्यान को कर अहारा.
आवा अरु गमन की टूट फांसी गई;
पायो गुरु भेद गया तिमिर सारा.

चरणदास शुकदेव मिले भर्म सब दल मले;
होय रणजीत अब गति निहारा.

तथा

साधो ब्रम्ह दरियाव नहीं वारपारा.
आदि अरु मध्य कहूं अन्त सूझे नहीं;
नेति ही नेति वेदों पुकारा.
मूल प्रकृति सी बहुत लहरें उठें;
सके को पाय गुण है अपारा.
विरंचि महादेव से मीन बहुत जहां;
होय मगन कभी गोता मारा.
तासु में बुद बुदे अंड उपजें मिटें;
गुरु दई दृष्टि जासों निहारा.
छका छवि देख अतीत को भेष कर;
जगै जब भाग निरखे बहारा.
मर जिया पैठिया थाह पाई नहीं;
थका हाई रहा फिर न आया.
गया था लाभ को मूल खोयो सबै;
भया अचरज आपन गँवाया.
पार बिन सिन्धु अरु निरा आनंद है;
आपही आप है निराधारा.
चरणदास शुकदेव तहां दोऊ रल मिले;
तुरतही मिट गया खोज सारा.

धनाश्री

सहज गति ज्ञान समाधि लगाई.
रूप नाम जहँ किरिया छूटी, हू मैं रहन न पाई.
बिन आसन बिन संयम साधन, परमातम सुधपाई.

शिव शक्ती मिल एक भये हैं, मन माया नहिं राई.
मगन रहो दुख सुख दोउ मेटे, चाह अचाह मिटाई.
जीवन मरण एकसो लागे, तब तें आप गँवाई;
मैं नाहीं नख शिख हरि राजें, आदि अन्त मध्याई.
शंका कर्म कौन को लागे, काकी होय मुकताई.
सकल आपदा व्याधि टरी सब, दुई कहां मो माहीं;
सब हमही रामा नहिं पैये, सब रामा हम नाहीं.
नित आनन्द काल भय नाहीं, गुरु शुकदेव समाधी;
चरणदास निज रूप समाने, यह तो समझ अगाधी.

तथा

निरन्तर अटल समाधि लगाई;
ऐसी लगी टले नहिं कबहूं, करनी आश कुटाई.
काको जप तप ध्यान कौन को, कौन करे अब पूजा;
कियो विचार नेक नहिं निकसे, हरि बिन और न दूजा.
मुद्रा पांच सहज गति साधी, आलस आशन सोई;
सब रस ब्रह्म मूल जब शोधा, आप बिसर्जन होई.
भूलो बन्ध मुक्ति गति साधन, ज्ञान विशेष भुलाना;
आतम और परमातम भूला मन भयो तत गलताना.
अचल समाधि अंत नहिं ताको, गुरु शुकदेव बताई;
चरणदास को खोज न पैये, सागर लहर समाई.

सोरठ

हो अविगत जो जाने सोई जाने;
सब की दृष्टि परे अविनाशी, कोई कोई जन पहिचाने.
रेख जहां नहिं खैंच सकैरे, ठहरे न हां राई;
चित्र चितेरा खेंच न सकैरे, पुस्तक लिखा न जाई.
श्वेत श्याम नहिं राता पीला, हरी भांति नहिं होई;

अति असूध अदृष्टि अकथ है, कह सुन सके न कोई.
सर्व समय अरु सब देशन में, सर्व अंग सब माहीं;
कटे जले भीजे नहिं छीजे, हले चले वह नाहीं.
नहिं गाढ़ा नहिं झीना कहिये, नहिं सूक्षम नहिं भारी;
बाला तरना बूढा नाहीं, न वह पुरुष न नारी,
नहीं दूर नहिं निकट हमारे, नहीं प्रगट नहिं गूझे;
ज्ञान आंख की पलक उघाड़ो, जब देखो रे सूझे.
वासों उतपति परलय होई, वह दोऊ तें न्यारा;
चरणदास शुकदेव दया सों, सोई तत्व निहारा.

परज

गुरु हमारे अलख लखाया हो.
देखतही ऐसे गये, जल लोन घुराया हो.
नख शिख ढूंढूं आप को, कहीं आप न पाया हो;
रामही रमा हो रहा, हम मूल गँवाया हो.
बरत करें हम होय तो, सब नेम भुलाया हो;
फल चाहन वाला गया, हरि हेर हिराया हो.
ज्ञाता मिटा ज्ञानी मिटा, और ज्ञेय मिटाया हो;
शोच समझ सबही गई, चरणदास नशाया हो.

रामकली

सतगुरु अच्चर मोंहि पढ़ायो.
लेख न लिखा न स्याही सेंती, न वह कागज मध्य चढ़ायो
न लगे मात न माथे बिन्दी, अरुन पीत नहिं काला;
ऐंड़ा बेंड़ा टेढ़ा नाहीं, ना वह आल जंजाला.
ताको देख थकी सब करनी, सबही साधन भागे;
सिद्धें भईं भोर के तारे, मुक्ति न दीखे आगे.
जाके पढ़े पढ़न सब छूटे, आशा पोथी फाड़ी;

मैं तो भई कर्म की हीनी, कहै सरस्वती ठाढ़ी.
गुरु शुकदेव पढ़ायो अक्षर, अगम देश चटशाला;
चरणदास जब पण्डित हो गये, धार तिलक अरु माला.

## तथा

वह अक्षर कोइ विरला पावे;
जा अक्षर के लाग न विन्दी, सतगुरु से नहिं सैन बतावे.
अक्षरही नाद वेद अरु पण्डित, अक्षर ज्ञानी अज्ञानी;
बावन अक्षर अक्षरही जानो, अक्षरही चारों बानी.
ब्रह्मा शेष महेश्वर अक्षरही, अक्षरही तिरगुण माया;
अक्षरही सहित लिये अवतारा, अक्षर ह्वां तक जहँ काया.
पांचों मुद्रा योग युक्ति अक्षर, अक्षरही लगे समाधा;
आठहु सिद्धि मुक्ति फल अक्षरही, अक्षरही तन मन साधा.
रवि शशि तारा मंडल अक्षरही, अक्षरही धरणि अकाशा;
अक्षरही नीर पवन अरु पावक, नर्क स्वर्ग अक्षर वासा.
अक्षरही उतपति परलय अक्षरही, अक्षरही जानन हारा;
चरणदास शुकदेव बतावें, निःअक्षर है सब सों न्यारा.

## यमन

सखी री हिल मिल रहिया पीव.
पुष्प मध्य ज्यों गन्ध विराजे, पिंड माहिं यो जीव.
जैसे अग्नि काष्ठ को अन्तर, लाली है मेहदीव.
माटी मय भांड़े हैं जैसे, दूध मध्य ज्यों घीव.
शुकदेवा गुरु तिमिर नशायो, ज्ञान दियो कर दीव.
चरणदास कहैं प्रगटै दरशो, अमर अखंडित सीव.

## विहाग

यह सब एक एक ही होई.
जाको ऐसी निश्चय आवे, जीवन मुक्ता सोई.

जैसे मणिका डोर गुहे है, काहू माला पोई.
एकहि श्वास सबै घट ब्यापक, भूलो कहे जु दोई.
हम हूं वही वही जग सारा, शिव ब्रह्मादिक वोई.
एकही ब्रम्ह अचल अविनाशी, और न द्वितिया कोई.
जिन समझा तिन आनंद पाया, बिन समझे दिया रोई.
चरणदास नहिं हरि ही हरि हैं, सब में में में में सोई.

राग काफी

मैं कोई अजब हूं, मेरा अजब तमाशा जोर.
मेरहि पिंड खंड ब्रह्मंडा, मैं पूरण सब ठौर.
मैं ब्रह्मा मैं बिष्णु महादेव, मैं कमला मैं गौर.
मैं रवि चन्द्र इन्द्र इन्द्रायण, मैं गर्जत घन घोर.
मैं गुण तीन पांच तत्व मैं ही, मैं दश दिशि चहुंओर.
मैं निःरूप रूप धर नाना, निशिदिन करत कलोल.
मैं गुप्त मैं मुक्ता परगट, मैं ही भर्म झकोर.
चरणदास मो बिन नहिं रंचक, दूजा कोऊ और.

बिहागरा

गुप्त मते की बातरी जाने सो जाने.
पशू ज्ञान से जग को देखो, अन भुस एक मं साने.
चलनी की गति सब की गति है, मन में अधिक सयाने.
गहे असार सार को डारे, निश्चल बुधि नहिं आने.
हो गूंगा जग को नाहिं सूझे, सैन नहीं अरु माने.
कासों कहूं और सुने को सजनी, कहूं तो को पहिचाने.
सत्य ब्रम्ह को जानत नाहीं, मूरख मुग्ध अयाने.
चरणदास समझत नहिं भोंदू, फिर २ झगड़ा ठाने.

सोरठ

हमारे गुरु मारग बतलाया हो.

आनदेव की सेवा त्यागी, अज अविनाशी ध्याया हो ।
हरि पूरण परसो निश्चय सों, छांड़ो झूठी माया हो ।
यक रस आतम नितही जानो, क्षण भंगी है काया हो ।
चाहे मुक्ति करे तन किरिया, भरम अधिक भरमाया हो ।
बोकर पेड़ बबूल शूल कर, आम कहो किन खाया हो ।
आपन खोज किया नहिं कबहूं, जल पाहन भटकाया हो ।
जैसे फल सेवत सेमर को, कीर अधिक पछिताया हो ।
ज्ञान पदारथ कठिन महा निधि, बिन भेदी किन पाया हो ।
चरणदास घट सोऽहं सोऽहं, ता में उलट समाया हो ।

## मंगल वा सूहा वा बिलावल

कर्म करे निष्कर्म होवे, फेर कर्म नहिं कीजिये ।
भक्त कै कोइ कर्म साधे, उलट कर्म नहिं दीजिये ।
कर्म त्यागे जगै आतम, यह निश्चय कर जानिये ।
जब निर्भय पद सुलभ पावे, सांच हिये में आनिये ।
सो सांच हिय में राख अबधू, नाम निर्गुण नित जपो ।
अग्नि इन्द्री कर्म लकड़ी, पांच अग्नी यों तपो ।
जैसे टूट गहना खोज मेटे, होय सोना अति सुखी ।
ऐसे योग भक्ति बैराग सेती, कर्म काटे गुरु मुखी ।
जासों मिटे आपा आप सहजै, ब्रह्म विद्या ठानिये ।
गुरू शुकदेव यों युक्ति भाषे, चरणदास पहिचानिये ।

## सोरठ

साधो भरमा यह सन्सारा ।
गति मति लोक बड़ाई उरझे, कैसे होय छुटकारा ।
भरम पड़े नाना विधि सेती, तीरथ वरत अचारा ।
देह करम अभिमानी भूले, छूछ पकड़ तत डारा ।
योगी योग युक्ति कर हारे, पंडित वेद पुराणा ।

षटदर्शन पग आप पुजावें, पहिर पहिर रंग वाना ।
जानत नाहिं आप हम को हैं, को है वह भगवाना ।
को यह जगत कौन गति लागै, समझा ना अज्ञाना ।
जा कारण तुम इत उत डोलो, ताको पावत नाहीं ।
चरणदास शुकदेव बतायो, हरि नारायण माहीं ।

## सोरठ

साधो भाई यह जग यों सत नाहीं ।
मीन पहाड़ समुद बिच मिरगा, खेत अकाशहि माहीं ।
जल की पोटरु कोट धुवा को, अखिल ब्रम्ह को तीरं ।
बांझ को पूत सींग खरहा के, मृग तृष्णा को नीरं ।
स्वप्न को भूप द्रव्य स्वप्न की, अरु जंगल को द्वारं ।
गणिका को शील नाच भूतन को, नारि सों व्याहत नारं ।
मावस को शशि रैन को सूरज, दूध नरन की छाती ।
यह सब कहानि कहावनि देखी, चिंटी ले भागी हाथी ।
ऐसहि झूठ जगत सच नाहीं, भेद विचारे पायो ।
चरणदास शुकदेव दया सों, सांचहि सांच मिलायो ।

## हेला

अचरज अलख अपार हेला, वाकी गति नहिं पाइये ।
वस्तु निषेद जोपै करैरे, अरे हेला तो जावेगा हार ।
बानी थकी बुधिहू थकैरे, अरे हेला अनभय थक थक जाय;
ब्रह्मादिक सनकादि हू, नारद थके गुण गाय ।
वेद थके अरु व्यासहूरे, अरे हेला ज्ञानी थके अरु ज्ञान;
शंकर से योगी थके, कर कर निर्मल ध्यान ।
बहुतक कथ कथही गयेरे, अरे हेला नेक न निपटी बूझ;
बंचक ज्ञानी कहत हैं, हमने पाया सूझ ।
पांचों इन्द्रिन सों लखैरे, अरे हेला ताको सांच न मान;

जो जो इन सों देखिये, तिन की निश्चय हान.
गुरु शुकदेव सुनावैरे, अरे हेला समझ चरणही दास;
अपने ही परकाश में, आप रहा परकाश.

हिंडोला

झूलत गुरु मुख सन्त, अलख हिंडोलने.
नाभी त्रिकुटी खम्भ में, रोपे सोऽहं डोरी लाय;
सुरति पटली बैठी सजनी, चण आवे चण जाय.
मन मनसा दोउ लगे झूलने, धारना लिये संग;
ध्यान झोटे देत सजनी, भलो लागो रंग.
सखी सहेली सिमिट आईं, पींग पींगन नेह;
बूंद आनँद सब भिगोईं, सघन बरसे मेह.
चारु वाणी खड़ी गावें, महा रंगीली नार;
मुक्ति चारों मालिनी, जहां गुह गुह लावें हार.
त्रिगुण बगला उड़न लागे, देख बादल लय;
संग पिय के सदा झूले, तातें लगे न भय.
चरणदास को नित झुलावे, इस झूले शुकदेव;
शिव सनकादिक नारद झूलें, कर कर गुरु की सेव.

अथ सर्व अंग राग मंगल

मन रोगी भयो पिंड की कुबुधि विकार सों;
बाढ़ी व्यथा अपार लोभ के भार सों.
कर्म भरो मति हीन चीण छल सों छयो;
पांच पचीसों घर मोह मद ने दह्यो.
कैसे यह दुख जाय कै पूछन को चल्यो;
तब पूरण गुणवन्त वैद्य सतगुरु मिल्यो.
कर गहि कियो विचार कह्यो समझायके;
जो कुछ तेरो रोग सो देहों बताय के.

महा पाप की ताप चढ़ी तोहि धाय के ;
संशय को सन्निपात, मिलो है जाय के .
विषय विषम ज्वर रहो, हिये जु समाय के ;
तृष्णा की बहु प्यास, रही मन माय के .
सत संगति को पथ्य, कभू नाहीं किधो ;
इन्द्रिन के रस रोग, बिगड़ सबही गयो .
कुमति संग संग्रहनी, जिय माहीं भई ;
ममता को मल बढ़ो, भूख तातें गई .
काम क्रोध को कुष्ट सकल तन छाय के ;
सोग शूल को मूल कलेजे आय के .
माया पवन झकोर, सो सूझन बहुत है ;
तिरगुण के तिरदोष, बात बहकी कहैं .
चिन्ताही की चीस, उठे दिन रात हीं ;
अति निन्दा सों नींद, गई ता साथही .
शीश गुमान पिराय, दर्द हिंसा घनो ;
कलह कल्पना भर्म, सो रहतो उन मनो .
औरहि बड़ी उपाधि, बढ़े तेरी देह में ;
भीज रहो है शरीर पसेव सनेह में .
इन रोगी को औषधि देहु सुनाय के ;
भिन्न भिन्न मैं कहूं, तोहि समझाय के .
कर्म करेजवा तोड़के सत्य गिलोय ले ;
यतही की अजवायन, आन मिलोयदे .
चित्त चिरायता न्याय पीत पीपल भली ;
नेम नोन सेंधो की निकसी डली .
हितके बर्तन माहिं तिन्हें भिजोय के ;
परम प्रेम जल तामें डाल समोय दे .

शील शिला पर पीसो ज्ञान उमंग सों ;
पीवतही सब दोष , मिटेंगे अंग सों .
शुद्ध सुदर्शन चूर्ण हैगो स्वादही ;
ताके पाये जाय , जगत की व्याधि ही .
दया क्षमा सन्तोष , यही माजून है ;
होय अधिक आनँद , तत पद को लहे .
गुरु शुकदेव बतावे , औषधि सार है ;
चरणदास जो खाय कष्ट कोई ना रहै .

### राग धनाश्री

मन में दीरघ भयो विकारा ;
सतगुरु साहिब वैद्य मिले बिन , कटे न रोग अपारा.
तिरगुण के तिरदोष पगो है , काम क्रोध ज्वर जारा ;
तृष्णा वायु उठी उर अन्तर , डोलत द्वारहि द्वारा .
विषय वासना कफ पित लागो , इन्द्रिन के सुख सारा ;
सत संगति रस कड़ुवा लागे , करत न अंगीकारा .
सत पुरुषों का कहा न माने , शील क्षमा नहिं धारा;
रसना स्वाद तजो नहिं मूरख आपन पान समारा .
चरणदास शुकदेव मिलें जब , औषधि ज्ञान विचारा ;
तन मन के सब रोग मिटायो , आवागमन निवारा .

### केदार

भाई रे विषम ज्वर जग व्याधि ;
गुरु हमरे दई ज्ञान की औषधि खाव रहनी साधि .
शुद्ध चूरण है सदर्शन , निबल लखि मोहि दीन ;
खाय तनके कष्ट नाशें रोग मन हो छीण .
ज्ञान योग अरु भक्ति त्रिफला धारना को पाल ;
रहै सत संगति भवन में , आस लगे न बयाल .

कनक कामिनी पथ्य बतायो , भूल करन अहार ;
अति अजीरण होत इनते , बढ़त विकट विकार .
चरणदास शुकदेव कहिया , औषधी निज सोय ;
विषम वेदन होत भारी , जाय क्षण में खोय .

बिलावल

अजब फकीरी साहबी भागन सों पैये .
प्रेम लगे जगदीश का , कछु और न चहिये .
राव रंक को सम गिने , कुछ आशा नाहीं ;
आठ पहर सिमिटे रहें , अपने ही माहीं .
वैर प्रीति उन की नहीं , नहिं वाद विवादा;
रूठे से जग में रहें , सुन अनहद नादा .
जो बोलें तो हरि कथा , नहिं मौनहि राखें ;
मिथ्या कडुवा दुर्वचन , कबहूं नहिं भाषें .
जीव दया अरु शीलता , नख शिख सों धारे ;
पांचो चेले वश करे , मन सों नहिं हारे .
दुख सुख दोनों के परे , आनँद दरशावे ;
जहां जाय अस्थल करे , माया पवन न जावे .
हरि जन हरि के लाड़िले , कोई लहै न भेवा ;
शुकदेव कही चरणदास सों , करि तिन की सेवा .

बिलावल

वह वैरागी जानिये जाके राग न दोष .
निर्बन्ध होय जग में फिरे चाहे सिद्धि मोष ;
पांचन को एकै करे, अरु अनहद में रोक .
तिरगुण ते ऊपर बसे जहां हर्ष नहिं शोक;
मन मूड़े तन साधके , ब्याधा सब डार .
तत्व तिलक माथे दिये , शोभा अपरंपार ;

जो तुम भेदी अमर नगर के, तो तू भेद बताय.
चरणदास शुकदेव सहाई : अब का करि है काल;
बांबी उलट सर्प में पैठी, तब सों भयो निहाल.

इति श्री चरणदास कृत शब्दों में कोई २ शब्द लिखे

## अथ रहस शब्दों के मंगलाचरण लिख्यते

### दोहा

अब कुछ कौतुक रहस को, वरणूं चरणहिदास।
लाल लाड़िली कृपातें, पावे निज ब्रज वास॥

अथ सर्गुण उपासना का अंग

### रास राग विहागरा

नृत्य करत छवि सों बनवारी.
टेर लईं सबरी ब्रज वनिता, मुरली मधुर बजाय विहारी.
सुनत श्रवण ध्वनि होय प्रेम वश, विकल भईं सुन्दर सुकुमारी;
ग्रह के काज लाज तज पियकी, उठ धाईं तन सुरति विसारी.
गावन आये छहौं राग मिल : पांच पांच इक इक की नारी;
आठ आठ इक इकके बेटा, मूरतिवन्त स्वरूप महारी.
ताल वीण मुहचंग मंजीरा, तनन तनन तम्बूरा गति न्यारी;
ताधीना धीना ताधीना बजत पखावज, घुघरु झनक २ झनकारी.
इक इक गोपियन सँग, इक इक सुन्दर भेष धरो गिरधारी;
ऐसो रचो रास को मंडल, मध्य राधिका कृष्ण मुरारी.
गावत प्रीति बढ़ाय परस्पर, मान करत पिय तें पिय प्यारी;
लेत मनाय लाड़लो प्यारो, हंस हंस विहरत दे दे तारी.

त त थेई त त थेई थेई थेई, त त थेई उरप तुरप सांगीत उचारी;
नटवर रूप करो मन मोहन , शेष थको वरणत शोभारी.
भये चकित सुर मुनि ऋषि किन्नर, बाढ़ी रैन शरद उजियारी;
चरणदास शुकदेव श्याम की, अद्भुत लीला पै बलिहारी.

## रास राग भैरों

देख सखी रास रचो सांवरे विहारी.
ब्रह्मा शिव इन्द्र शेष नारद से थकित भये;
ऐसो कवि कौन करे वर्णन उपमारी.
सोहे शिर मुकुट और कुंडल छवि,
तिलक भाल किंकिणि पटपीताम्बर नूपुर झनकारी.
बहुत नारि सुघर सखी राधा जो चन्द्रमुखी,
ललितादिक सहचरी सिंगार सों सँवारी.
कोऊ तंबूरा कोऊ मुहचंग कोऊ बजावे गति मृदंग,
कोऊ ताल देत कोऊ स्वर उठान भारी.
बन्शी में करत गान बांकी सी मधुर तान,
श्यामा जब करत मान श्याम लै मनारी.
कबहूं कर जोर दोऊ नाचत हैं नव किशोर,
कबहूं हरि नृत्य करत कबहूं पिय प्यारी.
ताता ताता ताताथेई थेई थेई होय रही,
बाढ़ी निशि शरद देख हरि की नृत्यकारी.
गौवन तृण छोड़ दियो वत्सन पय नाहीं पियो,
मुरली ध्वनि सुनत मोहे मुनि जन ब्रत धारी.
शुकदेव जी गुरू को चरणदास बहु प्रणाम करे,
रास को बिलास दियो परगट दर्शारी.

## रास राग बिहागरा

रास में नृत्य करत बनवारी.

मुदित मनोहर रंग बढ़ावत, संग वृषभानु दुलारी;
मोर मुकुट छवि शीश विराजत, नाक बुलाक सुढारी.
कर मुरली कटि कछनी काछें अलकें घूंघरवारी;
राधा जी के शीश चन्द्रिका, नीलाम्बर जरतारी.
गावें सखी श्याम श्यामा संग, नख शिख रूप उजारी.
ताधीना ताता धीना२, बजत पखावज ताल वीण गति न्यारी;
ठनन ठनन ठन नूपर की ध्वनि, झनन झनन झनकारी.
थेई थेई थेई थेई नचत दोऊ मिल विहंस विहंस मुसकारी;
चरणदास शुकदेव दया सों, पायो दरश मुरारी.

रास राग रामकली वा भैरों

निरतत गोपाल लाल तत तत ताथेई.
नख शिख शृंगार किये, राधागर बांह दिये;
सखियन संग नाचत, स्वर ताल तान देई.
तनन तबूंर गिड़ गिड़, धूधक धू मृदंग ताल;
झमझम झें झांझ, बजत वीण बांसुरी.
झननन झनकार होत, पायल ठनकार;
राग गावत कल्यान, और नट धनासिरी.
कबहूं लै कान्हरा अलाप कभूं सोरठ को परज;
और विहागरो केदारा आशावरी.
कबहुंक विभास मालसिरी ललित रामकली;
भैरोंहू बिलावल ध्वनि ध्रुपद को चावरी.

सुन्दर वहु भेष धरै, रास को विलास करै;
मुनि जन मन हरैं, बाढ़ो आनँद वह ठाईं.
अद्भुत छवि का कहूं, कृपा शुकदेव चहूं;
चरणदास होय रहूं, चरण कमल माहीं.

## रास राग पंचम

सखी दोऊ रसिक प्रीतम प्रिया प्यारी ;
मिल खेलत हैं रास छवि कही न जाई .
एक की एकसों सरस शोभाबनी,निरख सब सुर मुनि रहेलोभाई ;
कोई कर वीण लिये सुघर स्वर ताल दिये गावत सांगीतरी भतरिझाई.
थुगन थुगना धुधक धू धू कृत , बजत मृदंग गति अति सुहाई ;
ताल मृदंग स्वर सप्तसों मुरली , काम मधु ध्वनि चतुर सारंग बजाई.
नाचतदोऊभावसोंअधिकबहुचावसों,तत थेई थेई थेई गति लगाई;
कबहूं पिय प्यारी जू मानकरेलालसों, कबहूं भुज गह पियालेमनाई.
धरत सुंदर डगन बजत नूपुर पगन,हंसत दोऊ रसिक दिये गलेबाहीं.
बढ़ी निशि शरदकी कौन वर्णनकरे , शेषहू सहस मुख रहे थकाई ;
कहैं चरणदास शुकदेव कृपाकरी,ध्यान के माहिं लीला दिखाई ;

### दोहा

वसरी बैरिन बांसुरी , तूही ब्रज के माहिं ।
लगी रहति पिय मुखे जू , पल च्छण छांड़त नाहिं ॥
जब तू बाजत सूये , वन्शी बड़ भागि ।
कसक उठत जियरा जरे , तन मन लागत आगि ॥
हमरो पिय तैं वश कियो , करत अधर रस पान ।
क्या टोना तूने कियो , वर पायो भगवान ॥
ब्रह्मा भूले वेद ध्वनि , शंकर छांड़ेउ ध्यान ।
रनजीत कहें सुन बांसुरी , इन्द्र तजो अभिमान ॥
छैल छबीलो लाड़िलो , रंग रंगीलो लाल ।
चरणदास के मन वसो , वन्शीधर गोपाल ॥

### राग काफी

मोहन प्यारे की वन्शी बाजेरी .
हम को जरावत विरह अग्नि सों जब अधरन पर राजेरी;

लालन मुख लागी रहे निशि दिन नेक न नाहिंन लाजेरी.
तनक बांस की बनी बसुरिया, गर्व भरी अति गाजेरी.
तैं वश कियो शुकदेव हमारो, सुनत करे जो दाम्फेरी;
चरणदास कहैं अब का कीजे, तुही भई शिरताजेरी.

राग काफी

वन्शी वारे सों नेहरा कीन्होरी.
काहू को कछु कहो न मानो, यह तन मन वाही दीन्होरी;
भर्मत भर्मत बहुतैहारी, भटक भटक जग बीनोरी.
आनदेव सों काज न मेरो, सांचो प्रीतम चीन्होरी;
शोभा को सागर गुण को आगर, कुंवर किशोर नवीनोरी.
नवल लाड़लो मोहन शोहन, सोई वर वर लीन्होरी;
प्रभु को छोड़ भजे औरन को, तो कहिये बुधि हीनोरी.
चरणदास को है सुखदाई, श्याम सुन्दर रंग भीनोरी;

राग परज

तुम्हारे रूप लुभानी हो.
जाति वर्ण कुल खोय कै, भई प्रेम दिवानी हो;
खान पान सुध सब गई, और अकबक बानी हो.
तुम्हारे चरण कमल मन मेरो, रहो लिपटानी हो;
सुन्दर सुरति मोहनी, मेरे नयन समानी हो.
तुम बिन चैन नहीं दिनराती, सुन प्रिय जानी हो.
दरश दिखायो श्यामरे, जब हिया सिरानी हो;
नातर वहां गति होइहै, मीन ज्यों पानी हो.
शुकदेवा दुख सब हरो, काहे विसरानी हो;
चरणदास यह सखी तें, हारी मिल जा छानी हो.

बिहागरा

भई हूं प्रेम में चूर हो मोहिं दर्शन दीजे.

हौं तो दास तिहारी मोहन, बेग खबर आ लीजे;
ज्ञान ध्यान अरु सुमिरन तेरो, तो चरणन चितराखौं.
तेरो ही नाम जपौं निशिवासर, तो बिन और न भाषौं;
तन व्याकुल जिय रुंधाही आवत, परी प्रीति गल फांसी.
तुम तो कठिन कठोर महा पिय, तुम को आवत हांसी;
विरह अग्नि नख शिख सों लागी, मन में कल्पना भारी.
गिरोही परत मन संभरत नाहीं, रहत भवन में डारी.
कै विष खाय तजूं यह काया, कै तुम्हरे संग रहसूं;
चरणदास शुकदेव बिछोहा, तेरी सों नहिं सहसूं.

## कान्हरा

तुम बिन अति व्याकुल भइया.
मोहूको दरश दिखावरे मोहन प्यारे;
चितवन नैन हंसन दशन की अटक रही हिय महियां.
वह लटकन मटकन चटकन पट, मोर मुकुट की छवि छइयां;
हाहा खाऊं शीश नवाऊं, और परों तोरे पैयां.
वारी हूं वारी मुख ऊपर, दोउ कर लेहुं बलैयां;
अब तो धीर रहो नहिं रंचक, हो शुकदेव गुसैयां.
चरणदास भई प्रेम बावरी, आन गहो क्यों न बांहियां;

## राग सोरठ

हमारे घर आये हो सुन्दर श्याम.
तनकी तपन मिटी देखतही, नैनन भयो आराम;
अग्नि लिआऊं चौक पुराऊं, फूल बिछाऊं धाम.
अब जागे सखी भाग हमारे, मन पायो विश्राम;
चरणदास शुकदेव पियाको, हित सों करो प्रणाम.

## मल्हार

सो विथा मोरी जानत हो कै नाहीं.

नख शिख पावक विरह लगाई, बिछुरन दुख मन माहीं;
दिन नहिं चैन नींद नहिं निशि को, निश्चल बुधि नहिं मोरी.
कासों कहूं कोउ हितू न हमारो लग्न लहर हरि तेरी;
तन भयो क्षीण हीन भये नयना, अजहूं सुध नहिं पाई.
छतियां दरकति कर्क हियेमें, प्रीति महा दुखदाई;
जल विन मीन पिया बिन बिरहिनि इन धीरज कहो कैसी.
पक्षी जले दव लगी वन में, मेरी गति भई ऐसी.
तलफत हों जिय निकसत नाहीं, तन में अति अकुलाई;
चरणदास शुकदेव बिना यह, दर्शन देव सुखदाई.

सारंग

ऊधो क्या जाने हमरे जीव की.
चात्रिक बुन्द चकोर चन्दको ऐसे हम को पीव की;
नेह कमान बिछुर कर खैंची, मार गये हरि तीरकी.
भाल वियोग हिये बिच खरके, सुध न लई आ पीरकी;
चरणदास सखी निशिदिन तड़पै, ज्यों मछली बिन नीर की.
कहै कछु और करै कछु औरै, आखिर जाति अहीरकी;

हिंडोलनी

हिंडोला झूलत नन्द कुमार.
जोरी युगल किशोर बिराजे, नान्ही परत फुहार;
कंचन खम्भ जडित हीरनसों, नग लागे तेहि माहिं.
पटली अधिक अनूपम सोहै, डोरी सुरंग सुहाहिं;
चहूं ओर बदरा घिर आये, उमड़ घुमड़ घहराहिं;
गरजत मेघ पवन झक झोरत, दामिनि दमक डुराहिं.
गावत गीत मलार सहेली, मिल मिल दे दे तार;
झोटा देत विशाखा ललिता, आनंद बढ़ो अपार.
बोलत मोर पपीहा कोयल, दादुर हंस चकोर;

हरी भूमि रुत रही सुहाई, भौंर करत अति शोर.
भीजत रंग रंगीले प्यारे, शोभा कही न जाय;
चरणदास शुकदेव श्याम की, दोउ कर लेत बलाय.

हेली

तिन को कछु न सुहाय, हेली प्रीति लगी घन श्याम सों.
जो सुख है सन्सार केरी, अरी हेली सो सब दिये बहाय;
भवन तजो अरु धन तजोरी, अरीहेली तजी कुलनकी रीत.
मान बड़ाई सब तजी, रहा एक हरि मीत;
भूख प्यास निद्रा तजीरी, अरी हेली तज दिया बाद विवाद.
राग द्वेष दोउ तजे, तजो पांचन को स्वाद
बहुत डरे सकुची रहेरी अरी हेली कहे न काहू बात
लगी रहे हरि ध्यान में, ऐसे रैन विहात
श्री शुकदेव भले कहीरी, अरी हेली बारंबार सम्हार
चरणदास हौं श्याम की, वेई निवारनहार

तथा

वा छवि करूं बखान हेली, जा छवि सों नैना लगे.
हितू देख तो सों कहूं री, अरी हेली पावे जान.
मोर मुकुट माथे दिपेरी, अरी हेली कुंडल श्रवणन माहिं.
अलकें बल खाईं, योगी देख लुभाहिं.
भौंहन मध्ये बेंदा दियेरी, अरी हेली सुन्दर नयन विशाल.
मोती नाशा सोहनो, उर वैजन्ती माल
नीमो अंग पीलो री भोरी, अरी हेली घूम घुमारो फेर.
लालखड़ाऊं पांव में, मो मन राखत घेर.
पहुंचन में पहुंची कड़ेरी, अरी हेली अंगुरिन मुन्दरी छाप.
अधरन पर मुरली धरे, गावत रीझत आप.
चरणदास तिन की भई री, हेली तन मन डारो वार.

गुरु शुकदेव सहाइश्रा , बुरो कहो पर वार .

दोहा

बुरी सिफारश जामिनी , और सगाई होय ।
चरणदास यो कहत है , भूल करो मत कोय ॥

कवित्त

काहे के भक्त पै समान है बगले की,
ध्यान तो लगायो है मीन पचायबे को .
भीतर और और विषय वास ,
चरणदास बाहर तिलक छापे किये जगत के दिखाइबे को .
हरि के गुण गावन को रसना रसात अधिक ,
मन तो हुलसातवाद निन्दा के बढ़ावन को .
बहुत बात सीख राखी लोक अरु बड़ाई को ;
काया नहिं शोधी एक राम जीके पावन को. १
यह है कल तामें विकराल जहां चर्चा गोपाल ,
ताकी निन्दा करे जान के .
जोई करे भक्त ताको दुष्ट बहु नाम धरें ,
वचन कुवचन कहे क्रोध मन आनके .
देखें अब जायगो तू परम बैकुंठही को ,
बड़ो भयो साध मालाधार तिलक ठान के .
ऐसे दुष्ट नीचन की बात नहीं मानिये जू ,
कहे चरणदास वे तो पापी नरखानिके . २
आप बड़े नीच करतूतकरे नीचन की ,
नीचन को संग जिन्हें भावत उतपात हैं .
राम नाम सुनत हिये लागत आग जान कोऊ ,
करे भजन ताहि देखे जर जात हैं .
खोटे भये आप कहैं औरन को खोटे ,

बे तो महा मोटे पापी माया माहिं इतरात हैं .
साधुन के निन्दक सो तो परेंगे नरक मांझ ,
कहे चरणदास दुख पावे बहु भांति हैं . २

दोहा

चरणदास हित सों कियो , ग्रन्थ अनेक प्रकार ।
अष्टा दश अरु चार को , काढ़ लियो ततसार ॥

चौपाई

संवत सत्रहसौ इक्यासी , चैत्र सुदी तिथि पूरण मासी .
शुक्ल पक्ष दिन सोमहिवारा , रचो ग्रन्थ यो कियो विचारा .
तबही सो अस्थापन धरिया , कछुइक वाणी वा दिन करिया .
ऐसहि पांच हजार बनाई , नाम गुरू के गंग बहाई .
फिर भई वाणी पांच हजारा , हरि के नाम अग्नि में जारा .
तीजे गुरु आज्ञा सों कीनी , सो अपने सन्तन को दीनी .
अद्भुत ग्रन्थ महा सुखदाई , ताकी शोभाकही न जाई .
तामें ज्ञान योग वैरागा , प्रेम भक्ति जामें अनुरागा .
निर्गुण सर्गुण सबही कहिया , फिर गुरु चरण कमल में रहिया .
जो कोइ पढ़ २ अर्थ विचारे , आप तिरे औरन को तारे .
ना मैं किया न करने हारा , गुरू हृदय में आय उचारा .
चरणदास मुख सों शुकदेवा , आन कहे चारों ही भेवा .

इति श्री ग्रन्थ भक्ति सागर चरणदास जी कृत

सम्पूर्णम्

सम्वत १९५२